THE SUBAH OF UL UNDER THE G T MUGHALS
(1556 - 1707 A.D.)
मुगलों के आधीन काबुल का सूबा
(1556 ई० - 1707 ई० तक)

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी० फिल्० उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

निर्देशक :

डॉ० हेरम्ब चतुर्वेदी

शोधकर्त्ता :

आलोक कुमार

मध्यकालीन/आधुनिक इतिहास विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

2002

प्रस्तावना

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की डी0 फिल0 उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "**मुगलों के आधीन काबुल का सूबा**" (1556–1707 ई0) को छः अध्यायों में विभक्त किया गया है। इस शोध प्रबन्ध को तैयार करने में समकालीन स्रोतों तथा इतिहासकारों द्वारा संकलित किये गये विवरणों को आधार बनाया गया है।

शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में 1581 ई0 में काबुल का सूबा गठित होने से पूर्व की स्थिति का अवलोकन किया गया है। बाबर के संघर्ष पूर्ण जीवन फरगना से लेकर हिन्दुस्तान की विजय तथा हिन्दुस्तान में उसके शासन के चार वर्षो, हुमायूँ के शासन काल तथा उसके निर्वसन काल में काबुल में बिताये गये उसके क्षणों तथा अकबर के शासन काल में सूबा गठित होने से पूर्व की स्थितियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही काबुल के प्रदेशों वहाँ के संसाधनों, जलवायु, वहाँ के मैदानों, झरनों, फसलों तथा फल–फूल, पशु–पक्षी इत्यादि का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

शोध प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय काबुल सूबे के पुर्नगठन का वृतान्त विवरण है। सूबा गठित होने के पश्चात अकबर के काल में वहाँ के

शासन व्यवस्था, सूबेदारों की नियुक्ति, सूबे का प्रशासन, सूबे के अन्तर्गत आने वाले जिलों (तूमानों) की शासन व्यवस्था, परगनों तथा गाँव की शासन व्यवस्था तक का क्रमवार विवरण दिया गया है। इस अध्याय में काबुल सूबे के स्वरूप तथा उसकी प्रशासनिक व्यवस्था की छोटी से बड़ी सभी इकाइयों तथा ऊपर से नीचे तक के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की नियुक्ति, उनके उत्तरदायित्व तथा उनकी स्थिति का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

शोध प्रबन्ध का तीसरा अध्याय अकबर के बाद के मुगल शासकों के शासन काल में काबुल सूबें का विवरण प्रस्तुत करता है। जहाँगीर, शाहजहाँ तथा औरंगजेब के शासन काल में नियुक्त होने वाले सूबेदारों, दिवानों तथा अन्य प्रमुख अधिकारियोंकी सूची इस अध्याय में प्रस्तुत की गयी है। साथ ही इन शासकों के शासन काल में काबुल सूबे में होने वाले विद्रोहों तथा उनके उन्मूलन के लिए मुगल शासकों द्वारा किये गये कार्यो का उल्लेख भी किया गया है।

शोध प्रबन्ध का चौथा अध्याय काबुल सूबे के सामाजिक जीवन, वहाँ के रहन–सहन तथा वहाँ के निवासियों की जीवन शैली को प्रतिबिम्बित करता है।

शोध प्रबन्ध के पाँचवे अध्याय में तत्कालीन काबुल सूबे की आर्थिक स्थिति की समीक्षा की गयी है। इस अध्याय में वहाँ के कल-कारखानों टकसालों, उद्योगों, मंडियों तथा व्यापार-विनिमय का विस्तृत उल्लेख किया गया है।

छठा अध्याय उपसंहार है जिसमें शोध प्रबन्ध में संकलित किये गये समस्त अध्यायों का संक्षेप प्रस्तुत किया गया है।

आज जबकि यह शोध प्रबन्ध तैयार है इसे पूर्ण करने में कुछ व्यक्तियों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है जिनके प्रति साधुवाद तथा आभार प्रकट किये बगैर मैं अपना उत्तरदायित्व पूर्ण नहीं कर पाऊँगा।

मैं अपने शोध निदेशक डॉ0 हेरम्ब चतुर्वेदी के प्रति श्रद्धा से सम्मान प्रकट करता हूँ तथा उनके चरणों में शीष नवाता हूँ जिनके कुशल निर्देशन ने आज इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने का अवसर प्रदान किया। उनके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन ने इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने का मार्ग सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

उनकी धर्मपत्नी श्रीमती आभा चतुर्वेदी का योगदान इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में काफी महत्वपूर्ण रहा है। उनके स्नेहाशीष तथा मेरे निदेशक को पारिवारिक क्षणों में से मेरे मार्गदर्शन के लिए समय उपलब्ध कराने में उनका योगदान न भूलने वाला है। मैं उनके प्रति सम्मान प्रकट करता हूँ।

मैं अपने विभाग के विभागाध्यक्ष तथा अन्य गुरूजनों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्गदर्शन किया तथा शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित किया।

मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष तथा पुस्तकालय के समस्त कर्मचारियों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में आवश्यक अध्ययन सामग्री उपलब्ध करायी। मैं इलाहाबाद संग्रहालय, इलाहाबाद पब्लिक लाइब्रेरी, ईश्वरी प्रसाद शोध संस्थान, भारतीय इतिहास अध्ययन संस्थान, हिन्दुस्तानी एकेडमी पुस्तकालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग पुस्तकालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पुस्तकालय, क्षेत्रीय अभिलेखागार,

इलाहाबाद के पुस्तकालयाध्यक्षों तथा समस्त कर्मचारियों को साधुवाद देता हूँ जिन्होंने इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में समय-समय पर आवश्यक सामग्री उपलब्ध करायी ।

मैं श्री भुवनेश्वर सिंह गहलौत (वरिष्ठ पत्रकार) तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गायत्री गहलौत (रीडर, ईश्वर शरण डिग्री कालेज) के प्रति भी विशेष आभार प्रकट करता हूँ। इनका सहयोग इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने के लिए आवश्यक ही नहीं बल्कि अपरिहार्य भी था।

मैं डॉ0 राहुल दुबे (वरिष्ठ पत्रकार) के प्रति साधुवाद के शब्दों की नितान्त कमी पाता हूँ। एक अग्रज की भाँति वो पूरे शोध कार्य में अपनी व्यस्तताओं के बावजूद पथ-प्रदर्शन एवं पुस्तकों का इंतजाम तक करते व मेरा उत्साहवर्धन व मार्गदर्शन करते रहे। मैं डॉ0 दुबे की धर्मपत्नी श्रीमती रचना दूबे के प्रति हृदय से आभार प्रकट करता हूँ। जिन्होंने श्री दूबे को उनके अत्यन्त व्यस्त समय में से मेरे लिए समय उपलब्ध कराने में विशेष सहयोग प्रदान किया तथा मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित किया।

मैं अपने माता-पिता के प्रति सम्मान प्रकट करता हूँ जिन्होंने सदैव मुझे इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने के लिए समय-समय पर प्रोत्साहित ही नहीं किया वरन् पूर्ण सहयोग भी प्रदान किया। उनके स्नेहाशीष के बगैर यह दुरूह कार्य पूर्ण हो पाना एक दिवास्वप्न ही था।

अन्त में इस शोध प्रबन्ध का टंकण कार्य करने वाले **श्री राकेश कुमार शुक्ल जी** का योगदान अद्वितीय है, जिन्होंने व्यक्तिगत रूचि लेते हुए इस शोध प्रबन्ध का टंकण कार्य बड़े ही मनोयोग से पूर्ण किया।

शुभम् फोटो स्टेट, मनमोहन पार्क कटरा, इलाहाबाद के समस्त कर्मचारियों एवं सहयोगियों को भी पूर्ण सहयोग देने के लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

साभार,

आलोक कुमार
21.12.02.

(आलोक कुमार)
"शोध छात्र"
मध्य / आधुनिक इतिहास विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद.

विषय सूची

***

प्रथम – अध्याय

" मुगलों के आधीन काबुल का सूबा "

भौगोलिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

" मुगलों के आधीन काबुल का सूबा "

भौगोलिक तथा ऐतिहासिक – पृष्ठभूमि :

" मुगलों के आधीन काबुल का सूबा " विषयक अध्ययन दिलचस्प होने के साथ ही साथ ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण भी है। मुगल सम्राट अकबर ने इस क्षेत्र की राजनैतिक आवश्यकताओं तथा भौगोलिक संरचना को ध्यान में रखकर ही इसे सूबे के रूप में संगठित करने का कार्य किया। मुगल सम्राट बाबर के उत्थान का केन्द्र बिन्दु रहा काबुल क्षेत्र तमाम जुझारू योद्धाओं एवं कुशल प्रशासकों का जन्म तथा कर्म क्षेत्र रहा। पश्चिमोत्तर का सीमान्त प्रान्त होने तथा मुगलों की पैतृक स्थान होने के कारण काबुल की सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक गतिविधियाँ सदैव हिन्दुस्तान को प्रभावित करती रही। इसलिए सूबे के रूप में स्थापित होने की आवश्यकता एवं उसके महत्व के आंकलन से पूर्व काबुल की राजनैतिक, भौगोलिक एवं आर्थिक स्थिति की समीक्षा अपरिहार्य हो जाती है।

अपनी आत्मकथा "बाबर नामा" में मुगल शासक ने हिन्दुस्तान और खुरासान के बीच दो बंदरगाहों का उल्लेख किया है जिसमें एक काबुल तथा दूसरा कान्धार है।[1] बाबर ने लिखा है कि काबुल एक मजबूत प्रदेश

---

1. बाबरनामा – (1974), पृ0 – 148

है। तथा यहाँ पर शत्रुओं के आक्रमण की संभावना कम रहती है।[2] सैनिक दृष्टि से सुरक्षित होने के कारण बाबर ने काबुल को ही अपने अभियानों के संचालन का केन्द्र बनाया। दूसरे हिन्दुस्तान पर नजर होने के कारण बाबर के लिए काबुल एक महत्वपूर्ण स्थान था, क्योंकि हिन्दुस्तान की तरफ से काबुल के लिए चार रास्ते हैं, एक खैबर पहाड़ से होकर दूसरा बंगश की तरफ से, तीसरा नगज की ओर से तथा चौथा फरमूल की तरफ से जाता है।[3] इसलिए सैन्य अभियानों का संचालन इस क्षेत्र से ज्यादा आसान था।

बाबर ने अपनी आत्म कथा में अपने द्वारा काबुल पर नियंत्रण करने से लेकर हिन्दुस्तान में साम्राज्य स्थापना तथा उसके बाद तक का विस्तृत विवरण लिखा है।

काबुल का राज्य चौदह प्रदेशों में विभाजित था। ये प्रदेश "तुमान" के नाम से जाने जाते थे।[4] समरकन्द, बुखारा और इन प्रदेशों के पड़ोसी स्थान जो एक बड़े जिले अथवा प्रान्त के साथ सम्बद्ध होते थे, तुमान

---

2. बाबरनामा – (1974), पृ0–148, अनु॰ युगजीत नवलपुरी
3. बाबरनामा (1968), पृ0–148
4. वही, पृ0–149 तथा आइने अकबरी, भाग–2, पृ0–413

कहलाते थे।[5] अन्दिजान, काशगर और उसके आस – पास के स्थानों को मिलाकर "उरचीन" होता था। हिन्दुस्तान में इसे परगना कहा जाता है।[6]

मुगलों के लिए काबुल की राजनीतिक महत्ता का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि निर्वसन से पूर्व तथा बाद में भी मुगल शासक हुमायूँ का काबुल में विधिवत् हस्तक्षेप बरकरार रहा और समय समय पर उसने, काबुल पर नियंत्रण रखने के लिए कई अभियानों का संचालन भी किया।[7] इस दौरान अकबर द्वारा भी काबुल राज्य में व्यापक रूचि दर्शाने की बात प्रकाश में आती है। इस दौरान मिर्जा कामरान द्वारा (1545 ई0) अकबर को काबुल बुलाना तथा मिर्जा अस्करी का अकबर को काबुल भेजना इस तथ्य को प्रमाणित करता है कि शुरू से ही काबुल के प्रति मुगल शासकों का दृष्टिकोंण साफ था।[8] सम्भवतः अकबर द्वारा काबुल के प्रति विशेष

---

5. बाबरनामा, पृ0–149
6. वही
7. मुगल कालीन भारत, हुमायूँ भाग–1, सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृ0: 170–199.
8. वही, पृ0: 173–174

रूचि लेने का कारण मुगलों की वह नीति भी थी जिसमें मुगल शासक हिन्दुस्तान की सर जमीं पर शासन करते हुए भी काबुल में अपने पाँव जमाये रखना चाहते थे। साथ ही भौगोलिक एवं आर्थिक दृष्टि से काबुल हिन्दुस्तान के लिए बड़ा बाजार होने के साथ ही साथ प्राकृतिक दृष्टि से भी सम्पन्न क्षेत्र था।[9]

भौगोलिक एवं प्राकृतिक विवरण:

काबुल एक छोटा राज्य था तथा इस राज्य का अधिकतम विस्तार पूर्व से पश्चिम की ओर था।[10] यह राज्य चारों ओर से पहाड़ों से घिरा हुआ था। नगर की दीवारें (बस्ती) पहाड़ी तक थी। नगर के दक्षिण पश्चिम में एक छोटी पहाड़ी थी। इस पहाड़ी के ऊपर काबुल के हिन्दुशाह बंश के शासक ने एक किला बनवाया था। इसीलिए इस किले को

---

9. बाबरनामा, पृ0: 144–146
10. वही, पृ0–145

"शाह काबुल" कहा जाता है।[11] शाह काबुल दुर्रेन के तंग रास्ते से आरम्भ होता है तथा दे हे याकूब के तंग मार्ग पर जाकर समाप्त हो जाता था। उसका घेरा अर्थात् परिधि लगभग आठ मील के लगभग था।[12]

इस पहाड़ पर बागों की अधिकता थी। बाबर लिखता है कि मेरे चाचा उलूग बेग मिर्जा और उनके अतका वैस के जीवन काल में उस पहाड़ पर एक नहर निकाली गयी थी।[13] यह नहर एक ऐसे स्थान पर जाकर समाप्त होती थी जो बिल्कुल बाहर और एकान्त में था। उस स्थान का नाम कुलकीना था।[14] वहाँ पर सभी प्रकार के ऐशो–आराम के साधन थे। काबुल शहर के दक्षिण और शाह काबुल के पूर्व में एक मील परिधि वाला एक विशाल तालाब था। नगर की तरफ पहाड़ पर तीन छोटे झरने थे। उनमें से दो कुलकीना के करीब थे। एक झरने के ऊपर ख्वाजा शमसुद्दीन का मकबरा तथा दूसरे झरने के ऊपर ख्वाजा पैगम्बर की कदमगाह थी।[15] काबुल निवासी मनोरंजन एवं भ्रमण के लिए यहाँ पर आते थे।

---

11. बाबरनामा, पृ0: 145
12. वही
13. वही
14 वही
15 वही

ख्वाजा अब्दुसमद के सामने ख्वाजा रोशनाई नामक स्थान पर एक झरना है।[16] शाह काबुल की पहाड़ी पर भी छोटा सा पहाड़ी टीला था। उसका नाम उकाबैन था। उसका नाम उकाबैन था। इसी पर काबुल का किला 1505 ई0 में बनाया गया था।[17] इसी किले के उत्तर की तरफ मजबूत चहारदीवारी से घिरा हुआ काबुल नगर बसाया गया था।[18]

गर्मी के दिनों में उत्तर की तरफ से चलने वाली हवाये किले को शीतलता प्रदान करती थी।

काबुल के आस-पास चारों तरफ मैदान था। जो अच्छी घास के लिए जाना जाता था। सूंग कुरगान नाम का मैदान काबुल के उत्तर पूर्व में चार मील की दूरी पर स्थित था।[19] उत्तर पश्चिम की तरफ नगर से दो मील की दूरी पर चालाक नामक मैदान था।[20] यह मैदान बहुत बड़ा था, परन्तु

---

16. बाबरनामा, पृ0- 145
17. वही,
18. वही
19. वही , पृ0 - 147
20. वही

यहाँ मच्छरों की अधिकता थी जिससे इस मैदान पर बँधने वाले घोड़ों को बहुत कष्ट होता था। काबुल से दो मील की दूरी पर पश्चिम की तरफ दुर्रीन नामक मैदान था।[21] पूर्व की तरफ सियाह संग नामक मैदान था।[22]

काबुल राज्य चौदह प्रदेशों में विभाजित था।ये प्रदेश तूमान कहे जाते थे।[23] समरकन्द, बुखारा और इनके पड़ोसी स्थान इमान कहलाते थे। अन्दिजान, काशगर और उसके आसपास का क्षेत्र उरचीन कहा जाता था।

काबुल के पूर्व में लमगानात था, उसमें पाँच तूमान और दो बुलूक थे।[24] सबसे बड़ा तूमान नीन गनहार था। इस तूमान का हाकिम काबुल से पूर्व बयासी मील की दूरी पर स्थित अदीनापुर में रहता था।[25] काबुल से नीन गनहार

---

21. बाबरनामा, पृ0–147
22. वही
23. वही, पृ0–149
24. वही, पृ0–150
25. वही

का रास्ता काफी कठिन था। इसी रास्ते में बादाम चश्मा नामक एक दर्रा है जो उस क्षेत्र में गर्म जलवायु और ठंडी जलवायु का विभाजन करता था।[26]

इस दर्रे के काबुल की तरफ वाले क्षेत्र में बर्फ गिरती थी और लमगानात की ओर कुरूक सई में बर्फ नहीं पड़ती थी।[27] इस दर्रे को पार करते ही बदली हुई जलवायु और बदले हुए परिवेश का ज्ञान होता था। वहाँ के वृक्ष, पौधे, पथ एवं मनुष्य सभी कुछ नये जीवन का आभास कराते थे।

नीन गनहार में नौ जल धाराएं प्रवाहित होती थी।[28] यहाँ चावल और अनाज की अच्छी पैदावार होती थी। यहाँ पर संतरा, चकोतरे तथा अनार आदि फल भी काफी मात्रा में होते थे।

नीन गनहार के दक्षिण में सफेद पहाड़ (सफेद कोह) होता था।[29]

---

26. बाबरनामा, पृ0-150
27. वही
28. वही
29. वही, पृ0-151

यह पहाड़ नीन गनहार और बंगश को एक दूसरे से विभाजित करते थे।

अदीनापुर से दक्षिण की तरफ सूर्खरन्द नदी बहती थी। वहाँ का किला ऊँचाई पर बना हुआ था। इसके उत्तर की तरफ पहाड़ी के टुकड़े थे।[30] काबुल से लमगानात जाने के लिए कुरूक साई की तरफ से दीरी दर्रे से होकर गुजरना पड़ता था। दूसरा रास्ता कराटू से होकर कुरूक साई के नीचे बारान नदी को उलूगनूर पर काटता था।[31]

नीनगनहार लमगान तूमान पाँच तूमानों में से एक था।[32] लमगानात के तीन तूमान माने जाते थे। पहला अलीशंग तूमान, दूसरा अलंगार तथा तीसरा मन्दरावर तूमान ।[33]

लमगान के दो बुलुकों में एक नूर घाटी थी।[34] इसका किला घाटी के ऊपर एक चट्टान की ऊपरी सतह पर बना हुआ था। उसके दोनों तरफ जल

---

30. बाबरनामा, पृ0-151
31. वही
32. वही
33. वही,
34. वही, पृ0-152

धाराएं बहती थी तथा किनारे पर वृक्ष पाये जाते थे।

लमगान का एक अन्य तूमान नूर गल को मिलाकर कूनार था।[35] यह तूमान लमगानात से कुछ दूरी पर स्थित था। इसकी सीमाएं कफिरिस्तान तक थी।

चगान सराय नदी उत्तर पूर्व की तरफ से कफिरिस्तान होकर कामा नामक बुलक में पहुँचती थी तथा वहाँ बारान नदी के साथ मिलकर पूर्व की ओर प्रवाहित होती थी।इस नदी के पश्चिम की ओर नूर गल तथा पूर्व की तरफ कूनार था।[36]

एक दूसरा क्षेत्र चगान सराय था।[37] यह एक छोटा स्थान था। यह कफिरिस्तान के ठीक सामने था। यहाँ पर एक बड़ी जलधारा उत्तर पूर्व की तरफ आती थी तथा एक दूसरी छोटी जल धारा, जो पीच के नाम से जानी

---

35. बाबरनामा, पृ0–152
36. वही
37. वही, पृ0–153

जाती थी, कफिरिस्तान की तरफ से होकर आती थी।[38]

निज्र अऊ एक दूसरा प्रदेश था।[39] यह काबुल के उत्तर की तरफ का पहाड़ी क्षेत्र था। इसके पीछे के पहाड़ी स्थानों पर केवल काफिर रहा करते थे।

काफिरिस्तान के रास्ते में पड़ने वाला एक अन्य प्रदेश पंजहीर था।[40] लुटेरे काफिर इस रास्ते का इस्तेमाल करते थे तथा यात्रियों से कर भी वसूल लेते थे।

गूरबन्द नामक एक और प्रदेश था।[41] यहाँ पर कूतल को बन्द कहा जाता था। गूर के लिए इसी कूतल से यात्रा की जाती थी, इसलिए इसको

---

38. बाबरनामा, पृ0–153
39. वही
40. वही, पृ0–154
41. वही,

गूर् बन्द कहते थे। इसकी घाटियों के किनारे हजारा लोग रहते थे।

हिन्दुकुश पहाड़ के नीचे कुछ ग्राम थे। उनमें ऊपर की तरफ मीना–कचा और परवान तथा नीचे की ओर दूरनाम था। इस प्रकार कुल तेरह ग्राम थे।[42] इन ग्रामों में फल पर्याप्त मात्रा में होता था और उससे मदिरा तैयार की जाती थी। ये सभी ग्राम पहाड़ के नीचे बसे थे।

पहाड़ियों के नीचे तथा बारान नदी के मध्य में जमीन के दो भाग पाये जाते थे। एक भाग कुर्रत ताजियान तथा दूसरा दस्ते शेख कहलाता था।[43] जमीन के इन दोनों भागों के बीच एक छोटी पहाड़ी थी, जिसे ख्वाजा-ए-रेगें खाँ कहा जाता था।[44] कुहग्राम काबुल के क्षेत्र में भी थे। काबुल के पहाड़ों के नीचे भी बहुत से ग्राम बसे थे। इन ग्रामों में इस्तालीख तथा अस्तरगच जैसा दूसरा कोई ग्राम नहीं था।

---

42. बाबरनामा, पृ0–154

43. वही, पृ0–155

44. वही

पमगान नामक एक और स्थान अपनी उत्तमत्ता के लिए चर्चित था। पमगान की पहाड़ियाँ हमेशा बर्फ से ढकी रहती थी। इस्तालीफ अपनी कुछ विशिष्टताओं के कारण अन्य ग्रामों से भिन्न था। उसके मध्य से एक जलधारा प्रवाहित होकर ग्राम वासियों को अनेक सुविधाएं प्रदान करती थी।[45]

काबुल में लुहुगर नाम का प्रदेश भी था।[46] इस प्रदेश में चीर्ख नामक एक विशाल ग्राम था। हजरत मौलाना याकूब तथा मुल्ला जादा उस्मान इसी ग्राम के प्रसिद्ध निवासी थे।[47] सजाबन्द ग्राम भी इसी प्रदेश के अन्तर्गत था।[48]

गजनी भी काबुल राज्य के अन्तर्गत आता था।[49] इसका क्षेत्रफल एक जिले से अधिक नहीं था। गजनी किसी समय सुबुक्तिगीन, सुल्तान महमूद और

---

45. बाबरनामा, पृ0–156
46. वही, पृ0–157
47. वही
48. वही
49. वही

उसके उत्तराधिकारियों की राजधानी थी।[50] गजनी का दूसरा नाम जाबुलिस्तान था। यह काबुल के पश्चिम तरफ थी। काबुल से इसकी दूरी लगभग 90 मील थी।[51] गजनी के खुले स्थानों में हजारा और अफगान रहा करते थे।

काबुल के एक प्रदेश का नाम था जुरमुत ।[52] यह काबुल से दक्षिण की तरफ लगभग 75 मील की दूरी पर स्थित था। इस प्रदेश का शासक जहाँ रहता था उसे गिरदीज कहते थे।[53] गिरदीज के किले में तीन चार मंजिलों के मजबूत मकान बने थे। यहाँ के निवासी, उगान शाल कहे जाते थे।[54] ये खेती किया करते थे।

काबुल के अधीन फरमूल नाम का भी एक प्रदेश था।[55] यहाँ के सेब मुल्तान और हिन्दुस्तान भेजे जाते थे। अफगानों के शासन काल में जिन

---

50. बाबरनामा, पृ0–157
51. वही
52. वही, पृ0–159
53. वही
54. वही
55. वही

शेखजादों को प्रमुख स्थान व प्रोत्साहन प्राप्त हुआ था, वे फरमूल के शेख मोहम्मद बंशज थे।[56]

बंगश नाम का भी काबुल में एक प्रदेश था।[57] इस प्रदेश के निवासी अधिकांशतः अफगान हुआ करते थे। ये अफगान लूटमार कर अपना जीवन यापन करते थे। खुमियानी, खिलिची तथा लन्दर आदि कुछ ऐसे क्षेत्र भी थे जो बहुत दूर स्थित थे और शासक यहाँ से मालगुजारी नहीं वसूल कर पाते थे।[58]

काबुल में आलासाई नाम का भी एक स्थान था।[59] यह एक परगने के समान था। यह स्थान निज्र अऊ से लगभग 4–6 मील की दूरी पर स्थित था। निज्र अऊ से यहाँ के लिए जाने वाले मार्ग सर्वप्रथम कूरा नामक स्थान

---

56. बाबरनामा, पृ0: 159–160
57. वही
58. वही, पृ0–160
59. वही

पर मिलता था, फिर वहाँ एक छोटे से दर्रे से होकर यहाँ जाया जाता था। बडअऊ नाम का एक परगना भी था।[60]

काबुल के पश्चिम में जिन्दाल घाटी, सुफ घाटी, गरजवान तथा गर्जिस्तान आदि अनेक घाटियाँ थी।[61] इस घाटियों में अनेक घास के चौरस मैदान हुआ करते थे। इस पहाड़ी प्रदेश में जंगली भेड़े और बकरे बहुतायत में पाये जाते थे।[62]

गूर, कसूद और हजारा के पर्वत लगभग एक ही तरह के होते थे। वहाँ पर वृक्ष बहुत कम होते थे।

ख्वाजा इस्माइल दस्त, दूकी और अफगानिस्तान के पहाड़, जो काबुल के दक्षिण पूर्व की तरफ थे, एक ही तरह के थे।[63] यहाँ पर वृक्ष नहीं होते थे।

---

60. बाबरनामा, पृ0–160
61. वही, पृ0–161
62. वही, पृ0–162
63. वही

<u>राजनीतिक विवरण</u> :

1504 ई0 में बाबर ने काबुल के लिए प्रस्थान किया।[64] तथा नवम्बर में उसने काबुल और गजनी पर अधिकार कर लिया।[65]जब बाबर ने काबुल की ओर रूख किया तो उस समय वहाँ मुगलों के कई गिरोह सक्रिय थे। कुन्दूज छोड़ने से पहले खुशरो शाह के सैनिक जिन्हें खुशरों शाह छोड़कर भाग गया था। कई जत्थों के रूप में मोजूद था इनकी संख्या पाँच–छः थी। इनमें एक जत्था बदख्शां वालों का था। यह रूस्ता हजारा था। यह सैयदीन अली द्वारपाल के साथ पंजहीर दर्रे से होकर बाबर के पास पहुँचा था और उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी।[66] दूसरा जत्था अयूब के युसूफ और अयूब के बहलोल के साथ बाबर के संरक्षण में आ गया था।[67] इसी प्रकार अन्य जत्थे भी बाबर से मिल गये थे। बाकी बेग के परामर्श पर बाबर ने काबुल की ओर प्रस्थान किया और काबुल

---

64. बाबरनामा, पृ0–144 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0–14
65. बाबरनामा, पृ0–144
66. वही, पृ0–141, तथा तारीखे–रशीदी (उदृत मुगलकालीन भारत बाबर)पृ0- 607
67. बाबरनामा, पृ0–141 तथा तारीखे रशीदी, पृ0–438

पर आक्रमण करने का निश्चय किया।[68] बाबर की सैन्य तैयारियों से काबुल के किले में मौजूद लोग भयभीत हो गये थे। इस समय किला मुकीम के अधीन था। मुकीम ने कुछ आदमियों को भेजकर बाबर की अधीनता स्वीकार कर ली।[69] आत्मसमर्पण के लिए राजी हो जाने के बाद बाबर ने मुकीम के साथ नम्रता का व्यवहार किया। इस प्रकार नवम्बर 1504 ई0 को बिना किसी बड़े युद्ध के काबुल और गजनी बाबर के अधीन हो गया था।[70]

इसके पश्चात हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने तथा 1526 ई0 में हिन्दुस्तान में मुगलों की सत्ता स्थापित होने तक काबुल बाबर की कर्मभूमि रही। बाबर ने काबुल को ही अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए केन्द्र के रूप में इस्तेमाल किया।

5 मार्च 1508 ई0 में हुमायूँ का काबुल में जन्म हुआ तथा वह काबुल में ही बड़ा हुआ।[71] ग्यारह वर्ष की उम्र में अपने पिता सम्राट बाबर के

---

68. बाबरनामा, पृ0–143
69. वही
70. वही, पृ0–144
71. तारीखे हुमाँयुनी (उघृत रिजवी हुमायूँ भाग–2, पृ0–3, तथा इकबालनामा ए–जहाँगीरी भाग–1, पृ0–239

आदेशानुसार वह 1519 ई0 में वह किलये जफर तथा बदख्शां के राज्यों का गवर्नर नियुक्त होकर काबुल से प्रस्थान किया था।[72]

1530 ई0 में बाबर की मृत्यु के पश्चात आगरा में हुमायूँ शासक बना। उसने काबुल तथा लाहौर अपने भाई मिर्जा कामरान के अधीन दिया।[73] इसके बाद काबुल कभी मिर्जा कामरान तो कभी अस्करी के द्वारा शासित होता रहा और वहाँ कामरान की हुमायूँ के विरूद्ध विद्रोह की घटनाएं भी संचालित होती रही। इसके पश्चात शेर खाँ द्वारा हिन्दुस्तान की ओर रूख कर देने तथा 1539 ई0 में यहाँ की सत्ता पर काबिज होने के बाद हुमायूँ का जीवन कष्टप्रद हो गया था। दुबारा सत्ता प्राप्ति तक हुमायूँ के लिए काबुल तथा कान्धार का क्षेत्र काफी महत्वपूर्ण हो गया था।

---

72. तारीखे हुमाँयुनी (उघृत रिजवी. हुमायूँ भाग–2, पृ0–3 तथा इकबालनामा ए–जहाँगीरी भाग–1, पृ0–239

73. रिजवी, मुगलकालीन भारत भाग–2, पृ0–4

अगस्त / सितम्बर 1542 ई0 में हुमायूँ खाद्य सामग्री के अभाव एवं जल अप्राप्य होने का कष्ट झेलते हुए अमरकोट पहुँचा।[74] 15 अक्टूबर 1542 ई0 में यही पर उसे अकबर के जन्म का समाचार प्राप्त हुआ।[75] उस समय हुमायूँ के पास फूटी कौड़ी भी नहीं थी। इस समय उसकी सिन्ध पर अधिकार करने की पूरी इच्छा भी नहीं हुई। परन्तु सौभाग्य से उसे कान्धार तक जाने का निष्कंटक मार्ग मिल गया। शाह हुसैन इन भूखें आक्रमणकारियों की उपस्थिति से तंग आ गया था और इनसे छुटकारा पाने के लिए उसने 1543 ई0 में हुमायूँ को अपने राज्य से होकर निकल जाने का रास्ता दे दिया।[76] उसने हुमायूँ को रास्ते का खर्च तथा रसद भी उपलब्ध करायी।[77] इस तरह से हुमायूँ ने हिन्दुस्तान को अलविदा किया तथा कान्धार की ओर प्रस्थान किया।[78] दूसरी

---

74. मुगल कालीन भारत– हुमायूँ, पृ0–283
75. वही तथा मुगलकालीन भारत, ए0एल0 श्रीवास्तव (1986), पृ0–65
76. मुगल कालीन भारत, ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0–65–66 तथा सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, हुमायूँ भाग–2, पृ0–285
77. वही
78. वही

तरफ कामरान जो एक स्वतन्त्र राजा की भाँति काबुल में विद्यमान था तथा कान्धार का राज्य प्रबन्ध अपनी तरफ से अस्करी को दे रखा था, को हुमायूँ का कान्धार की ओर आना अच्छा नहीं लगा तथा उसने सेना भेजकर हुमायूँ का रास्ता ही नहीं रोका, वरन् उसे गिरफ्तार भी करना चाहा।[79] हुमायूँ स्वयं तो बच गया परन्तु इस दौरान उसे अपने एक वर्षीय पुत्र अकबर को वहीं छोड़ना पड़ा।[80]

हुमायूँ को कान्धार का मार्ग छोड़ना पड़ा तथा वह फारस पहुँच गया। फारस में शाह तहमास्य ने उसका स्वागत किया।[81] तहमास्य एक कट्टर शिया धर्मावलम्बी शासक था। वह हुमायूँ को भी शिया मत में दीक्षित करना चाहता था। उसने हुमायूँ को इस मत के लिए अप्रत्यक्ष धमकी भी दी थी। हुमायूँ

---

79. मुगल कालीन भारत, ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0–66

80. मुगल कालीन भारत, हुमायूँ भाग–2, पृ0: 283–285

81. मुगलकालीन भारत, श्रीवास्तव, पृ0–66

इन अपमानों को धैर्य पूर्वक सहन करता रहा। अन्त में 1544 ई0 में फारस के शाह ने हुमायूँ को सैनिक सहायता इस शर्त पर देना स्वीकार किया कि वह स्वयं शिक्षा मतावलम्बी बनकर इस मत को अपने क्षेत्र में फैलाने का प्रयत्न करेगा।[82] इस सेना के साथ हुमायूँ कान्धार पहुँचा तथा वहाँ उसने अस्करी को पराजित किया।[83] कान्धार फारस के शाह को सौंप दिया गया तथा अस्करी को क्षमा प्रदान कर दी गयी। जब फारस के राजा के लड़के की मृत्यु हो गयी तब हुमायूँ ने कान्धार पर अपना अधिकार कर लिया।[84] कान्धार से निश्चित होकर उसने वहाँ का शासन बैरम खाँ को सुपुर्द किया। अब हुमायूँ ने काबुल की ओर रूख किया। बैराम खाँ मिर्जा कामरान के पास दूत बनाकर भेजा गया गया।[85] हुमायूँ ने काबुल की तरफ प्रस्थान किया। शीघ्र ही काबुल भी उसके

---

82. मुगलकालीन भारत, श्रीवास्तव, पृ0-66
83. मुगलकालीन भारत, हुमायूँ भाग-2, पृ0: 68-69 तथा मुन्तखब-उल-तवारीख, पृ0-158
84. मुगलकालीन भारत, श्रीवास्तव, पृ0-66
85 हुमायूँ, भाग-2, पृ0-69

अधिकार में आ गया और नवम्बर 1544 ई0 में हुमायूँ अपने बिछड़े हुए बेटे को गले लगाया।[86] कामरान पहले तो गजनी फिर वहाँ से सिन्ध चला गया।[87]

कान्धार पर नियंत्रण स्थापित हो जाने के पश्चात हुमायूँ को अफगानिस्तान में खड़ा होने की जगह अवश्य मिल गयी थी, किन्तु अभी भी उसकी समस्याओं का अन्त नहीं हुआ था।[88] हुमायूँ ने बदख्शां का राज्य मिर्जा हिन्दाल से लेकर मिर्जा सुलेमान को प्रदान कर उसके नाम से फरमान लिख दिया।[89] उसके बाद वह तुरन्त काबुल के लिए रवाना हुआ। मिर्जा कामरान अपनी सेना के पराजय के बाद काबुल के किले में बन्द था। वह किले में छेद कराकर भागने में सफल

---

86. मुगलकालीन भारत, हुमायूँ भाग-2, पृ0-160 तथा इकबालनामा ए-जहाँगीरी भाग-1, पृ0-325
87. मुगलकालीन भारत, हुमायूँ, भाग-2, पृ0-160
88. ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0-66
89. मुगलकालीन भारत, हुमायूँ, भाग-2,पृ0-160

हो गया था।[90] इसके बाद मिर्जा कामरान बल्ख के हाकिम पीर मुहम्मद खाँ के पास शरण ली।

जब हुमायूँ हिन्दुकुश के पार किसी अभियान के समय बीमार पड़ गया तब इस अवसर का लाभ उठाकर कामरान अचानक काबुल पहुँच गया और 1546ई0 में उसे अपने अधिकार में कर लिया।[91] हुमायूँ के बहुत से सरदार इस डर से कामरान से मिल गये कि कहीं काबुल पहुँचकर वह उनके परिवार के सदस्यों का वध न कर दे। बीमारी से छुटकारा पाने के बाद हुमायूँ ने पुनः काबुल को घेर लिया तथा उसकी आग उगलती तोपों से कामरान भयभीत हो गया। अन्त में 1547 ई0 में काबुल पर पुनः हुमायूँ का अधिकार हो गया।[92] कुछ समय बाद 1548 ई0 में कामरान पुनः लौटा तथा हुमायूँ से युद्ध किया परन्तु वह पुनः

---

90. मुगलकालीन भारत, हुमायूँ, भाग-2, पृ0-161 तथा इकबाल नामा-ए-जहाँगीरी, भाग-1, पृ0-336-37
91. वही तथा ए0एल0 श्रीवातव, पृ0-66
92. वही

पराजित हो गया।[93] हुमायूँ ने कामरान को क्षमा कर उसे 1549 ई0 में ऑक्सस के उत्तरी प्रदेश का गर्वनर बना दिया, परन्तु कामरान ने पुनः विश्वासघात किया और काबुल को अपने कब्जे में कर लिया।

पुनः काबुल पर अधिकार करने के बाद मिर्जा कामरान ने अत्याचार प्रारम्भ कर दिया। उसने लोगों की धन सम्पत्ति को कब्जे में करना तथा रक्तपात प्रारम्भ कर दिया। मेहतर वासिल तथा मेहतर वकील जो हुमायूँ के विशेष दास थे, उनकी आँखों में सलाई फिरवा दी।[94] हुसामुद्दीन अली वल्द अली खलीफा की जागीर वापस दी गयी जबकि उलुग मिर्जा को प्रतिकार करने पर उसके गुप्त अंग कटवा लिये गये।[95] इस प्रकार कामरान अत्याचार के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ाने लगा। इस बीच ईरानियों ने मिर्जा कामरान की हत्या का असफल

---

93. ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0–67

94. रिजवी, मुगलकालीन भारत, हुमायूँ, भाग–1, पृ0–215

95. वही, तथा इकबाल नामा–ए–जहाँगीरी, भाग–1, पृ0– 344

प्रयास भी किया। तमाम झंझावातों के बीच अन्ततः हुमायूँ ने काबुल पहुँचकर वहाँ के षडयंत्रकारियों को दण्डित किया तथा वहाँ के राज्य की सुव्यवस्था सुनिश्चित की।[96]

इसके बाद हुमायूँ के अमीरों ने कामरान का पीछा किया परन्तु वह अफगानों के कबीले महमन्द की ओर चला गया।[97] शीत ऋतु समाप्त होने के बाद बैराम खाँ को वहाँ का शासन प्रबन्ध सम्भालने के लिए कान्धार भेजा गया।[98] कुन्दूज मीर बरका एवं मिर्जा हसन को प्रदान कर दिया गया।[99] लहगुर का तूमान मिर्जा हिन्दाल को दिया गया।[100] इधर हर ओर से असफलता हाथ लगने के बाद मिर्जा कामरान हिन्दुस्तान की ओर पलायन कर गया। कुछ समय पश्चात हुमायूँ काबुल पहुँचा। इस प्रकार बार–बार अपने भाई के विश्वासघात से ऊब चुके हुमायूँ ने अन्ततः काबुल को अपने कब्जे में ले लिया। इन बार–बार के

---

96. रिजवी, पृ0–276

97. वही, पृ0–278

98. वही, पृ0–283, तथा पृ0–340–42

99. वही

100. वही

विद्रोहों को मुगल शासक अकबर ने अपने सामने देखा था और शासक के सामने की कठिनाइयों को बहुत नजदीक से महसूस किया था। नवम्बर 1551 ई0 में हिन्दाल की मृत्यु के बाद गजनी की सूबेदारी अकबर को सौंप दी गयी थी।[101] 1554 ई0 में जब हुमायूँ दोबारा हिन्दुस्तान की ओर चला तो अकबर गजनी का गनर्वर था। हिन्दुस्तान पर पुर्नविजय के कुछ ही समय पश्चात हुमायूँ की मृत्यु हो गयी और अकबर ने शासन सम्भाला। चूंकि वह प्रान्तों को विशेष कर – काबुल की स्थिति से भलीभाँति परिचित था, इसलिए उसने इन प्रान्तों के पुर्नगठन का विचार शुरू से ही बना लिया था। शक्त्यिों का विकेन्द्रीकरण की दृष्टि से भी यह एक उचित कदम था। उसने नयी प्रशासनिक व्यवस्था के तहत सूबों का गठन किया तथा केन्द्र द्वारा इन सूबों में सूबेदारों की नियुक्ति की।[102] काबुल भी इन पुर्नगठित राज्यों में एक था। केन्द्र द्वारा सूबेदार की नियुक्ति की प्रक्रिया के कारण ही कई हिन्दू सूबेदारों ने काबुल की सूबेदारी संभाली।

---

101. ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0–138

102. आइने अकबरी, अनु0– हरिवंश राय शर्मा (1966), पृ0–174

1556 ई0 में अकबर जब सिंहासनारूढ़ हुआ, उस समय अकबर पंजाब के कुछ भाग का ही शासक था। हेमू ने हुमायूँ की मृत्यु के बाद दिल्ली तथा आगरा पर अधिकार कर लिया था।[103] पंजाब में भी अकबर की सत्ता का दावेदार सिकंदर सूर बन गया था।[104] काबुल का क्षेत्र उसके सौतेले भाई मिर्जा हाकिम के आधिपत्य में स्वतन्त्र हो चुका था।[105] शेष प्रांतों में स्थानीय शासकों ने स्वतन्त्रता घोषित कर दी थी। इस प्रकार सत्ता प्राप्ति के समय अकबर संकट कालीन दौर से गुजर रहा था। परन्तु अपने विवेक और बुद्धि के बल पर उसने हिम्मत नहीं छोड़ी और एक-एक कर समस्याओं के समाधान में संलग्न रहा। लगभग 1580 ई0 तक उसे विद्रोहियों को नियंत्रण में करने के लिए लगातार युद्धों में जूझना पड़ा। इस संकट कालीन दौर में अकबर ने संयम नहीं खोया और कूटनीतिक तथा सूझ-बूझ बाकी साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण

---

103. ए0एल0 श्रीवास्तव, मुगलकालीन भारत, पृ0-138

104. वही, तथा एल0पी0शर्मा, मुगल कालीन भारत, पृ0-96

105. अकबरनामा, भाग-3, पृ0-712

करता रहा। इस दौरान उसने कई विद्रोहियों को दण्डित किया तो कई को कूटनीतिक तरीके से अपने पक्ष में करने का काम किया। बैराम खाँ को निर्वासित करने के बाद 1560 ई0 से 1562 ई0 तक हरम़ दल का प्रतिनिधित्व करने वाली माहम अनगा ही शासन का कार्यभार संभालती रही।[106] इसके पश्चात अकबर ने अपनी साम्राज्यवादी नीति प्रारम्भ किया। 1561 ई0 में चुनार पर अधिकार[107], 1562 ई0 में मेरठ पर अधिकार,[108] 1564 में गोंडवान विजय,[109] 1567–68 में चित्तौड़ का घेरा[110], 1569 में रणथम्भौर तथा कालिंजर, 1570 में मारवाड़ तथा 1572 में गुजरात विजय,[111] 1574–76 ई0 में बिहार तथा बंगाल विजय[112] के पश्चात 1581 ई0 में उसने काबुल को अपने अधीन कर लिया।[113]

---

106. ए0एल0श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0–146

107. वही, पृ0–150

108. वही, पृ0–251

109. वही, पृ0–152

110. वही, पृ0–153

111. वही, पृ0–154

112. वही, पृ0–157

113. वही, 160 तथा अकबरनामा, भाग–3, पृ0–282

हिन्दुस्तान के अधिकांश भागों में अधिकार करने के पश्चात अकबर ने अपनी योजना के अनुसार एक ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था को लागू करना शुरू किया, जिसके लागू हो जाने के बाद लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक मुगल शासकों को दूर-दराज क्षेत्रों तक शासन करने में किसी विशेष समस्या का सामना नहीं करना पड़ा।[114] सत्ता का विकेन्द्रीकरण किया गया तथा पूरे शासन क्षेत्र को 12 सूबों में विभक्त कर इन सूबों में एक सी प्रशासनिक व्यवस्था लागू कर दी गयी।[115] 1602 ई0 तक इन सूबों की संख्या-15 हो गयी थी। काबुल इनमें एक प्रमुख सूबा था। जिसके अन्तर्गत सात जिले (सरकारें) शामिल थे। 1585 ई0 में कश्मीर पर अधिकार करने के बाद अकबर ने इसे काबुल सूबे का अंग बना दिया था।[116]

---

114. कुरैशी, द एडमिनिस्ट्रेशन आफ द मुगल एम्पायर, पृ0-229

115. पी0 शरण, प्रोविन्शियल गर्वनमेन्ट, पृ0-70 तथा ए0 एल0, श्रीवास्तव, अकबर द ग्रेट, भाग-2, पृ0-113

116. अकबरनामा, भाग-3, पृ0-511

1560 ई0 से 1581 ई0 तक का समय अकबर जीवन का बहुत ही नाजुक समय था, परन्तु अकबर की साधन सम्पन्नता, चतुराई तथा योग्यता ने उसे इस संघर्षकाल से निकलने में पूरा योगदान दिया और 1580 ई0 के बाद वह पहले से भी अधिक शक्तिशाली हो गया।[117]

शक्तियों के विकेन्द्रीकरण की नीति ने अकबर को सूबों का गठन करने के लिए प्रेरित किया। सूबों में भी कोई एक व्यक्ति अधिक प्रभावशाली न हो इसके लिए उसने समानान्तर दो पद का सृजन कर दो अलग-अलग व्यक्तियों को उन पर नियुक्त किया।[118] सूबे के सूबेदारें तथा अन्य अधिकारियों की स्थानान्तरण नीति भी अक्सर इसी योजना से प्रेरित थी।[119] अकबर नगद वेतन देने की व्यवस्था भी सुनिश्चित की तथा सूबों की गतिविधियों पर नियंत्रण रखने

---

117. आइने अकबरी, पृ0: 404-405

118. आइने अकबरी भाग-2, पृ0: 37-41 तथा अकबरनामा भाग-3, पृ0- 670

119. मुगल शासन प्रणाली, हरिशंकर श्रीवास्तव, पृ0-96

के लिए गुप्तचरों की तैनाती की ।[120]

अकबर की इस नीति के फलस्वरूप आने वाले मुगल उत्तराधिकारियों को लम्बे समय तक किसी ऐसी समस्या का सामना नहीं करना पड़ा, जो उनके सिहांसन को चुनौती दे सकती।

****

---

120. मीराते अकबरी, पृ0–174

****

द्वितीय – अध्याय

" काबुल सूबे का पुनर्गठन "

****

" काबुल सूबे का पुनर्गठन "

अकबर के शासन काल में प्रशासनिक पुनर्गठन की प्रक्रिया एक सुव्यवस्थित स्वरूप में पूर्ण की गयी । इसी क्रम में बाबर तथा हुमायूँ के शासन काल में अव्यवस्थित रही प्रशासनिक इकाई को अकबर ने एकरूपता प्रदान करते हुए उसे व्यवहारिक स्वरूप भी प्रदान किया। वास्तव में अकबर के शासन काल में प्रशासनिक शक्तियों का विकेन्द्रीकरण करने की योजना अमल में लायी गयी, जिसके परिणामस्वरूप सूबों का गठन तथा सूबों में प्राशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति की गयी।[1]

प्रशासनिक, राजनैतिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए ही मुगल सम्राट अकबर ने काबुल सूबे के गठन की प्रक्रिया सन् 1581 में प्रारम्भ किया।[2] 1602 ई0 तक अकबर ने 15 सूबों का गठन कर उसमें

---

1. आइने अकबरी (अनु0एच0एस0 जैरिट) 1947, पृ0: 404–405
2. अकबरनामा, भाग–3, पृ0 – 282

एक सी प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित कर दी थी। इनमें एक महत्वपूर्ण सूबा काबुल था। जिसके अधीन काश्मीर और कान्धार जिले (सरकारों) के रूप में सम्मिलित थे।[3] इन जिलों का सम्बन्ध सूबे से होता था।

अगस्त 1581 ई0 में जब अकबर ने काबुल में प्रवेश किया तो वहाँ विद्रोही शासक मिर्जा हकीम ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।[4] इसके पश्चात अकबर ने मिर्जा की बहन बख्तुनिशा बेगम को वहाँ का गवर्नर नियुक्त कर दिया।[5] मुगल सम्राट के वहाँ से वापस आने के बाद मिर्जा ने पुन: शासन संभाल लिया और उसकी बहन नाम मात्र के लिए ही वहाँ की गवर्नर रही। 1581 ई0 में मिर्जा हकीम की मृत्यु हो गयी। इसके बाद काबुल मुगल साम्राज्य का अंग बन गया और यहीं से उसे प्रान्तीय इकाई के रूप में संगठित

---

3. आइने अकबरी भाग-2, पृ0-367, 413 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव अकबर दि ग्रेट (1972), पृ0-126

4. मुगल कालीन भारत, ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0-161

5. वही

करने का काम अकबर ने शुरू कर दिया।[6]

काबुल प्रान्त की शासन-व्यवस्था :

अकबर द्वारा स्थापित किये गये प्रान्तों की शासन व्यवस्था सर्वथा एक समान थी।[7] काबुल भी इन्हीं सूबों में शामिल था। सूबे की व्यवस्था के लिए अकबर ने अधिकारियों का वर्गीकरण किया तथा योग्यतानुसार उन्हें पद एवं वेतन देने की व्यवस्था सुनिश्चित की।

सूबे का प्रमुख सिपहसालार था, जिसके अधीन एक बड़ी सेना रहती थी।[8] इसे सूबेदार कहा जाता था। यह सूबे में सम्राट का नुमाइंदा होता

---

6. अकबर दि ग्रेट, भाग-1 (प्रथम संस्करण), पृ0: 175-78
7. आइने अकबरी, (अनु0-हरिवंश राय शर्मा) पृ0: 230-242
8. मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, सर यदुनाथ सरकार, (1952), पृ0-53

था तथा इसकी नियुक्ति स्वयं सम्राट द्वारा की जाती थी।[9] इसे राज्यपाल भी कहा जाता था। यह केन्द्र के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करता था तथा सूबे में शासन का प्रतिरूप होता था। अपने सूबे में शान्ति व्यवस्था बनाये रखना तथा सूबे की जनता के हित की रक्षा करना सूबेदार का प्रमुख कर्तव्य था।[10] उसे सभी पक्षों के साथ निष्पक्ष न्याय करने का उत्तरदायित्व भी निभाना पड़ता था। वह फौजदारी के मुकदमों का फैसला भी किया करता था।[11] प्रान्त की पुलिस तथा गुप्तचर विभाग पर उसकी विशेष नजर होती थी तथा सूबेदार इन विभागों में अपने विश्वास पात्रों की ही नियुक्ति करता था।आमतौर पर सूबेदार एक सैन्य अधिकारी होता था। सूबे के अधीन राज्यों से राज्य कर वसूल करने

---

9. ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग-2, (1972), पृ0-128

10. मीराते अहमदी, भाग-1, पृ0: 163-70 तथा आइने अकबरी, भाग-2, पृ0: 37-41.

11. आइने अकबरी, भाग-2, 37-41, तथा मीराते अहमदी, भाग-1, पृ0: 163-70

का उत्तर दायित्व भी सूबेदार का ही होता था।

इस पद पर युवा राज कुमार तथा उच्च उमरावों के अल्पायु पुत्र भी नियुक्त किये जाते थे। ऐसी अवस्था में उनके परामर्श के लिए एक योग्य तथा अनुभवी व्यक्ति को अतालीक (परामर्शदाता) नियुक्त किया जाता था।[12] सम्राट का यह भी आदेश होता था कि सूबेदार अतालीक के परामर्श से ही कार्य करें। सूबेदार के पद की कोई निश्चित अवधि नहीं होती थी परन्तु एक व्यक्ति को एक सूबे में तीन वर्ष से अधिक सूबेदार नहीं रहने दिया जाता था, पर अधिकांशतः स्थानान्तरण बहुत होते थे और उच्च अधिकारियों के कार्य की अवधि अल्पकालीन होती थी। इससे सूबेदार की शक्ति सीमित रहती थी। सूबेदार प्रान्त में सम्राट का प्रतिनिधि होता था। प्रान्त में शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित उसका प्रमुख कर्तव्य होता था। वह प्रान्त के कर्मचारियों की सुरक्षा के साथ-साथ उनके कार्य सम्पादन (जैसे भूमिकर की वूसली) करने में उनकी सहायता भी करता था।[13] शाही फरमानों में दिये गये निर्देशों तथा राजकीय नियमों को

---

12. मुगल शासन प्रणाली, हरिशंकर श्रीवास्तव, पृ0-96

13. वही, पृ0-97

प्रान्त में लागू कराने का उत्तरदायित्व भी सूबेदार का होता था।[14] सूचना प्राप्त करने के लिए वह जासूसों को नियुक्त करता था और उनसे प्राप्त सूचना के आधार पर वह अपने प्रान्त का समाचार महीने में दो बार डाक चौकी द्वारा केन्द्र को भेजता था।[15] सूबेदार का एक प्रमुख कार्य यह भी होता था कि वह प्रजा की सुख सुविधा के लिए सिंचाई के साधन, सराय, बाग-बगीचे, अस्पताल, कुएं, जलाशय तथा इस तरह के कार्यों द्वारा कृषि को प्रोत्साहन देना भी था।[16]

सूबेदार का एक महत्वपूर्ण कार्य न्याय प्रशासन भी था उसे सम्राट द्वारा यह निर्देश दिये गये थे कि वह मुकदमों का यथाशीघ्र निर्णय करे एवं बिलम्ब करके जनता को परेशान न करें। दण्ड देने में उसे नरम और क्षमाशील होने की सलाह भी दी गयी थी।[17]

---

14. मुगल शासन प्रणाली, हरिशंकर श्रीवास्तव, पृ0-98
15. मीरात ए अहमदी, पृ0-143, तथा पी0 शरण, द प्रोविन्शियल गर्वमेन्ट, पृ0: 185-86
16. मीराते अहमदी, पृ0: 142-43
17. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0-99

सूबेदार के बाद सूबे में प्रान्तीय दीवान का पद सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। [18] इसकी नियुक्ति केन्द्रीय दीवान की संस्तुति पर ही की जाती थी।[19] यह प्रान्त के वित्त सम्बन्धी मामलों का प्रमुख होता था।[20] तथा वह प्रान्त के सूबेदार के अधीन न होकर सीधे केन्द्रीय दीवान के अधीन होता था। इस प्रकार शक्ति एवं संतुलन के सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक प्रशासनिक इकाई में दो पदेन व्यक्ति लगभग एक जैसे अधिकारों से सम्पन्न अथवा समकक्ष होते थे। समस्तरीय अधिकारी एक दूसरे पर नियंत्रण रखने के दृष्टिकोंण से उचित ही थे। मालगुजारी एकत्र करने का उत्तरदायित्व भी दीवान का ही होता था। साथ ही उसे प्रान्त के आय-व्यय का लेखा-जोखा भी रखना पड़ता था।[21] प्रान्तीय अधिकारियों का वेतन वितरण प्रान्तीय दीवान के द्वारा ही किया जाता था। उसे दीवानी मुकदमों

---

18. अकबरनामा, भाग-3, पृ0-670 तथा मीराते अहमदी, भाग-3, पृ0 : 173
19. वही
20. वही तथा दि प्राविसिंयल गवर्नमेन्ट आफ दि मुगल, पी0 शरण, पृ0- 189
21. मीराते अकबरी, भाग-3, पृ0- 173

का फैसला भी करना पड़ता था।[22] सरकारी खजाने पर उसकी पूरी निगरानी रहती थी। प्रान्त की स्थिति की समय-समय पर उसे केन्द्रीय दीवान को सूचना प्रेषित करनी होती थी। सिपहसालार फौज, पुलिस तथा प्रशासनिक सेवाओं का अध्यक्ष होता था तो दीवान दीवानी तथा कर विभाग का। दोनों एक दूसरे के कार्यों की निगरानी भी करते थे।[23]

दीवान के विभाग में दो तरह के कर्मचारी थे। 1- केन्द्रीय दीवान, (2) दीवान-ए-सूबा नियुक्त कर्मचारी। इसके अतिरिक्त पेशकार (व्यक्तिगत सचिव) दरोगा (कार्यालय अधीक्षक) केन्द्रीय दीवान द्वारा नियुक्त किये जाते थे। दीवान-ए-सूबा द्वारा नियुक्त कर्मचारियों में कचेहरी का मुंशी, हुजूर नवीस, सूबा नवीस, मुहर्रिर-ए-खालसा, मुहर्रिर-ए-दफ्तर-ए-तान, मुहर्रिर-ए-वजीफा आदि प्रमुख थे।[24] दीवान-ए-सूबा जो प्रान्तीय वित्त विभाग का अध्यक्ष होता था। उसके प्रमुख कार्य खालसा महलों की मालगुजारी वसूल करना और वसूली तथा बकाया का

---

22. मीराते अहमदी, भाग-3, पृ0-173 तथा श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग-2, पृ0-130
23. वही तथा सरकार, मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, चतुर्थ संस्करण, पृ0:53-54
24. पी0शरण, प्रोविंशियल गर्वनमेन्ट, पृ0- 187-189

हिसाब–किताब रखता था। धर्मादा (मदद–ए–माश) के लिए दी गयी जमीनों का पर्यवेक्षण भी करना था, कृषि की उन्नति को प्रोत्साहन देना था, आमिलों के कार्यो और उसके हिसाबों की कड़ी जांच पड़ताल एवं भ्रष्ट अमीलों को बर्खास्त करने की संस्तुति सम्राट से करना था। वह प्रान्त के टकसालों की देखभाल भी करता था।[25] सूबेदार एवं दीवान के अधिकार एवं कार्यो के विवरण से यह स्पष्ट होता है कि प्रान्त में दो समानान्तर और एक दूसरे से स्वतन्त्र संगठन थे। प्रान्त के राजस्व कर्मचारी अमलगुजार से लेकर पटवारी और पटेल तक दीवान के अधीन थे। इसी प्रकार फौजदार से लेकर शिकदार और ग्राम चौकीदार तक सिपह–सालार के अधीन थे। इस तरह प्रान्तीय शासन में द्वैध शासन था। इसका प्रमुख उद्देश्य दोनों प्रान्तीय अधिकारियों को सन्तुलित रखना पड़ता था।[26]

---

25. कुरैशी, द एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि मुगल एम्पायर, पृ0–230

26. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0–102

काबुल में अन्य प्रान्तों की भाँति सदर तथा काजी का पद एक ही था तथा इन दोनों कार्यों का संपादन एक ही अधिकारी द्वारा किया जाता था।[27] वजीफे तथा जागीर व्यक्तियों के नाम केन्द्रीय सदर के पास भेजने का काम प्रान्तीय सदर का होता था। काजी प्रान्त के न्याय विभाग का अध्यक्ष था।[28] वह जिलों तथा कस्बों में नियुक्त काजियों के कार्य का निरीक्षण भी करता था। न्यायिक कार्यों में उसकी सहायता के लिए मीर–अदल, मुफ्ती–काजी, मुहतासिब, दरोगा–ए–अदालत करते थे। काजी–ए–सरकार की नियुक्ति काजी–ए–सूबा की संस्तुति पर की जाती थी।[29]

काबुल के प्रशासन तन्त्र में एक महत्वपूर्ण पद प्रान्तीय बख्शी का था। इसकी नियुक्ति मीर बख्शी की सिफारिश पर की जाती थी।[30] प्रान्तीय बख्शी सिपहसालार अथवा सूबेदार के अधीन कार्य करता था। सेना की भर्ती,

---

27. आइने–अकबरी, भाग–1, द्वितीय संस्करण, पृ0–279 तथा मीरात, भाग–3, पृ0: 173–74

28. वही

29. आइने अकबरी, भाग–2, पृ0: 42–43 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0: 124

30. आइने अकबरी, भाग–2, पृ0 – 42–43 तथा तुजुके जहाँगीरी, भाग–1

करना, उसका संगठन सुव्यवस्थित करना, उस पर नियंत्रण रखना तथा उसके कार्यो को संपादित करना उसका प्रमुख दायित्व था।[31] मंसबदारों की मृत्यु होने पर प्रान्तीय बख्शी का यह कर्तव्य था कि वह उनकी जागीर को अपने अधिकार में ले ले। राज्य में विद्रोह होने पर वहाँ शान्ति व्यवस्था स्थापित करने में वह सूबेदार की सहायता भी करता था।[32]

सूबे में प्रमुख स्थानों पर यहाँ तक कि सूबेदार, दीवान, काजी, फौजदार आदि अफसरों के कार्यालयों तक में संवाद लेखकों तथा गुप्तचरों की नियुक्ति करने का काम प्रान्त का वाक्या नवीस करता था।[33] कभी-कभी वाक्या-नवीश का कार्य बख्शी को संचालित करना पड़ता था। वाक्या-नवीस द्वारा नियुक्त किये गये संवाद लेखक तथा गुप्तचर प्रतिदिन उसे सूबे की रिपोर्ट

---

31. आइने अकबरी, भाग- 2, पृ0 - 42-43 तथा तुजुके जहाँगीरी, भाग-1, पृ0-247

32. कुरैशी, दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ मुगल एम्पायर, पृ0-230 तथा पी0 शरण, पृ0: 197-98

33. वही, तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग-2, पृ0 : 132-33

प्रेषित करते थे। वह उसे सूक्ष्म रूप में तैयार करके शाही दरबार में पेश करता था।[34] सूबे के सम्पूर्ण शासन प्रबन्ध की सफलता गुप्तचर विभाग के ऊपर काफी कुछ निर्भर करती थी, इसलिए यह विभाग सूबे में काफी महत्वपूर्ण होता था तथा इस पर शासक का विशेष ध्यान होता था। यदा–कदा शाही दरबार अपने संवाद लेखकों तथा गुप्तचरों को सूबों में नियुक्त करता था, जो उन्हीं के आदेशों का अनुपालन करता था।[35]

कोतवाल सूबे की आन्तरिक सुरक्षा, शान्ति व्यवस्था, स्वास्थ्य तथा सफाई व्यवस्था की देखरेख करता था।[36] इन कार्यों के सम्पादन के लिए शासन की तरफ से उसे पर्याप्त अधिकार दिये गये थे। उसका अपना कार्यालय था तथा उसके अधीन बहुत से कर्मचारी काम करते थे।[37] प्रान्त के सभी

---

34. मीरात–ए–अहमदी, पृ0–174 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0–195

35. वही

36. आइने अकबरी, भाग–2 (द्वितीय संस्करण), पृ0: 43–45 तथा मीराते अहमदी, भाग–1, पृ0: 168–69

37. वही तथा श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग–2, पृ0–135

सभी थानों की देखरेख तथा उसकी व्यवस्था सुनिश्चित करना उसका प्रमुख कर्तव्य होता था।[38]

कोतवाल नगर में आने जाने वालों की सूची रखता था एवं यात्रियों के ठहरने के लिए सराय की व्यवस्था भी करता था। समय-समय पर जारी की गयी राजाज्ञाओं का पालन कराना भी उसका कर्तव्य था। बाजार का मूल्य नियंत्रण, बाँटों तथा नाप (गज) का परीक्षण, पुरूषों एवं स्त्रियों के लिए अलग-अलग घाटों, और कुओं की व्यवस्था, सार्वजनिक जलमार्गों के प्रबन्ध के लिए सम्मानित व्यक्तियों की नियुक्ति करना भी उसका प्रमुख कर्तव्य होता था।[39]

प्रान्तीय सद्र :

इसका प्रमुख कार्य धार्मिक, शैक्षणिक अनुदान तथा भूमि (मदद-ए-माश) अनुदानों का वितरण करना था। प्रान्तीय सद्र अपने प्रान्त के योग्य व्यक्तियों को वजीफा दिये जाने की संस्तुति प्रमुख सद्र से करता था। वह अपने प्रान्त के विद्वानों

---

38. आइने अकबरी, भाग-2 (द्वितीय संस्करण), पृ0: 43-45 तथा श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग-2, पृ0-135
39. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0: 106-108

एवं धार्मिक व्यक्तियों की सूची भी रखता था एवं उनसे सम्पर्क भी करता था। कभी–कभी प्रान्तीय सद्र तथा काजी –ए– सूबा एक ही व्यक्ति को नियुक्त कर दिया जाता था। इससे सद्र को न्यायिक अधिकार प्राप्त हो जाते थे।[40]

मीर अदल :

इस अधिकारी की नियुक्ति पहली बार अकबर के काल में हुई थी। कालान्तर में यह मुगल न्याय पालिका का अंग बना रहा। इसका कार्य यह था कि जो कुछ भी अदालत में पहुँचे वह उसकी पूरी तरह से जाँच पड़ताल कर लें तथा तथ्यों की छानबीन करके वह उसे काजी के सम्मुख रख देता था जिसके आधार पर काजी निर्णय करता था। मीर अदल, सद्र तथा काजी अलग–अलग अधिकारी होते थे किन्तु एक अधिकारी को कभी–कभी दूसरे का कार्य भी दे दिया जाता था।[41]

---

40. अकबरनामा, भाग–2, पृ0–413

41. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0–103

सूबे में उपलब्ध पुलों तथा नावों से चुंगी वसूल करने का दायित्व प्रान्त के मीर बहर का होता था। यह बंदरगाहों पर कर वसूली की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए भी उत्तरदायी होता था। वह नदियों पर स्थायी पुलों का निर्माण कराता था। उसे अक्सर मीर बरेका का काम करना पड़ता था और तब वह सार्वजनिक निर्माणों का नियोजक होता था।[42]

सूबे का प्रशासन कई छोटी-छोटी इकाइयों में बंटा था। प्रान्तीय व्यवस्था के अन्तर्गत जिले थे जिसका प्रमुख फौजदार होता था।[43] जिलों के अधीन परगने होते थे और यही परगना ही शासन की निम्नतम प्रशासनिक तथा वित्तीय इकाई होती थी।[44] नगरीय व्यवस्था के लिए म्यूनिशिपिल प्रशासन होता

---

42. अकबर दि ग्रेट, भाग-1, (प्रथम संस्करण) पृ0-59, 116, 117, 123 ।

43. आइने अकबरी, भाग-2 (द्वितीय संस्करण), पृ0: 41-42

44. अकबरनामा, भाग-3, पृ0: 457-59 तथा आइने अकबरी, भाग-2, (द्वितीय संस्करण), पृ0-72

था। ग्राम प्रशासन सूबे की सबसे छोटी इकाई होती थी।[45] चूंकि अकबर के शासन काल में प्रान्तों के गठन के पश्चात सभी प्रान्तों में एक सी शासन व्यवस्था लागू की गयी थी तथा काबुल सूबा उस समय उन सूबों में शामिल था जो हिन्दुस्तान के अन्य सूबों के साथ पुनर्गठित किया गया था, इसलिए यहाँ की व्यवस्था भी हिन्दुस्तान के अन्य सूबों की भाँति ही व्यवस्थित की गयी थी।[46]

ग्राम प्रशासन शासन तन्त्र की सबसे छोटी इकाई थी। अकबर के शासन काल में ग्राम प्रशासन एक बड़ी वैधानिक उपलब्धि थी। जो ग्राम वासियों में मातृ भाव पैदा करने के साथ ही ग्राम की प्रशासनिक व्यवस्था सुगम बनाने के लिए भी कारगर साबित हुई।[47] इस काल में काबुल के ग्रामों में ग्राम पंचायतों को वैधानिक रूप से न्याय करने की पूरी स्वतन्त्रता थी।[48]

---

45. श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग–2, पृ0: 152–53

46. सरकार, मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, पृ0–53

47. स्ट्रगल फार एम्पायर, पृ0: 278–84 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव अकबर दि ग्रेट, भाग–2, पृ0–153

48. वही

इस व्यवस्था के तहत ग्राम के पटवारी तथा चौकीदार परगने की सरकार के निकट सम्पर्क में होते थे।

काबुल के प्रत्येक गांव में ग्राम प्रशासन की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए ग्राम पंचायते होती थी।[49] इन पंचायतों के सदस्य गांव में रहने वाले परिवारों के मुखिया होते थे।[50] यह पंचायतें ही गाँव की प्रशासनिक व्यवस्था का उत्तरदायित्व संभालती थी।

सूबे का नगरीय प्रशासन भी काफी व्यवस्थित था। विशेष महत्व वाले नगर में एक कोतवाल नियुक्त होता था।[51] यह सुरक्षा व्यवस्था के साथ नगर की प्रशासनिक व्यवस्था भी देखता था। छोटे नगरों में यह काम जिले के अमल गुजार किया करते थे।[52] कोतवाल की नियुक्ति केन्द्रीय सरकार द्वारा

---

49. स्ट्रगल फार एम्पायर, पृ0: 278–84 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग–2, पृ0–153

50. वही

51. आइने अकबरी, भाग–2, पृ0–47

52. वही

की जाती थी। उसे प्रत्येक घर का रजिस्टर रखना पड़ता था।[53] नगर के निकम्में लोगों को काम में लगाना भी कोतवाल का कर्तव्य था। कोतवाल के भारी भरकम दायित्वों को देखते हुए उसे कार्यों के सम्पादन के लिए पुलिस अफसर, गुप्तचर, क्लर्क तथा चपरासी आदि सहायक कर्मचारियों की नियुक्ति करने का अधिकार प्राप्त था।

काबुल सूबा 7 जिलों (तुमानों) में और जिले परगनों में विभक्त थे। ये तुमान थे – काश्मीर, पक्ली, सिम्बर, स्वात, बाजौर, कांधार तथा जुबलिस्तान ।[54] प्रत्येक परगने में चार प्रमुख अधिकारी तैनात किये जाते थे। परगने का प्रमुख अधिकारी शिकदार होता था।[55] इसके अतिरिक्त आमिल,

---

53. आइने अकबरी, भाग–2, पृ0–41

54. आइने अकबरी, भाग–2 (अनु0एच0एस0 जैरिट, 1947) पृ0–413 तथा बाबरनामा, पृ0–149, तथा इरफान हबीब – एन एटलस आफ दि मुगल एम्पायर, पृ0–2, सीट–1ए–बी

55. मीराते अहमदी, भाग–3, पृ0: 170–72

फोतदार तथा कारकुन होते थे।[56] शिकदार परगने का प्रमुख प्रबन्ध अधिकारी था तथा सामान्य प्रशासन उसी के अधीन था।[57] परगने में शान्ति तथा सुव्यवस्था के उत्तरदायित्व के साथ ही साथ उसकी यह भी जिम्मेदारी थी कि वह काश्तकारों द्वारा लायी गयी मालगुजारी को संभाल कर रखता था तथा खजाने के कर्मचारियों के काम की निगरानी भी करता था। वह फौजदारी के मामले भी देखता था।

परगनों में कर निर्धारण तथा माल गुजारी एकत्र करने का प्रमुख दायित्व "आमिल" का था।[58] उसे काश्तकारों से भी सीधा सम्बन्ध रखना पड़ता था। परगने की शान्ति व्यवस्था बनाये रखने में वह शिकदार की मदद भी करता था।[59]

---

56. आइने अकबरी, भाग–2 (द्वितीय संस्करण), पृ0–141, 165 171.

57. वही, पृ0: 41–42

58. वही, पृ0– 72

59. वही -

परगने का खजांची फोतदार होता था।[60] इसका मुख्य काम सरकारी आय को संभालना तथा उसे सुरक्षित रूप से केन्द्रीय खजाने तक पहुंचाना होता था।[61]

कारकुन क्लर्क होता था। इसका काम इन बातों का लेखा रखना होता था कि उत्पादन योग्य भूमि कौन सी है। क्या-क्या फसल हुई है तथा किस काश्तकार को कितनी माल गुजारी देनी है।[62]

परगने भर के पटवारियों का अफसर कानूनगो होता था। वह परगने की पैदावार तथा वसूल की जाने वाली मालगुजारी आदि का विवरण रखता था। उसे बन्दोबस्त के प्रकारों, जमीन के वर्गों तथा लगान सम्बन्धी बातों की जानकारी रखनी पड़ती थी। पहले वह एक प्रतिशत कमीशन पर काम करता था,

---

60. इलियट और डाऊसन, भाग-4, पृ0-413

61. वही

62. अकरबनामा, भाग-3, पृ0: 457-459 तथा आइने अकबरी, भाग-2, (द्वितीय संस्करण), पृ0-72

परन्तु अकबर ने उसका वेतन निर्धारित कर दिया था।

परगने के ऊपर जिले होते थे, उन्हें पूर्वकाल से ही तुमान भी कहा जाता था।[63] जो सूबों के अधीन कार्य करते थे तथा प्रान्तीय व्यवस्था की दूसरी इकाई थे। काबुल सूबा 7 जिलों (सरकारों) में बँटा हुआ था। प्रत्येक जिले में एक फौजदार, अमल गुजार, काकी, कोतवाल, बितिक्ची तथा एक खजानदार होता था। जिले का प्रमुख फौजदार होता था।[64] यह एक सैनिक अधिकारी होता था। अपने जिले में शान्ति एवं कानून व्यवस्था बनाये रखना उसका प्रमुख उत्तरदायित्व था। वह नागरिकों की सुरक्षा के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार होता था।[65] सैन्य अधिकारी होने के कारण उसके अधीन एक छोटी सी सैन्य टुकड़ी भी काम करती

---

63. इरफान हबीब, पृ0–2, सीट–1ए–बी तथा बाबरनामा, पृ0–149 तथा आइने अकबरी, भाग–2 , पृ0–413

64. इलियट और डाऊसन, भाग–4, पृ0–414 तथा मीराते अहमदी–भाग–3, पृ0: 170–72 तथा आइने अकबरी, भाग–2 (द्वितीय संस्करण), पृ0: 141, 165, 171

65. आइने अकबरी, भाग–2 (द्वितीय संस्करण), पृ0: 141–165

थी। सेवा कार्य के लिए इस सैन्य टुकड़ी का वह इस्तेमाल करता था। उसे कर वसूली में अमल गुजार की मदद भी करनी पड़ती थी।[66] वह जिले के अन्य अधिकारियों पर भी दृष्टि रखता था। कहा जा सकता है कि जिले के शासन प्रबन्ध की सफलता बहुत कुछ फौजदार के व्यक्तिगत चरित्र तथा अनुशासन पर निर्भर करती थी।[67]

इसकी नियुक्ति शाही फरमान द्वारा होती थी वह सरकार में सम्राट तथा सूबेदार का प्रतिनिधि था और वह सूबेदार के निर्देशन में कार्य करता था किन्तु उसके पत्र सीधे सम्राट के सम्मुख उपस्थित किये जाते थे। फौजदार सरकार में प्रशासन, पुलिस तथा सैनिक शक्ति का प्रतिनिधि होता था तथा अपने क्षेत्र में शान्ति व्यवस्था को बनाये रखना उसका उत्तरदायित्व होता था। जिले की सेना का नियंत्रण भी फौजदार के अधीन होता था। मालगुजारी वसूल करने के लिए सम्बन्धित अधिकारियों की सहायता करना भी उसका कार्य होता था।[68]

---

66. आइने अकबरी, भाग–2 (द्वितीय संस्करण, पृ0: 141–165 तथा मीराते अहमदी, भाग–3, पृ0: 170–72

67. वही

68. आइने अकबरी भाग–2, पृ0: 41–42 तथा यदुनाथ सरकार मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, पृ0: 64–65

जिले में मालगुजारी वसूल करने वाला प्रमुख अधिकारी "अमल गुजार" होता था।[69] इसकी सहायता के लिए बहुत से कर्मचारी नियुक्त होते थे। कृषकों की रक्षा के लिए वह चोर-लुटेरों को सजा देने का काम भी करता था। कृषकों को कर्ज बाँटने तथा उसकी वसूली करने का काम भी अमल गुजार का होता था।[70] जिले के खजांची के कार्यों का वह निरीक्षण भी करता था। उसे शाही दरबार में जिले के आय-व्यय का मासिक व्यौरा तैयार कर प्रस्तुत करना पड़ता था। वह जिले की आय नियमित रूप से शाही खजाने में जमा करवाना भी उसी का उत्तरदायित्व था।

बितिक्ची जिले के अमल गुजार के विशिष्ट सहायकों में से एक होता था।[71] माल गुजारी सम्बन्धी मामलों में जिले में अमल गुजार के बाद बितिक्ची

---

69. मीरात, भाग-1, पृ0- 178

70. वही

71. आइने अकबरी, भाग-2 (द्वितीय संस्करण), पृ0:50-52

का ही स्थान होता था। सरकारी तौर पर यह एक लेखक था तथा जमीन की किस्म तथा उस पर होने वाली पैदावार सम्बन्धी आँकड़े बितिक्ची को ही तैयार करने पड़ते थे।[72] इन्हीं आँकड़ों के आधार पर अमलगुजार काश्तकारों से मालगुजारी की वसूली किया करता था। बितिक्ची कानूनगों से प्रत्येक गाँव की औसत माल गुजारी का नक्शा लेकर पिछले दस वर्षों की पैदावार के आधार पर माल गुजारी निर्धारित करता था।[73] वह सरकारी आंकड़ों में उपजाऊ तथा बंजर जमीनों को दर्ज करता था तथा गाँव की सीमाओं का निर्धारण करता था। किसानों के साथ इकरारनामें की लिखा पढ़ी भी वही किया करता था। काश्तकार द्वारा मालगुजारी खजाने में जमा करने की रशीद भी बितिक्ची ही दिया करता था।[74]

अमल गुजार के साथ काम करने वाला दूसरा अधिकारी "खजानदार" (खजांची) होता था।[75] उसका प्रमुख काम सरकारी आय को संभालना, सुरक्षित

---

72. आइने अकबरी, भाग–2 (द्वितीय संस्करण), पृ0: 50–52
73. वही तथा अकबरनामा, भाग–3, पृ0: 457–59
74. आइने अकबरी, भाग–2, पृ0: 50–52
75. वही, पृ0: 52–53

रखना तथा उसे शाही खजाने तक भेजना होता था।[76] खजाने की एक चाभी उसके पास होती थी जबकि दूसरी चाभी अमल गुजार के नियंत्रण में रहती थी।

सूबे में कुछ स्थानों पर अन्य प्रकार के प्रशासनिक दल तैनात थे। इनके अन्तर्गत बन्दरगाह, सीमांत चौकियां, किले तथा थाने सम्मिलित होते थे। सूबे की सीमा की सुरक्षा के लिए कई संवेदनशील स्थानों पर सीमा रक्षकों का दल तैनात रहता था।[77] किलों पर विशेष सुरक्षा दस्तों की तैनाती की जाती थी।

प्रान्तीय शासन पर केन्द्रीय नियंत्रण :

अकबर के शासन काल में जब विधिवत् सूबों का गठन कर उसमें नई व्यवस्था लागू की गयी तो इस बात का विशेष ध्यान रखा गया था कि प्रान्त के मुख्य–मुख्य अधिकारी एक दूसरे पर निगाह रखें तथा परस्पर एक दूसरे के

---

76. आइने अकबरी, भाग–2, पृ0: 52–53

77. श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0: 198

लिए अंकुश बने रहे।[78] अकबर की यह नीति थी कि कोई सूबेदार अपने सूबों के अन्य शक्तिशाली तथा प्रभावशाली अधिकारियों से निजी व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित न कर सके तथा इस प्रकार वह केन्द्रीय .सरकार के लिए कभी भी समस्या न बने।[79] यही कारण था कि वह समय-समय पर सूबेदारों तथा अन्य अधिकारियों का स्थानान्तरण भी करता रहता था। प्रान्तीय शासन की व्यवस्था कुछ इस प्रकार से की गयी थी कि प्रान्त के मुख्य-मुख्य अधिकारी एक दूसरे पर नजर रखे तथा परस्पर एक दूसरे के लिए अवरोध तथा अंकुश बने रहे।[80] प्रान्तीय शासन के प्रमुख अधिकारी सूबेदार के अधीन कार्य करते थे किन्तु कई महत्वपूर्ण बातों में वे केन्द्र के प्रतिरूप अधिकारी के प्रति भी उत्तरदायी रहते थे।[81] अकबर ने संतुलन की ऐसी नीति स्थापित कर दी थी

---

78. श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग-2, पृ0-137

79. वही, भाग-1 (प्रथम संस्करण), पृ0-122

80. ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग-2, पृ0-136

81. कुरेशी, दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि मुगल एम्पायर, पृ0-231

कि कोई भी प्रान्त का अधिकारी शक्तिशाली नहीं बन सकता था।[82] सूबेदार तथा दीवान एक दूसरे के अधिकारों के प्रतिद्वन्दी रहते थे। इससे सूबेदार और दीवान का एक दूसरे पर अंकुश भी रहता था। एक दूसरे पर अंकुश लगाने तथा आपसी संतुलन बनाये रखने की अकबर की यह नीति सूबे के अधिकारियों के कुशासन, अत्याचारों तथा अपनी शक्तियों के दुरूपयोग को रोकने में काफी सफल सिद्ध हुई तथा इससे केन्द्रीय सरकार भी प्रान्तीय सरकार पर अच्छा नियंत्रण रख सकी।[83] अकबर ने प्रान्तीय बख्शी को गुप्तचर विभाग का उत्तरदायित्व सौंपा था, जिससे अन्य अधिकारी उससे सतर्क रहते थे तथा भय खाते थे।[84] अकबर की यह भी नीति थी कि सूबेदार अपने सूबे के अन्य शक्तिशाली और प्रभावशाली अधिकारियों से निजी व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित न कर सकें और इस प्रकार केन्द्रीय सरकार के लिए भी समस्या न बने।[85] यही कारण था

---

82. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0–110

83. ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग–2, पृ0–136

84. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0–110

85. अकबर दि ग्रेट, भाग–1, पृ0–122

कि प्रान्तीय अधिकारियों का समय-समय पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर तबादला होता रहता था।[86] किसी भी सूबेदार को एक प्रान्त में तीन चार वर्षों से अधिक नहीं रहने दिया जाता था।

अकबर अपने जासूसों तथा वाकिया नवीसों के द्वारा प्रान्तीय शासन की जानकारी स्वयं रखता था।[87] केन्द्र के स्वतन्त्र गुप्तचरों द्वारा भी कर्मचारियों की गतिविधियों तथा सूबे की स्थिति की सूचना प्राप्त होती रहती थी।[88] अयोग्य, लापरवाह, अत्याचारी तथा अन्यायी अधिकारियों को तत्काल दण्डित किया जाता था। सम्बन्धित अधिकारी की गलती के अनुसार ही उसकी पदावनति अथवा उसे पद्च्युत कर दिया जाता था।[89] ऐसे अधिकारी जिनके विरूद्ध शिकायत होती थी। उनकी जाँच पड़ताल के लिए विशेष उच्च अधिकारियों की नियुक्ति की

---

86. अकबर दि ग्रेट, भाग-2, पृ0-137 तथा हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0-110

87. अकबरनामा, भाग-3, पृ0-247

88. वही पृ0- 234

89. वही, पृ0-377, 408-409

जाती थी।[90] 1593 ई0 में अकबर ने आसफ खाँ बख्शी को कश्मीर की रैयत तथा सेना के सम्बन्ध में जाँच के लिए नियुक्त किया था।[91] गुप्तचरों की सूचना के आधार पर केन्द्र तथा अन्य समस्याओं के समाधान के लिए तत्काल कार्रवाई करता था।

मुगल सम्राट सूबों का स्वयं दौरा भी किया करते थे। इससे उन्हें उन क्षेत्रों की समस्याओं को देखने का अवसर प्राप्त होता था तथा वहीं पर कर्मचारियों के दोषों की सूचना भी प्राप्त हो जाती थी। इसलिए अकबर के ये दौरे भी प्रान्तीय तथा स्थानीय अधिकारियों के लिए भय का कारण बने रहते थे तथा उनकी स्वेच्छाचारिता पर अंकुश रहता था।[92]

यद्यपि अकबर के शासनकाल में सूबे दूर-दूर थे फिर भी प्रान्तीय शासन पर अकबर ने अंकुश लगाने तथा अधिकारियों में संतुलन बनाये रखने की जो नीति अपनायी उस पर वह सदैव सतर्क दृष्टि तथा कड़ा नियंत्रण रखता था। इसी कारण उसकी यह प्रान्तीय शासन व्यवस्था बड़े सुचारू रूप से सुगमता

---

90. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0-110
91. पी0शरण, प्रॉविंशियल गर्वनमेन्ट, पृ0: 205-06
92. अकबरनामा, भाग-3, 726-27 तथा हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0-110

तथा सफलता पूर्वक चली।[93]

मुगल शासन के दौरान काबुल सूबे में नियुक्त सूबेदार तथा अन्य अधिकारियों का विवरण :

अकबर ने अपने विद्रोही सौतेले भाई मिर्जा मोहम्मद हकीम जो सूबे के गठन के पूर्व से काबुल का शासक था तथा समय–समय पर अकबर के विरूद्ध आवाज बुलन्द किये रहता था, की मृत्यु के बाद राजा मान सिंह को 993 हि0 1585 ई0 में काबुल का प्रशासक नियुक्त किया था।[94] यह 1587 ई0 तक काबुल का सूबेदार रहा। राजा मान सिंह राजा भगवंत दास का पुत्र था तथा अपनी बुद्धिमनी, साहस तथा उच्च वंश का होने के कारण अकबर के राज्य के स्तम्भों तथा सरदारों में अग्रणी थे।[95]

---

93. ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग–2, पृ0–138

94. मआसिरूल उमरा, अनु0 बृज रत्न दास (1998), पृ0–293

95. वही, पृ0–292

कछवाहा के राजा भारमल के पुत्र राजा भगवान दास को अकबर ने अपने शासन के तीसवें वर्ष में काबुल का सूबेदार नियुक्त किया था।[96] इनकी वीरता के कारण ही अकबर ने इन्हें सम्मानित किया था तथा उच्च पद प्रदान किया। 1585 ई0 के आरम्भ में लाहौर में इनकी मृत्यु हो गयी।

कुलीज खाँ को 1594 ई0 में तथा जैन खाँ को 1597 ई0 में क्रमशः काबुल का सूबेदार नियुक्त किया गया था। अकबर के शासन काल के 40वें वर्ष में एतमादुदौला मिर्जा गियास बेग बेहरानी काबुल का दीवान नियुक्त किया गया था।[97] यह ख्वाजा शरीफ का लड़का था जिसका उपनाम हिजरी था।

शासन के 43वें वर्ष में राजा विक्रमाजीत काबुल का दीवान नियुक्त हुआ था।[98] यह खत्री जाति का था। शुरू में यह अकबर के हाथी खाने का मुंशी नियुक्त किया गया था। उसकी योग्यता के कारण अकबर ने उसे पहले रायान की पदवी प्रदान की तथा फिर उसे उच्च मनसब प्रदान किया गया।

---

96. मआसिरूल उमरा, अनु0 बृज रत्न दास (1998), पृ0–255

97. मआसिरूल उमरा, पृ0–541

98. वही, पृ0–381

अकबर के शासन काल में स्थापित की गयी प्रशासनिक व्यवस्था ने मुगल साम्राज्य को ऐसा आधार प्रदान किया कि आगामी डेढ़ सौ वर्षों तक मुगल शासकों को उसमें परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं महसूस हुई। अकबर के शासन काल में गठित सूबों की व्यवस्था ने मुगलों को इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया।

****

पुर्नगठन के पश्चात (1605 – 1707 ई0 में) काबुल सूबे का विवरण

अकबर के शासन काल में गठित सूबों की प्रशासनिक व्यवस्था ने उसके उत्तराधिकारियों को एक ऐसा आधार दिया जिस पर बाद के मुगल शासकों ने निश्चिंत होकर शासन किया। लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक इस प्रशासनिक व्यवस्था में किसी शासक ने इसके मूल स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं किया। दूर–दराज के प्रान्तों पर नियंत्रण रखने की इस नीति की सफलता ने मुगलों को लम्बे समय तक काफी बड़े क्षेत्र पर शासन करने का अवसर प्रदान किया।

यद्यपि किसी भी राज्य की यह प्रकृति होती है कि उसमें राजनीतिक हलचल विद्यमान रहे, इसलिए जहांगीर के शासन काल से लेकर औरंगजेब तथा उसके बाद के शासकों को भी समय–समय पर विद्रोहों का सामना करना पड़ा, आवश्यकता पड़ने पर सूबों में नियुक्त सूबेदारों तथा अन्य अधिकारियों का विरोध भी झेलना पड़ा तथा उनका समाधान करने के लिए राजनीतिक तथा कूटनीतिक हथियारों का इस्तेमाल भी करना पड़ा। काबुल सूबा भी इसका अपवाद नहीं था।

जहाँगीर के शासनकाल में काबुल सूबा :

काबुल सूबे में कांधार का दुर्ग कई कारणों से भारत तथा ईरान दोनों के लिए काफी महत्वपूर्ण था। जहाँगीर के शासन के प्रथम वर्ष में भी ईरान की ओर से इस पर असफल चढ़ाई की जा चुकी थी।[1]

जहाँगीर के शासन काल में काबुल में रोशानियों का विद्रोह निरन्तर उसके लिए सिर दर्द बना रहा। काबुल के सूबेदार निरन्तर इस विद्रोह को दबाने के लिए प्रयासरत रहे।[2] 1617 ई0 में बंगश में विद्रोह हो गया।[3] जहांगीर ने 1617 ई0 में महाबत खानखाना को इस विद्रोह का दमन करने के लिए काबुल का सूबेदार नियुक्त किया।[4] वह उस पद पर आगामी पाँच वर्षों तक बना रहा,

---

1. जहाँगीरनामा, अनु0 ब्रज रत्न दास (द्वितीय संस्करण), पृ0-29
2. वही, पृ0-23 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0-269 तथा राजर्स एण्ड बेवरिज, पृ0-132
3. जहाँगीरनामा, पृ0-23 तथा इकबालनामा ए-जहाँगीरी पृ0: 28-30 तथा राजर्स एण्ड बेवरीज, भाग-1, पृ0: 122-23
4. वही, तथा राजर्स एण्ड बेवरिज, भाग-1, पृ0-397 तथा वी0पी0सक्सेना मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0-23

परन्तु वह भी इन विद्रोहों को पूरी तरह समाप्त नहीं कर सका। रोशानियों के सरदार की मृत्यु हो जाने के बाद उसके पुत्र ने जहांगीर से संधि कर ली। तब जाकर कहीं काबुल प्रांत में रोशानियों का विद्रोह कुछ समय के लिए शान्त हो गया।[5] परन्तु बंगाश का विद्रोह शांत करना किसी के वश की बात नहीं थी।

1619 ई0 के अन्त में जहांगीर स्वयं कश्मीर गया और लगभग सात माह तक वहाँ रुका। इस दौरान शाहजहाँ द्वारा समय-समय पर विद्रोह करने तथा अनावश्यक मांगे रखने से जहांगीर को काफी क्षति हो चुकी थी। 1622 ई0 में महाबत खां को काबुल से हटा दिया गया और जफर खां को सूबेदार नियुक्त किया गया।[6]

---

5. जहांगीरनामा, पृ0-24, तथा इकबालनामा - ए जहाँगीरी, पृ0- 31
6. वही, पृ0-27 तथा मआसिरूल उमरा, पृ0: 90-91

1622 ई0 में साम्राज्य के दक्षिणी क्षेत्र की अस्थिरता ने फारस के शाह को एक बार कांधार की ओर आकर्षित किया। मौके का लाभ उठाकर उसने कांधार हस्तगत करने की योजना बनाई और कांधार को घेर लिया।[7] जहाँगीर ने शाहजहाँ को कांधार जाकर इस विद्रोह को कुचलने की आज्ञा दी परन्तु मौके की नजाकत को देखते हुए शाहजहाँ ने अचानक अपने को और अधिक शक्तिशाली बनाये जाने तथा अपने अधीन भेजे जाने वाली सेना का स्वतन्त्र प्रभार दिये जाने की पेशकश कर दी।[8] शाहजहाँ की यह पेशकश जहांगीर को नागवार गुजरी और उसने शाहजहाँ को वहाँ न भेजने का फैसला किया। अन्ततः कांधार फारस के शाह के हांथों में चला गया। जहांगीर निरन्तर अस्वस्थ रहने लगा था। अस्वस्थता के बावजूद 1627 ई0 में वह कश्मीर गया परन्तु वहाँ उसका स्वास्थ्य और बिगड़ गया और उसे वापस लौटना पड़ा।[9] अक्टूबर 1627 ई0 में

---

7. जहाँगीरनामा, पृ0–30 तथा मासीरे जहाँगीरी, पृ0–105

8. जहाँगीरनामा, पृ0–31 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0–284

9. जहाँगीरनामा, पृ0 – 31

उसकी मृत्यु हो गयी।[10]

जहाँगीर के शासनकाल में काबुल में तैनात प्रमुख सूबेदार, मनसबदार तथा अन्य अधिकारी :

1617 ई0 में महावत खाँ खानखाना रोशानियों के विद्रोह को कुचलने के लिए काबुल का सूबेदार नियुक्त हुआ था। वह पाँच वर्षो तक काबुल का शासक रहा।[11] 1622 ई0 में जफर खाँ काबुल का सूबेदार नियुक्त हुआ। जहाँगीर के शासन काल के 19वें वर्ष (1624 ई0) में अबुल हसन तुर्बती रूकनुस्सल्तनत ख्वाजा काबुल का सूबेदार नियुक्त किया गया था।[12] इसका पुत्र जफर खाँ दरबार से उसका प्रतिनिधि नियुक्त हुआ था।

अबुल हसन तुर्बती खुराशान के तुर्बत जिला का रहने वाला था। अकबर के शासन काल में वह शहजादा दनियाल की सेवा में था, इसके बाद

---

10. जहाँगीरनामा, पृ0–36, तथा बनारसी प्रसाद सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ (1974), पृ0–54
11. वही, पृ0–23 तथा मआसिरूल उमरा, पृ0: 90–91
12. मआसिरूल उमरा, पृ0–91 तथा जहाँगीरनामा, पृ0: 667–68

उसका वजीर तथा दीवान नियुक्त हुआ। जहांगीर के काल में इसको 5000 सवार का मनसब प्राप्त हुआ था।[13]

अजीजुल्ला खाँ भी जहाँगीर के शासन काल में दो हजारी 1000 सवार का मनसबदार था। यह काबुल में नियुक्त किया गया था।[14]

शाहजहाँ के शासनकाल में काबुल सूबा :

जनवरी 1628 ई0 में अमीरों की सहमति से तमाम झंझावातों के बीच शाहजहाँ को शासक बनाया गया और उसके नाम का खुतबा पढ़ा गया।[15] शाहजहाँ ने शासक बनते ही काबुल में लश्कर खाँ को सूबेदार बनाया।[16] यद्यपि लश्कर खाँ एक साहसी एवं विवेकी अधिकारी था किन्तु

---

13. मआसिरूल उमरा, पृ0–90 तथा जहाँगीरनामा, पृ0–669
14. मआसिरूल उमरा, पृ0–31
15. बनारसी प्रसाद सक्सेना, पृ0–59, लाहौरी भाग–1, पृ0: 82–99
16. लाहौरी, भाग–1, पृ0: 190–201

शिया मतावलम्बी होने के कारण काबुल में एक सुन्नी दल कतन ने उसका विरोध आरम्भ कर दिया। सम्राट को यह बात अच्छी न लगी, क्योंकि वह काबुल में दलबन्दी नहीं सहन कर सकता था। अतः सईद खाँ की सफलता से प्रभावित होकर उसने उसको लश्कर खाँ के स्थान पर काबुल का सूबेदार नियुक्त कर दिया।

1634 ई0 में शाहजहाँ ने जगत सिंह को बंगस का थानेदार नियुक्त किया और वहाँ के विद्रोही खटकों को दबाने का आदेश दिया। वह तीन वर्षों तक इस पद पर बना रहा। 1637 ई0 में उसे काबुल सूबे से सम्बद्ध कर दिया गया।

1640 ई0 में उसे बंगस का मुख्य अधिकारी बनाया गया।[17] इस दौरान शाही दरबार में उसकी स्थिति आरोपों से घिर गयी और शाहजहाँ ने उसे दरबार में हाजिर होकर उसे अपनी सफाई देने का निर्देश दिया परन्तु उसने आने से इन्कार कर दिया। यह उसकी विद्रोही मनोवृत्ति का परिचायक था अन्ततः शाहजहाँ

---

17. लाहौरी, भाग–1, पृ0–144 तथा बी0पी0 सक्सेना, पृ0–88

ने अपने तीन सेनापतियों, सैयद खाने जहाँ, सईद खाँ, जफर जंग तथा असालत खाँ को उस इलाके में घुसकर उसे दण्डित करने का आदेश दिया। इस अभियान की कमान काबुल से वापस लौट रहे राजकुमार मुराद को सौंपी गयी।[18]

नवम्बर 1641 ई0 को जगत सिंह हतोत्साहित हो गया और राज कुमार मुराद के पास उपस्थित हुआ। परन्तु वास्तविक समर्पण उसने 1642ई0में किया तथा अनुनय विनय तथा राजकुमार की संस्तुति के बाद मार्च 1642 ई0 में जगत सिंह का मनसब बहाल कर दिया गया।[19]

1639 ई0 में हजारा कबीला ने विद्रोह कर दिया इस दौरान सम्राट शाहजहाँ काबुल की सैर को गया था। शाहजहाँ ने सईद खाँ को आदेश दिया कि इन हजारा कबीलों को सबक सिखाया जाय। हजारा मुखिया ने समर्पण कर

---

18. बनारसी प्रसाद सक्सेना, पृ0: 87-93 तथा लाहौरी, भाग-2, पृ0 : 239

19. बनारसी प्रसाद सक्सेना, पृ0-95

दिया और शाहजहाँ ने उसे क्षमा कर दिया इस तरह हजारा क्षेत्र शान्त हो गया।[20]

कुछ दिनों बाद तूरानी क्षेत्र (मध्य एशिया) अशान्त हो गया। परिणामस्वरूप इमाम कुली के भाई नज्र मोहम्मद ने इमाम कुली के लिए समस्या खड़ी कर दी और उसे पद्च्युत होना पड़ा।[21] नज्र मोहम्मद के नाम का खुतबा पढ़ा गया परन्तु वहाँ की जनता के दिल में वह अपना स्थान नहीं बना सका। अयोग्य कर्मचारियों को हटाने, वेतन का प्रचलन करने तथा जागीर प्रथा के उन्मूलन के फलस्वरूप उमराव वर्ग भी उसका विरोध करने लगा। असंतोष की सुलगती हुई आग ने दिवंगत सुल्तान के पुत्र बहराम सुल्तान को विद्रोह करने का मौका दे दिया। नज्र मोहम्मद ने विद्रोहियों का दमन करने के लिए अपने पुत्र अब्दुल अजीज को भेजा। 1645 ई0 में अब्दुल अजीज को बुखारा का खान घोषित किया गया।[22]

---

20. बी0पी0 सक्सेना, पृ0–122, तथा लाहौरी भाग–2, पृ0: 12–14
21. बी0पी0सक्सेना, पृ0: 198–99 तथा लाहौरी भाग–2, पृ0: 52–56
22. लाहौरी भाग–2, पृ0: 534–56, तथा वी0पी0 सक्सेना, पृ0: 200

नज्र मोहम्मद के पतन के पश्चात शाहजहाँ ने तूरान में हो रही घटनाओं को गम्भीरता से लिया और सर्वप्रथम बदख्शाँ पर आधिपत्य स्थापित करने की योजना बनायी।[23]

1645 ई0 में शाहजहाँ ने अपने कुछ योग्य एवं कर्मठ सेना नायकों के एक दल को संगठित कर काबुल के लिए रवाना किया और अमीर–उल–उमरा को क्रियाशील साधनों को जुटाने का अधिकार प्रदान किया।[24] 1645 ई0 में अमीर उल उमरा की सहमति से खलील बेग ने कहमर्द पर अधिकार कर लिया।[25] अगस्त 1645 ई0 में अशालत खाँ ने बदख्शाँ अभियान के लिए काबुल से प्रस्थान किया परन्तु प्राकृतिक कारणों से उसे यह अभियान निरस्त करना पड़ा।[26]

---

23. बी0पी0 सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0–200

24. लाहौरी भाग–2, पृ0–416

25. बी0पी0 सक्सेना, पृ0–200

26. वही, पृ0–201

. अक्टूबर 1645 ई0 में जगत सिंह ने एक साहसी प्रयास किया और काबुल से प्रस्थान कर तूल दर्रा पार करते हुए खोस्त में पहुँच गया। जगत सिंह को वहाँ से खदेड़ने के लिए कफ़श कलमाक एक विशाल सेना लेकर पहुँचा परन्तु जगत सिंह ने उसका डटकर मुकाबला किया और उसे खदेड़ कर स्वयं पंजशीर लौट आया।[27]

नज्र मोहम्मद ने अपने राज्य को बचाने के लिए एक और प्रयास किया । परिणामस्वरूप हिसार के निकट अब्दुल अज़ीज से उसका युद्ध हुआ। नज्र मोहम्मद को भागना पड़ा और उसने शाहजहाँ से सहयोग की प्रार्थना की।[28] शाहजहाँ ने इसे अपनी स्वार्थ सिद्धि का साधन समझा और शीघ्रातिशीघ्र सहायता देने की भावना प्रदर्शित की।[29]

---

27. लाहौरी, भाग–2 पृ0: 456–58 तथा बी0पी0 सक्सेना, पृ0–201
28. बी0पी0 सक्सेना, पृ0–202, तथा लाहौरी, भाग–2, पृ0–203
29. लाहौरी भाग–2, पृ0: 530–32, तथा सक्सेना, पृ0: 203

अब मुगल प्रभुत्व को इस क्षेत्र में प्रभावी रूप से बनाये रखने हेतु राजकुमार मुराद को 50,000 सवार तथा 10,000 पैदल सैनिक तथा सभी प्रसिद्ध सेनापति उसके साथ नियुक्त किये गये। फरवरी 1540 ई0 में इस सेना ने काबुल से कूच किया। राजकुमार मुराद इस अभियान के प्रति अपने पिता शाहजहाँ जितना उत्साही नहीं था।

मई 1540 ई0 में वह काबुल पहुँचा और फिर वहाँ से चारीकारा पहुँचा। यहाँ से उसने कुलीज खाँ को गौरी और कहमई अधिकृत करने भेजा और स्वयं बदख्शाँ की ओर बढ़ गया।[30]

जून 1546 ई0 में गौरी का दुर्ग मुगलों के अधीन हो गया। इधर राजकुमार मुराद की सेना ने बदख्शाँ पर अधिकार कर लिया और बल्ख की पूर्वी सीमा तक पहुँच गयी।[31]

---

30. बी0पी0सक्सेना, पृ0–205 तथा लाहौरी, भाग–2, पृ0–471

31. वी0पी0 सक्सेना, पृ0–205

मुगल सम्राट शाहजहाँ ने मुराद को निर्देश दिया कि समरकन्द एवं बुखारा अधिकृत करने की इच्छा प्रकट करने पर वह नज्र मोहम्मद की सहायता करे।

जुलाई 1546 ई0 ने में मुराद ने बल्ख की ओर प्रस्थान किया और रूस्तम खाँ और मीर कासिम को बल्ख की गढ़ में प्रवेश करने का आदेश दिया। कुछ समय पश्चात तिमिर्ज के दुर्ग पर मुगलों का अधिकार हो गया।[32] इस प्रकार बल्ख विजय सम्पूर्ण हो गयी।

राजकुमार मुराद के तूरान से मोह भंग ने एक और समस्या खड़ी कर दी यद्यपि शाहजहाँ ने उसे वहाँ रूके रहने तथा समरकन्द तथा बुखारा के विजय के उपरान्त तूरान का सम्राट बना देने की पेशकश ने भी उसके विचारों में कोई परिवर्तन नहीं किया।

---

32. बी0पी0 सक्सेना, पृ0–207 तथा लाहौरी, भाग–2, पृ0: 525–55

एक अन्य प्रयास में शाहजहाँ न सादुल्ला खाँ को इस आशय के साथ राजकुमार मुराद के पास भेजा कि वह उसे समझा बुझाकर सही रास्ते पर ले आये परन्तु राजकुमार के हठ ने शाहजहाँ को उसे पद से हटाने के लिए बाध्य कर दिया तथा बल्ख की बागडोर बहादुर खाँ और अशालत खाँ को सौंप दी गयी।[33]

नजाबत खाँ द्वारा बदख्शाँ का शासन ग्रहण करने से इन्कार करने पर कुलीज खाँ को वहाँ का प्रमुख अधिकारी नियुक्त किया गया।[34] अन्दरवद का शासन रूस्तम खाँ को सौंपा गया। सादुल्लाँ खाँ ने वहाँ के निवासियों को अस्वस्थ किया कि उन्हें स्थायी व्यवस्था प्रदान की जायेगी तथा तत्काल वहाँ पर चल रहे जाली और मिलावटी सिक्कों को बन्द कर दिया। इसके बाद सादुल्ला खाँ काबुल वापस आ गया।[35]

---

33. बी0पी0 सक्सेना पृ0: 208–9, तथा लाहौरी भाग–2, पृ0: 556–65

34. वही,

35. लाहौरी भाग–2, पृ0: 556–65

शाहजहाँ के शासन काल में मुगल सूबा हिन्दूकुश की पर्वती श्रृंखलाओं तक विस्तृत था। पहाड़ों के उस पार बमियान उसकी अन्तिम चौकी थी। बल्ख और बदख्शाँ की विजय के उपरान्त साम्राज्य की सीमा सिरदरिया के दक्षिणी तट और उसके सहायक आबेपंचा तक फैल गयी। बल्ख एक सपाट और समतल प्रदेश था परन्तु बदख्शाँ में स्थान –स्थान पर पहाड़ियाँ थी। तत्कालीन शाही अधिकारियों ने इस प्रान्त की क्षेत्रों की जो सुरक्षा व्यवस्था दी थी वह सामरिक दृष्टि से अपूर्ण थी। वस्तुतः सिरदरिया की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया गया था। नवविजित प्रदेश के निवासी भी शान्त नहीं थे। विजय काल पूर्ण भी नहीं हो पाया था कि उजंवेगों की एक टोली ने कुन्दूज पर धावा बोल दिया और इसके बाद अन्दखूद पर आक्रमण किया गया।[36]

इन अव्यवस्थाओं के बीच अन्ततः 1647 ई0 के बल्ख में शान्ति स्थापना का भार राजकुमार औरंगजेब को सौंपा गया।[37]

---

36. बी0पी0सक्सेना, पृ0–212 तथा लाहौरी भाग–2, पृ0: 452–58 व 613–624

37. यदुनाथ सरकार औरंगजेब भाग–1, अध्याय–5

औरंगजेब ने तूरान में स्थिति सुदृढ़ कर चुके अब्दुल अजीज को सबक सिखाया। इसी दौरान अब्दुल अजीज ने सुलह की बात की। बल्ख के भूतपूर्व खान नज्र मोहम्मद ने भी ऐसा ही एक प्रस्ताव शाहजहाँ के पास भेजा।

वहाँ की भौगोलिक तथा प्राकृतिक स्थिति को देखते हुए मुगल सेना का वहाँ बहुत दिनों तक रूका रहना सम्भव नहीं था। अक्टूबर 1647 ई0 में वह वापस आ गया।

राज्य के पुर्नधिकरण के उपरान्त भी नज्र मोहम्मद के पुत्र अब्दुल अजीज ने भी उसे चैन न लेने दिया। इस प्रकार शाहजहाँ के शासन काल में काबुल सूबे का विभिन्न क्षेत्र निरन्तर अशान्त बना रहा और विद्रोहों और युद्धों का सिलसिला अनवरत जारी रहा।

शाहजहाँ के शासन काल में काबुल में नियुक्त प्रमुख सूबेदार व अधिकारी :

अजीजुल्ला खाँ शाहजहाँ के काल का मनसबदार था। इसे इज्जत खाँ की पदवी प्रदान की गयी थी। शाहजहाँ के शासन काल में इसका मनसब

दो हजारी, 1500 सवार कर दिया गया था तथा इसे सईद खाँ के साथ कांधार भेजा गया था।[38] यहाँ इसे 500 सवार की तरक्की प्राप्त हुई थी। शाहजहाँ ने शासन के चौदहवें वर्ष में इसका मनसब बढ़ाकर तीन हजार 2000 सवार कर दिया था तथा इसे अजीजुल्ला खाँ की पदवी प्राप्त हुई थी। इसकी मृत्यु 1640 ई0 में हुई ।[39]

शाहजहाँ के शासनकाल में काबुल में नियुक्त एक और मनसबदार एवज खाँ काकशाल था। शाहजहाँ ने इसे एक हजारी 600 सवार का मनसब प्रदान किया था। बाद में इसका मनसब बढ़ाकर डेढ़ हजारी 1000 सवार हो गया।[40] अपनी योग्यता के बल पर निरन्तर इसके मनसब में वृद्धि होती रही। शाहजहाँ के शासन के 13वें वर्ष (1640 ई0) में इसे खानजादा खाँ के स्थान पर गजनी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। तीन वर्ष बाद इसकी मृत्यु हो गयी।[41]

---

38. मआसिरूल उमरा, पृ0–31
39. वही
40. वही, पृ0–558
41. वही

आजम खाँ कोका, शाहजहाँ के शासनकाल का एक और प्रमुख मनसबदार था, जिसे काबुल में कई वर्षो तक नियुक्त किया गया था। इसका नाम मुजफ्फर हुसैन था। यह खानजहाँ बहादुर कोकलवाश का भाई था। अपनी योग्यता के कारण यह शाहजहाँ का विश्वास पात्र बन गया था। प्रारम्भ में अदालत का दरोगा नियुक्त हुआ था।[42] शासन के 23वें वर्ष में अहदियों का बख्शी नियुक्त हुआ तथा 24वें वर्ष में इसका मनसब बढ़ाकर एक हजारी 400 सवार का हो गया था।[43] इसके बाद वह काबुल के मनसबदारों का बख्शी तथा वहाँ के तोपखाने का दरोगा भी नियुक्त हुआ।[44] निरन्तर तरक्की करते हुए आजम खाँ को शाहजहाँ के शासनकाल के तीसवें वर्ष में फिदाई खाँ की पदवी प्राप्त हुई ।[45] 33वें वर्ष में इसकी मृत्यु हो गयी। 1637–38 ई0 में सईद खाँ काबुल का अध्यक्ष नियुक्त किया गया।[46]

---

42. मआसिरूल उमरा, पृ0–385

43. वही

44. वही

45. वही

46. वही , पृ0– 300

. शाहजहाँ के शासक होने पर राजा विट्ठल दास गौड़ को तीन हजारी 1500 सवार का मनसब, राजा की पदवी, झण्डा, चाँदी की कर्ण सहित घोड़ा, हाथी तथा तीस सहस्र रूपया सिक्का प्राप्त हुआ था। ये राजा गोपाल दास गौड़ के पुत्र थे। शाहजहाँ के शासन के 21वें वर्ष में इन्हें पाँच हजारी 5000 सवार वाले मनसब के साथ काबुल में मनसबदार नियुक्त किया गा था।[47]

शाहजहाँ के शासन काल में काबुल में नियुक्त किये गये कुछ अन्य प्रमुख अधिकारियों का विवरण इस प्रकार है –

शाहजहाँ के शासन काल के दूसरे वर्ष में एवज खाँ काकशाल को काबुल के पास जोहाक थाने का कोतवाल नियुक्त किया गया था।[48]

राजा शिवराम गोरे गोपाल दास का पौत्र तथा राजा बलराम का पुत्र था। यह शाहजहाँ का अत्यन्त कृपा पात्र था। उसकी बहादुरी के कारण

---

47. मआसिरूल उमरा, पृ0 – 385

48. वही, पृ0– 558

शाहजहाँ ने उसे शासन के 19वें वर्ष में शहजादा मुराद के साथ बल्ख और बंदख्शा पर चढ़ाई करने के लिए भेजा तथा शासन के 20वें वर्ष में उसे काबुल के किले का रक्षक नियुक्त कर दिया।[49] 21वें वर्ष. में इसे वहाँ से हटा लिया गया था परन्तु उसी वर्ष के अन्त में जब बादशाह को अब्दुल अजीज खाँ तथा नजर मुहम्मद खाँ में झगड़ा होने का समाचार प्राप्त हुआ तो शाहजहाँ ने बहुत से सरदारों के साथ इसे पुनः काबुल में नियुक्त कर दिया था।[50] 1657 ई0 में इसकी मृत्यु हो गयी थी।

1658 ई0 में मुगल सम्राट शाहजहाँ को उसके पुत्र औरंगजेब ने बन्दी बना लिया और 31 जुलाई 1658 ई0 को उसका राज्याभिषेक हुआ।[51]

---

49. मआसिरूल उमरा, पृ0- 430

50. वही, पृ0-431

51. आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0-340

औरंगजेब के शासन के 14वें वर्ष (1672 ई0) में अफरीदी नेता सरदार अकलम खाँ ने अफगानिस्तान में स्वयं को शासक घोषित कर दिया।[52] उसने मुगलों के विरूद्ध पठानों को एकजुट कर धार्मिक युद्ध की दुन्दुभी भी बजा दी। इन विद्रोहियों ने अफगानिस्तान के गर्वनर पर अली मस्जिद में हमला किया। मुगल सेना परास्त हुई। औरंगजेब ने इन विद्रोहियों का दमन करने के लिए महाबत खाँ को अफगानिस्तान का सूबेदार बनाकर भेजा, परन्तु महाबत खाँ गुप्त रूप से अफगानों से मिल गया।[53] तब उसने शुजात खाँ को भेजा वह भी 1674ई0 में पराजित हुआ। 1675 ई0 में युगीर खाँ के सक्रिय भागीदारी के बाद विद्रोहियों का दमन हुआ और सीमान्त प्रदेश में शान्ति बहाल हुई।[54] औरंगजेब ने अमीर खाँ को काबुल का राज्यपाल नियुक्त किया।[55] अमीर खाँ 1698 ई0 तक काबुल का सूबेदार रहा। अमीर खाँ मैत्री सम्बन्धों के साथ-साथ कूटनीति का भी सहारा

---

52 आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0-344 तथा एल0पी0 शर्मा, मुगल कालीन भारत, पृ0-197

53. ए0एल0 श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0-344

54. वही

55. मआसिरूल उमरा, पृ0-246

लिया और अकलम खाँ की एकता भंग करने में सफलता प्रापत कर ली। औरंगजेब के शासन काल में भारत में 21 सूबे थे। जिनमें काबुल एक महत्वपूर्ण सूबा था।[56] 1707 ई0 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल शासक अपने–आप में इतने उलझे रहे कि वह सूबों पर प्रभावकारी नियंत्रण स्थापित करने में असफल साबित हुए। औरंगजेब की कट्टरवादी नीति ने भी सूबों में विद्रोह की ज्वाला भर दी थी। जिसे कोई सर्वशक्तिशाली शासक ही नियंत्रित कर सकता था। परन्तु औरंगजेब की मृत्यु के बाद ऐसा मुगल शासक नहीं हुआ, जिससे साम्राज्य टुकड़ों में विभक्त होने लगा और अकबर के शासन काल में स्थापित की गयी व्यवस्था एक लम्बे अन्तराल के बाद चरमराने लगी थी।

औरंगजेब के शासन काल में काबुल में नियुक्त प्रमुख सूबेदार तथा अधिकारी:

औरंगजेब के शासन काल में भी योग्य तथा बीर मनसबदारों की नियुक्ति काबुल सूबे में की गयी।

---

56. श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0: 371–72

आजम खाँ कोका, जो शाहजहाँ के शासन काल में काबुल के मनसबदारों का बख्शी तथा तोपखाने का दरोगा नियुक्त हुआ था, औरंगजेब के शासन काल में काबुल का सूबेदार नियुक्त हुआ।[57]

अमीर खाँ खवाफी का वास्तविक नाम सैय्यद मीर था। यह शेख मीर का छोटा भाई था। शाहजहाँ के शासन काल में वह दक्षिण की सेना में नियुक्त था। औरंगजेब ने उसे काबुल का शासक नियुक्त किया था तथा उसे खिलअत, खास तलवारें, मोती जड़े कटारें, एक फारसी घोड़ा, खास हाँथी तथा 5 हजारी 5000 सवार का मनसब प्रदान किया।[58]

अली मर्दान खाँ को 1698 ई0 में काबुल का सूबेदार नियुक्त किया गया था।[59] उसे बादशाह द्वारा अमीरूल उमरा की पदवी प्रदान की गयी थी। इसके पिता गंज अली खाँ जिग, कुर्दिस्तान के निवासी थे।

---

57. मआसिरूल उमरा, पृ0–388

58. वही, पृ0–246

59. वही, पृ0–300

अर्शद खाँ मीर अबुल अला, अमानत खाँ खवाफी का सम्बन्धी था और बहुत दिनों तक काबुल प्रान्त में नियुक्त था। औरंगजेब के शासन काल में यह किफायत खाँ के स्थान पर खालसा का दीवान नियुक्त हुआ।[60] वह बहुत ही सच्चा तथा ईमानदार था। 1701 ई0 में उसकी मृत्यु हुई ।[61]

अगर खाँ पीर मोहम्मद नूह के पुत्र याफस का वंशज था। वह अपने साहस और बुद्धिमता के लिए प्रसिद्ध था। औरंगजेब के शासन काल में वह अपनी सेना का मुखिया था। उसे खाँ की पदवी प्रदान की गयी थी। उसे काबुल के सहायकों में नियुक्त किया गया था।[62] बाद में वह दरबार बुला लिया गया था। शासन के सत्रहवें वर्ष में औरंगजेब ने उसे फिर से सहायक के रूप में काबुल में नियुक्त किया। 24वें वर्ष में वह अफगानिस्तान की सड़कों का निरीक्षक

---

60. मआसिरूल उमरा, पृ0–269

61. वही

62. वही, भाग–2, पृ0–2

नियुक्त हुआ।[63] 1691 ई0 में इसकी मृत्यु हो गयी।

अमानत खाँ मीरक मुईनुद्दीन अहमद एक योग्य व्यक्ति था। यह पहले औरंगजेब का बख्शी था। उसकी बहादुरी के कारण उसे सम्मान तथा पुरस्कार प्राप्त हुआ था। वह शुरू से काबुल के अहदियों का बख्शी नियुक्त किया गया था।[64] बाद में इसे पटना का दीवान बना दिया गया था।

नवाब समसामुद्दौला शाहनवाज खाँ शहीद ख्वाफी औरंगाबादी का असली नाम मीर अब्दुर्रज्जाक था। वह खवाफ के सैय्यद सरदारों के वंश का था। इनके पूर्वज मीर कमालुद्दीन, अकबर के शासन काल में उच्च पद पर नियुक्त था। औरंगजेब के शासन काल में वह काबुल, मुलतान, लाहौर तथा काश्मीर में दीवान के पद पर नियुक्त हुआ।[65]

---

63. मआसिरूल उमरा, पृ0–3

64. वही, पृ0–215

65. वही, पृ–20

अब्दुल्ला खाँ को उसकी योग्यता तथा वीरता के कारण ही औरंगजेब ने उसे काबुल नगर का कोतवाल नियुक्त किया था।[66] यह सईद खाँ बहादुर जफर जंग का पुत्र था। अपनी योग्यता के कारण यह सदैव उन्नति करता रहा। यह कांधार में अपने पिता के साथ नियुक्त हुआ था। पिता की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने उसे दो हजारी 1500 सवार का मनसब प्रदान किया तथा साथ ही उसे "खाँ" की पदवी और चाँदी के साज सहित घोड़ा भी प्रदान किया।[67]

अकबर के शासन काल में स्थापित की गयी सूबों की व्यवस्था ने आने वाले मुगल सम्राटों के लिए प्रशासनिक दृष्टिकोंण से सुगम मार्ग स्थापित कर दिया था। इसके बावजूद जहाँगीर शाहजहाँ तथा औरंगजेब को स्थानीय विद्रोहों से मुक्ति नहीं मिल सकी। शक्ति का विकेन्द्रीकरण तथा सूबों के अधिकारियों की स्थानान्तरण की नीति ने दूर-दराज स्थापित सूबों में शासन व्यवस्था को

---

66. मआसिरूल उमरा, पृ0-162

67. वही

सुदृढ़ आधार तो प्रदान कर दिया था परन्तु फिर भी उसमें विकास की असीम संभावनाएं थीं।

अकबर के बाद के मुगल शासकों को क्षेत्रीय विद्रोहों ने इन संभावनाओं को तलाशने तथा उनका क्रियान्वयन करने का पर्याप्त समय नहीं मिलने दिया। परिणामस्वरूप अकबर के बाद आगामी डेढ़ सौ वर्षो तक यह व्यवस्था स्थापित रही और मुगलों को प्रशासनिक दृष्टि से सहूलियतें प्रदान करती रही ।

***

****

चतुर्थ अध्याय

काबुल का सामाजिक विवरण

****

काबुल का सामाजिक विवरण

प्राचीन काल से ही कोई भी राज्य अपने अस्तित्व को बनायें रखने के लिए बहुत कुछ अपनी सामाजिक विशिष्टताओं तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों पर निर्भर रहता है। किसी भी राज्य का निवासी उस राज्य के सामाजिक ताने बाने में ही स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है और उसी परिधि में उस राज्य के प्रति अपने उत्तरदायित्वों तथा राष्ट्र प्रेम के प्रति तत्पर भी होता है। काबुल का समाज भी अपनी परम्पराओं तथा विशिष्टताओं के लिए एक अलग स्थान रखता है।

काबुल का सामाजिक जीवन भी कई वर्गों तथा उपवर्गों में विभाजित था। जहाँ शासक ही सर्वोपरि होता था। बाबर से पूर्व तीमूर बेग के उत्तराधिकारियों तक शासक मिर्जा के नाम से जाना जाता था।[1] बाबर ने

---

1. बाबरनामा, पृ0- 258 तथा अकबरनामा, जिल्द-2, पृ0-285

1508 ई0 में अपने एक निर्णय से राज्य के शासक को बादशाह कहना प्रारम्भ करवा दिया था।[2] काबलु का समाज मूलतः मुस्लिम प्रधान समाज था तथा इसमें उच्च वर्गीय, मध्यम वर्गीय तथा निम्न वर्गीय तीनों ही प्रकार के लोग शामिल थे। मध्यकाल में इस्लामी संस्कृति का तीव्र गति से विस्तार होने के कारण इस युग में मुस्लिम समुदाय ने अपना एक विशेष स्थान निर्धारित कर लिया था। इस काल में काबुल तथा भारत के मध्य गहन सम्बन्ध स्थापित हो रहे थे तथा दोनों एक दूसरे की संस्कृतियों का तेजी से आदान-प्रदान कर रहे थे। इसीलिए भारतीय समाज पर भी मुस्लिम समुदाय का असर स्पष्ट परिलक्षित होता है। काबुल में मुस्लिम समाज की संरचना अत्यन्त सरल थी। सुल्तान प्रजा का नेता तथा समाज का प्रधान होता था।[3]

---

2. बाबरनामा, पृ0-258

3. वही तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0: 493-494

एक बादशाह समाज के नेता की हैसियत से सामाजिक एवं सांस्कृतिक आचरण निर्धारित करता था।[4] कुरान पाक में भी सुल्तान के प्रभाव के उल्लेख इस प्रकार हैं - "हे ईमान" इस्लाम धर्म वालों। अल्लाह और रसूल का आदेश मानों साथ ही "सलित उमरा" अर्थात सुल्तान का भी आदेश मानो।[5] इस प्रकार सुल्तान ही मुस्लिम समाज का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति था। यही परिपाटी काबुल में चल रही थी। काबुल से भारत आये मुसलमानों ने भारतीय समाज में अपना अस्तित्व बनाने के साथ ही भारतीय समाज को काबुल की मुस्लिम संस्कृति के निकट आने का भी अवसर प्रदान किया। काबुल में मुस्लिम समुदाय के बीच श्रेष्ठता के लिए संघर्ष होने के पश्चात वर्ग भेद की भावना को प्रश्रय मिला और यहाँ पर भी समाज वर्गो में विभाजित हो गया था।[6]

---

4. तारीखे फकरूद्दीन मुबारक शाह (ई0 डेनिशन द्वारा सम्पादित) पृ0-12
5. वही
6 दि फाउण्डेशन आफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया - हबीबुल्ला, पृ0- 274

सुल्तान के ठीक बाद अमीरों का वर्ग था, जो शासक के बहुत निकट होता था। बाबरनामा में बाबर ने काबुल में अपने पिता के उन तमाम अमीरों का उल्लेख किया है जो सदैव शासक को सलाह मशविरा देते थे, युद्धों के समय सैन्य संचालन करते थे तथा गोष्ठियों, आदि में भी शामिल हुआ करते थे।[7] तत्कालीन अमीर वर्ग को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम अहले शैफ और द्वितीय अहले कुलम् ।[8] अहले कुलम वर्ग के लोग कातिब, दबीर, वजीर आदि पदों पर नियुक्त किये जाते थे और ये शासक के अत्यधिक विश्वसनीय होते थे। जबकि कुलीन वर्ग (उमरा अथवा जान) की गणना अहले शैफ के अन्तर्गत होती थी।[9] सामान्तया ये शासक

---

7. बाबरनामा, पृ0 : 35-38

8. हबीबुल्ला, पृ0-274

9. वही

के पक्ष में रहते थे, परन्तु शासक के दुर्बल होने पर ये उनका साथ छोड़ भी देते थे। इसका एक उदाहरण उस समय देखने को मिलता है जब 1546 ई0 में काबुल में हुमायूँ के बहुत से सरदार इस डर से कामरान के साथ मिल गये कि कहीं वह उनके परिवार के सदस्यों को मरवा न दे।[10]

पुनः 1547 ई0 में काबुल पर हुमायूँ का अधिकार होने के बाद वही सरदार पुनः हुमायूँ के साथ खड़े हो गये।[11]

अमीर वर्ग की रचना विजातीय थी। परन्तु इसमें अधिकांश मुगल थे। बाबर के पिता उमर शेख मिर्जा के समय में कई महत्वपूर्ण अमीर थे।

---

10. हुमायूँ, भाग-2, सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृ0: 160-161

11. मुन्तखबुत्तवारीख, भाग-1 (उद्धृत रिजवी), पृ0-161

हामिद मोहम्मद बेग इल्जाई, ख्वाजा हुसेन बेग, शेख मजीद बेग, अली मजीद कूचीन, कासिम बेग कूचीन, अली दोस्त तगाई, अली दरवेश खुराशानी आदि फरगाना में बाबर के पिता के अमीर थे। इनमें से कुछ बाद में काबुल तथा हिन्दुस्तान तक बाबर के साथ आये।[12]

कुलीन वर्ग शासन में सेनानायकों, प्रशासकों तथा राजकर्ता के रूप में विद्यमान था।[13] ये अमीर तथा सेनानायक के रूप में राज्य की सेवा करते थे।

काबुल की राजसत्ता में "उलेमा" का भी विशिष्ट स्थान था। यह वर्ग मुस्लिम रीति रिवाजों तथा धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन कराता

---

12. बाबरनामा, पृ0 : 35-37

13. बाबरनामा, पृ0: 194-220 तथा मुगल कालीन भारत, हुमायूँ, भाग-1, सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृ0-768

था।[14] शासक भी उलेमा को सदैव सम्मान प्रदान करता था तथा समय–समय पर उसके ज्ञान एवं योग्यताओं के प्रति आदर प्रकट करने के लिए उन्हें सम्मानित भी करता था। हुमायूँ जब काबुल में था तो कुछ ऐसे विद्वान उसके साथ थे जो भूत और भविष्य दोनों बताने की योग्यता रखते थे। इन्हें जफर वेत्ता कहा जाता था।[15] हुमायूँ के समय में मीर अब्दुल करीम जाफरी तथा मुल्ला बुर्ज अली जफर वेत्ता के रूप में विद्यमान थे।[16] प्रत्येक मुस्लिम बस्ती में एक "ईमाम" होते थे। इनका मदरसों पर भी नियंत्रण होता था और मस्जिदों में नमाज अदा करने तथा त्योहारों की घोषणा चाँद देखने के बाद यही किया करते थे। इस प्रकार काबुल के शासन में उलेमाओं को

---

14. बाबरनामा, पृ0: 194–220 तथा मुगल कालीन भारत, हुमायूँ भाग–1, सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी, पृ0–768

15. मुगलकालीन भारत, हुमायूँ भाग–1, पृ0–768

16. वही

विशिष्ट स्थान प्राप्त था।

कुलीन वर्ग के अतिरिक्त अन्य मुस्लिम जनता जन साधारण के अन्तर्गत आती थी। इस काल में काबुल के अधिसंख्य मुसलमानों का मुख्य व्यवसाय व्यापार था तथा इनमें से अधिकांशतः कृषि आधारित व्यापार करते थे। इसके अतिरिक्त कपड़ों, मिश्री, शक्कर तथा औषधियों की जड़ों का व्यापार भारतीयों द्वारा काबुल में किया जाता था।[17]

इन्हीं मुस्लिम व्यापारियों ने मुस्लिम समाज के मध्य वर्ग का सृजन किया था। इसके अतिरिक्त शिक्षा तथा धर्म प्रचार के साथ-साथ मदरसों व मस्जिदों में शिक्षा देने वाले धर्मशास्त्री, दार्शनिक, चित्रकार, इतिहासकार भी मध्य वर्ग के अन्तर्गत आते थे।[18]

---

17. बाबरनामा, पृ0- 146

18. वही, पृ0: 211-214 तथा आइने अकबरी, पृ0: 261-270 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0-550

काबुल में अनेक जाति के लोग रहते थे। जिनमें तुर्क, ईमाक (मुगल) तथा अरब के लोग शामिल थे।[19] मध्य वर्ग के नीचे मुस्लिम हजाम, दर्जी, धोबी, मल्लाह, बाजे वाले, तम्बोली, माली, तेली, मदारी. चरवाहे, इत्यादि थे। काबुल के मुसिलम समाज में भिखारी तथा निराश्रितों की भी पर्याप्त संख्या विद्यमान थी।

काबुल की आबादी का एक बड़ा वर्ग गृह सेवकों तथा गुलामों के रूप में विद्यमान था। प्रत्येक सुल्तान, कुलीन तथा सम्पन्न व्यक्ति स्त्री तथा पुरूषों को सेवकों के रूप में नियुक्त करते थे।[20] उन्हें घर गृहस्थी के कामों के अतिरिक्त भी नियुक्त किया जाता था।

---

19. बाबरनामा, पृ0- 149

20. वही, पृ0-146 तथा जहाँगीर नामा, पृ0-297

<u>शासक का रहन–सहन</u> :

काबुल के शासक /सूबेदार आलीशान रहन–सहन तथा खान–पान के शौकीन होते थे। उनके वस्त्र कीमती होते थे तथा उनके दरबार की शानो–शौकत भव्य होती थी।

सूबा गठन से पूर्व बाबर तथा हुमायूँ ने काबुल में अपने जीवन का काफी समय व्यतीत किया था। हिन्दुस्तान आगमन से पूर्व काबुल ही बाबर की पृष्ठभूमि थी। बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा में अपने रहन–सहन के तरीकों का उल्लेख किया है।[21]

हुमायूँ ने निर्वसन काल के दौरान काफी समय काबुल में गुजारा था। अकबर ने भी कई बार काबुल सूबे के क्षेत्र में भ्रमण किया था। इन शासकों के काल में काबुल ने बहुत कुछ हिन्दुस्तानी संस्कृति को आत्मसात्

---

21. बाबरनामा, पृ0: 147–49

किया था तथा हिन्दुस्तान में तूरानी संस्कृति को विकसित करने का प्रमुख केन्द्र के रूप में स्थापित हुआ।[22]

शासक वर्ग के रहन–सहन तथा उसके दैनिक दिनचर्या में मुगलों की आन–बान और शान–साफ परिलक्षित होती थी। प्रत्येक शासक की अपने वस्त्र आभूषण एवं श्रृंगार की शैली होती थी। उच्च श्रेणी के लोग अंगरखा और चूड़ीदार पैजामा पहनते थे। शासक तथा विशिष्ट अमीर वर्ग की पोशाकों में कसा हुआ घाघरा (काबा) शामिल था जो कि मौसम के अनुसार महीन मलमल अथवा ऊन का बना होता था कभी–कभी वे बागा भी धारण करते थे।[23] रात्रि विश्राम के लिए शासक/सूबेदार पृथक शयन वस्त्र का

---

22. ए0एल0 श्रीवास्तव, मुगल कालीन भारत, पृ0 : 530–532

23. बाबारनामा, पृ0: 156–158 तथा श्रीवास्तव, पृ0– 533

प्रयोग करते थे। इसके अतिरिक्त मोजा तथा सुनिर्मित जूते पहनते थे।[24]

सूबे में तैनात अन्य अधिकारियें अथवा अमीर वर्ग अपनी स्थिति के अनुसार वेश भूषा धारण करते थे।

शासक का दरबार भव्य तो होता ही था साथ ही उसमें अनुशासित तौर तरीकों का भी समावेश था।[25]

बाबर ने अपनी आत्मकथा में उन दरबारियों का उल्लेख किया है जो शासक के अति निकट होते थे परन्तु शासक की सर्वोच्चता प्रमाणित करने के लिए वो दरबार के शिष्टाचार का अनुसरण करते थे।

---

24. अकबरनामा, भाग-1, पृ0: 64-65 तथा मुगल कालीन भारत, हुमायूँ, भाग-1, पृ0- 46

25. बाबरनामा, पृ0- 321

शासक/ सूबेदार समय–समय पर गोष्ठियों का आयोजन भी किया करता था जिसमें राज्य के प्रमुख अमीरों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती थी।[26]

उत्सव अथवा हर्ष के क्षणों में शासक द्वारा मदिरा गोष्ठियों के आयोजन का उल्लेख भी मिलता है। बाबर ने स्वयं काबुल के सुन्दर क्षेत्रों में मदिरा गोष्ठियों का आयोजन किया था।[27]

हुमायूँ भी नशीले पदार्थों के सेवन का शौकीन था और वह भी इस तरह के आयोजनों को पसन्द करता था।

प्रान्त के गठन के बाद सूबेदारों ने भी इस परिपाटी को चलाने का प्रयास किया जो हिन्दुस्तान के शासक द्वारा अपनायी गयी थी। प्रान्त में

---

26. बाबरनामा, पृ0 : 134–138

27. वही

समकक्ष पद पर आसीन अन्य अधिकारियों से राय मशविरा तथा प्रान्त की स्थिति की जानकारी के लिए भी विभिन्न बैठकों के आयोजनों का उल्लेख मिलता है।[28]

काबुल में फल – फूलों की अधिकता थी। यहाँ सूखे मेवें बहुतायत में थे। काबुल के सेब काफी प्रसिद्ध थे। इन सबका उल्लेख शासकों के व्यंजनों में प्राप्त होता है।[29]

सूबेदार/शासक शिकार का शौकीन होता था तथा भोजन के साथ –साथ यह उसके मनोरंजन का साधन भी होता था।

काबुल तथा उसके आस – पास के क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के मसालों के उत्पादन का उल्लेख भी मिलता है जिनका इस्तेमाल कर भोजन

---

28 अकबरनामा, भाग–1, पृ0: 264–266 तथा जहाँगीरनामा, पृ0–111

29. बाबरनामा, पृ0–157 तथा आइने अकबरी, पृ0–70

को और स्वादिष्ट बनाया जाता था।[30]

काबुल में अकबर तथा उसके बाद के शासकों के शासन काल में कई हिन्दू सूबेदारों की नियुक्ति भी हुई थी, अतः काबुल के रहन-सहन में हिन्दुस्तानी संस्कृति भी दिखाई पड़ती है। काबुल के लोगों में मनोरंजन के कई साधन प्रचलित थे। इनमें शासक वर्ग प्रमुख रूप से शिकार करने, चौसर खेलने तथा शतरंज खेलने का शौकीन था। नौका-विहार भी मनोरंजन का अच्छा साधन था।[31]

तीज त्योहारः

इस काल में मुस्लिम समाज के मध्य भी अनेक उत्सव, त्योहार एवं तीर्थ यात्राएं प्रचलित थीं। अधिकांश मुसलमान मक्का की तीर्थयात्रा करते थे। मुस्लिम समाज अपने त्योहारों को बड़ी धूमधाम से मनाया करता था।

---

30. बाबरनामा, पृ0-146 तथा आइने अकबरी, पृ0: 64-65

31. मआसिरूल उमरा, पृ0: 292-93, 255 तथा 541 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0 : 535

16वीं तथा 17वीं शताब्दी में काबुल में मुसलमानों द्वारा मनाये जाने वाले प्रमुख धार्मिक उत्सव तथा त्योहार निम्नलिखित है :-

नौरोज :

मुस्लिम समुदाय सरकारी त्योहार के रूप में "नौरोज" मनाता था, जो सामान्यतया इरानी नव वर्ष के दिन मनाया जाता था। यह बसन्त का त्योहार था, जो बड़े उद्यानों और नदी, तट पर स्थित बगीचों में मनाया जाता था तथा इसका मुख्य आकर्षण संगीत तथा रंग- बिरंगे फूल हुआ करते थे।[32]

ईद-उल-फितर :

काबुल में ईद-उल-फितर भी सर्वाधिक महत्व का त्योहार था। इस त्योहार की तारीख का निर्धारण चाँद देखने से होता था। इस अवसर पर चारों ओर खुशियाँ मनायी जाती थी। मस्जिद में ईद की नमाज पढ़ने के बाद

---

32. आइने अकबरी, पृ०- 202

जश्न मनाने का कार्यक्रम होता था। एक दूसरे को उपहार देना, सन्तों के दर्शन करना व मजालिसे आयोजित करना, इस त्योहार का महत्वपूर्ण अंग था। इस त्योहार में विशेष रूप से शाही जुलूस भी निकाला जाता था।[33]

ईद–उल–जुहा :

वर्ष के अन्तिम माह जिल हज्जा के दसवें दिन मुसलमान इस त्योहार को मनाते थे। इस त्योार पर ऊँट या भेड़ या बकरी की बलि दी जाती है तथा उसके बाद यह त्योहार जश्न के साथ मनाया जाता है।[34]

शबे बारात :

यह त्योहार शा–बान महीने की चौहदवीं रात को मनाये जाने वाला एक महत्वपूर्ण त्योहार था। इस अवसर पर मस्जिदों में मोम बत्तियाँ भेजनें,

---

33. आइने अकबरी, पृ0–202

34. वही, तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0–535

और फुलझड़िया तथा पटाखे छोड़ने का लोकप्रिय रिवाज भी काबुल में था।[35]

मुहर्रम :

मुसलमानों के लिए यह एक शोक का त्योहार था जो खास तौर पर शिया तथा कट्टर धार्मिक विचारों वाले मुसलमानों द्वारा मनाया जाता था। इस त्योहार को मनाने में मुस्लिम सम्प्रदाय मुहर्रम के प्रथम दस दिन कर्बला के बीरों की शहादत के विवरण पढ़ते थे तथा उनकी रूहों की चिर शान्ति के लिए खास तौर पर इबादतें (प्रार्थनाएं) करते थे। इस अवसर पर जुलूसों में ताजिये भी निकलते थे।[36]

उर्स :

उपरोक्त त्योहारों के अतिरिक्त मुस्लिम वर्ग सूफी सन्तों की दरगाहों , मजारों तथा मकबरों पर जाकर इनकी बरसी या "उर्स" मनाया

---

35. आइने अकबरी, पृ0–202 तथा राधेश्याम, मध्यकालीन प्रशासन समाज और संस्कृति (1993), पृ0 – 187

36. राधेश्याम, पृ0–187 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0–535

करते थे। ऐसे अवसरों पर सूफी सन्तों तथा विद्वानों की दरगाहों पर हिन्दु मुसलमान दोनों एकत्र होते थे। उर्स के दिनों में सन्त की स्मृति में कौव्वालियाँ, उनकी प्रशंसा में तजकीरें तथा कवि गोष्ठियाँ आदि भी हुआ करती थी।[37]

स्त्रियों की दशा :

उस समय के समाज में स्त्रियों की स्थिति से ही सामाजिक अवस्था प्रतिबिम्बित होती हैं।[38] परन्तु तत्कालीन मुस्लिम समाज में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी।[39] शासक परिवार की स्त्रियाँ हरम तक ही सीमित होती थी। यद्यपि 17वीं शनाब्दी में कुछ स्त्रियों के राज्य सत्ता में हस्तक्षेप सामने आता है परन्तु आमतौर पर स्त्रियाँ पिता, पति तथा पुत्र

---

37. राधेश्याम, पृ0–187 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0–535

38. रेखा मिश्रा, वीमेन इन मुगल इण्डिया, पृ0–1

39. वही, पृ0– 129 तथा हेरम्ब चतुर्वेदी, शोध ग्रन्थ , पृ0: 139–40

पर ही आश्रित होती थी।[40]

राज परिवार की स्त्रियों का एक विशिष्ट स्थान था। शासक परिवार की स्त्रियों को उच्च स्तरीय व्यक्तिगत शिक्षा दी जाती थी।[41]

अन्य वर्गों की स्त्रियों के सन्दर्भ में यह बात लागू नहीं थी तथा वे सदैव पुरूषों पर आश्रित ही रही। तत्कालीन समाज में स्त्रियों की स्थिति का अवलोकन निम्न मापदण्डों के आधार पर किया जा सकता है।

उस समय समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित था। मुस्लिम समाज में उच्च वर्ग की महिलाएं तो पर्दा करती थी परन्तु निम्न वर्ग और निर्धन वर्ग की महिलाओं के लिए अपनी जीविकोपार्जन के लिए पर्दा प्रथा का सख्ती से पालन करना सम्भव नहीं था।[42]

---

40. रेखा मिश्रा, पृ0–88
41. अकबरनामा, भाग–1, (उद्धृत रिजवी) पृ0: 60–63 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0 – 543
42. ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0: 535–36

उस काल में समाज में वेश्यावृत्ति भी प्रचलित थी। विशिष्ट अवसरों पर जैसे कि सार्वजनिक भोजों, त्योहारों, शादी, विवाह आदि में तथा मनोरंजन के लिए वेश्याओं तथा नर्तकियों को बुलाया जाता था।[43]

उस काल में समाज में स्त्रियों की शिक्षा की भी व्यवस्था थी। लड़कियों की शिक्षा के लिए पृथक स्कूलों का प्रबन्ध था। समाज में स्त्रियों की स्थिति मिली जुली थी। कहीं स्त्रियाँ विशिष्टता की परिधि में थी तो कहीं निर्धनता के कारण मजदूरों के रूप में विद्यमान थी। उच्च वर्गीय महिलाओं की स्थिति समाज में कुछ ठीक थी, परन्तु निम्न वर्गीय महिलाएं शोषण का शिकार थी।

अन्त:पुर :

तत्कालीन शासकों / सूबेदारों में अन्त:पुर स्थापित करने की प्रथा थी और प्रत्येक शासक का अपना अन्त:पुर होता था, जिसमें शासक की रानियाँ तथा उसके परिवार से सम्बन्धित अन्य महिलाएं भी निवास करती थीं।[44]

---

43. ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0: 535-36 तथा राधेश्याम, पृ0-200 तथा डॉ0 हेरम्ब चतुर्वेदी, पृ0: 179-80

44 बाबरनामा, पृ0 - 34

अन्त:पुर में पर्याप्त मात्रा में सेविकाएं भी होती थी जो अन्त:पुर में रहने वाली राज परिवार की महिलाओं की सेवा करती थीं। अन्त:पुर में रहने वाली राज परिवार की स्त्रियों की दशा शासक के साथ उनके सम्बन्धों तथा उनकी कृपा दृष्टि पर निर्भर करती थी। बाबर ने अपनी आत्मकथा "बाबरनामा" में अपने पिता के अन्त:पुर का उल्लेख करते हुए यह लिखा है कि उनके पिता के अन्त:पुर में ख्वाजा हुसैन बेग की लड़की उलुम खान थी जिसे डेढ़ साल बाद अन्त:पुर से निकाल दिया गया था।[45] इससे यह प्रमाणित होता है कि अन्त:पुर में स्त्रियों को अपनी स्थिति सुदृढ़ रखनी पड़ती थी अन्यथा वह अन्त:पुर से निष्कासित भी की जा सकती थी। समय-समय पर स्त्रियों की स्थिति परिवर्तित होती रहती थी तथा उसमें नये-ये सदस्य शामिल होते रहते थे। बाबर के पिता के आखिरी दिनों में तून सुल्तान नाम की स्त्री उनके अन्त:पुर में शामिल हुई थी।[46]

---

45 बाबरनामा, पृ0- 34

46. वही तथा आइने अकबरी, पृ0 : 51-52

भाषा तथा साहित्य :

काबुल में ग्यारह अथवा बारह भाषाएं बोली जाती थी। जिनमें अरबी, फारसी, तुर्की, मुगली, हिन्दी, अफगानी, पशाई, पराजी, गिबरी, बीरकी, लमगानी भाषाएं शामिल हैं।[47]

इस काल में अनेक काव्य एवं गद्य के रचयिता विद्यमान थे जो दरबार में शासक के सम्मान में रचनाएं सुनाते थे तथा शासकों से प्रशंसा एवं पुरस्कार प्राप्त करते थे। शाहजहाँ के शासन काल में ख्वाजा अबू हसन तुरबती का पुत्र जफर खाँ काश्मीर का प्रांत पति था तथा इसने अनेक काव्यों की रचना की थी। उसने एक दीवान भी लिखा था।[48] साएब शाहजहाँ के काल का श्रेष्ठ कवि था। इसे एक नई शैली स्थापित करने का प्रवर्तक भी कहा जाता है।[49] वह

---

47 **बाबरनामा**, पृ0– 149

48. **बज्में तैमूरिया**, पृ0: 184–85 तथा बी0पी0 सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 – 268

49. **बज्मे तैमूरिया**, पृ0: 194–95

बहुत समय तक काबुल में रहा।[50] फारूख भी इस काल का श्रेष्ठ कवि था। वह अफजल खाँ के साथ काफी दिनों तक काबुल में रहा था।[51] इसी प्रकार मौलाना सैफी बुखारी जो बाबर के काल का प्रसिद्ध कवि था और बुखारा का रहने वाला था। ये अपनी रूबाइयों और कहानियों के लिए प्रसिद्ध थे।[52]

दूसरा प्रसिद्ध कवि युसुफ वर्दी था जो फरगना का रहने वाला था। वह अपने गजलों और शायरी के लिए प्रख्यात था।[53]

आही कवि, जो अपनी गजलों के लिए प्रख्यात था। उसने एक "दिवान" का भी संग्रह किया था।[54]

---

50. बज्मे तैमूरिया, पृ0: 194–95
51. तबकाते शाह जहानी, पृ0–324 (ब)–25 तथा बी0पी0 सक्सेना, मुगल सम्राट शाहजहाँ, पृ0 – 265
52. बाबरनामा, पृ0–213
53. वही, पृ0 – 214
54. वही

यादगारे हालती भी बाबर के समय का एक प्रसिद्ध कवि था। वह तूरान का रहने वाला था।[55] इसी प्रकार मैलो हैरवी, जो बाबर के काल का प्रसिद्ध कवि था। इसका नाम मिर्जा कुली था। यह तुर्क वंश का था।[56]

बीनाई कवि, यह हेरी का रहने वाला था। इसके पिता का नाम उस्ताद मुहम्मद सब्जबीना था। यह गजलों का प्रसिद्ध कवि था।[57]

- अब्दुल्लाह भी बाबर के काल का प्रसिद्ध कवि था। वह जाम का रहने वाला था। "सिकन्दरनामा" के आधार पर उसने "तिमूरनामा" नामक

---

55. बाबरनामा, पृ0 – 270
56. आइने अकबरी, पृ0–261
57. बाबरनामा, पृ0: 212–13

ग्रन्थ लिखा उसकी "लैला–मजनूँ" नामक मसनवी अधिक मशहूर हुई ।[58]

इसी प्रकार कुछ अन्य कवि भी बाबर के काल में हुए जिनके नाम निम्नलिखित हैं –

मोहम्मद सालेह[59], दरवेश बहराम[60], पीर मोहम्मद बदख्शी[61], तथा सबूही चगताई [62] ।

मुगल शासकों को साहित्य के प्रति रूचि उनकी खुद की रचनाओं में भी परिलक्षित होती है। बाबर की "बाबरनामा" जो बाबर को एक साहित्य

---

58. बाबरनामा, पृ0 : 212–13

59. वही, पृ0–214

60. आइने अकबरी, पृ0–265

61. बाबरनामा, पृ0 – 214

62 वही, पृ0–266

का पुजारी साबित करता है वही जहाँगीर की तुजके – जहाँगीरी उसकी विद्वता को सर्वश्रेष्ठ साबित करने में सक्षम है।

अकबर तथा शाहजहाँ के शासन काल में कवियों तथा लेखकों को दिया जाने वाला प्रश्रय तथा पद मुगल शासकों की साहित्य के प्रति प्रतिबद्धता को प्रमाणित करता है।

संस्कार :

काबुल में तत्कालीन मुस्लिम समाज अनेक रीति–रिवाजों तथा संस्कारों का पालन करता था। बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु तक कई नियमबद्ध संस्कार होते थे। स्त्री के गर्भ धारण के सातवें महीने में उसकी गोद भरी जाती थी।[63] सन्तति के उत्पन्न होने पर सर्वप्रथम उसका मुण्डन या अकीका होता था। तत्पश्चात 4 वर्ष 4 माह 4 दिन की आयु होने पर शिशु की बिसमिल्लारवानी

---

63. राधेश्याम, पृ0–194

होती थी। लड़के – लड़की के विवाह के पूर्व वर–वधू के परिवार में हेनाबन्दी की रस्म पूर्ण की जाती थी तथा विवाह के उपलक्ष्य में दोनों परिवारों में बड़ी धूमधाम से खुशियाँ मनायी जाती थी। मृत्यु के उपरान्त शव के समीप आत्मा की शान्ति के लिए कुरान पाठ किया जाता था तदुपरान्त शव को सफेद कपड़े में लपेट कर कब्रिस्तान में दफना दिया था तथा 40वें दिन आत्मा की शान्ति के लिए चालिसवाँ होता था। इस प्रकार विधि विधान से मुसलमानों के संस्कार परिवार में सम्पन्न किये जाते थे।[64]

वेश–भूषा :

मध्यकाल में काबुल के निवासी विभिन्न प्रकार की वेषभूषा धारण करते थे। ऋतु के अनुसार अनेक वस्त्र होते थे। काबुल एक अत्यधिक ठंड पड़ने वाला क्षेत्र था इसलिए मोटे तथा ऊन के कपड़ों का इस्तेमाल होता था।[65] शासक की वेशभूषा अन्य लोगों से भिन्न होती थी। जबकि अमीर वर्ग

---

64. राधेश्याम, पृ0– 194

65. बाबरनामा, पृ0: 153–54 तथा आइने अकबरी, पृ0: 90–91

अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप अपनी वेशभूषा निर्धारित करते थे।[66] शासक के परिधान हिन्दुस्तान की विभिन्न वस्त्र शालाओं में तैयार किये जाते थे।[67] वस्त्र के शाही कारखानों में लाहौर, आगरा, फतेहपुर इत्यादि प्रसिद्ध थे। इन परिधानों में टकौचिया, दोतही, शाह अजदा, सुजनी, कलमी, काबा, गदर, फुर्जी, फरगूल, चकमन, सलवार, जामा इत्यादि प्रमुख थे।[68] शासक नुकीले जूते पहनते थे तथा इनके सिर पर पगड़ी होती थी।[69]

इसी प्रकार अमीरों की वेशभूषा भी काफी आकर्षक होती थी। सिर पर टोपी अथवा पगड़ी, शरीर पर कना, लबादा या जामा तथा कमर के नीचे का भाग ढकने के लिए पैजामा या सलवार पहनने का प्रचलन अमीरों में था।[70]

---

66. राधेश्याम, पृ0– 192

67. आइने अकबरी, पृ0–90

68 वही, पृ0: 91–92 तथा राधेश्याम, पृ0–192

69. वही

70. राधेश्याम, पृ0–192 तथा बाबरनामा, पृ0: 147–149

प्रान्त के सूबेदार अथवा प्रमुख अमीरों को समय–समय पर मुगल शासकों द्वारा बहुमूल्य खिल्लते ग्रीष्म तथा वर्षा ऋतु की खिल्लते उपहार स्वरूप दी जाती थी, जिन्हें वे दरबार में आते समय धारण करते थे। वे ढीला कुर्ता तथा पैजामा भी पहनते थे।[71] अन्य किस्म के परिधानों में बांहदार जैकेट, बटनदार या बिना बटन की जैकेट, बिना बाँह की जैकेट, पटका तथा विभिन्न प्रकार की टोपियों तथा पगड़ी शामिल थे।[72]

साधारण मुसलमान सिर में सादी टोपी, लम्बा कुर्ता, पैजामा अथवा सलवार पहनते थे। अत्यधिक ठंड पड़ने पर ये कम्बलों तथा शालों का इस्तेमाल करते थे।[73] आइने अकबरी में विभिन्न प्रकार की शालों का उल्लेख मिलता है। कश्मीर की शाले काफी प्रसिद्ध थीं जिन्हें चार तह करके कन्धे पर रखने

---

71 आइने अकबरी, पृ0: 90–92 तथा राधेश्याम, पृ0–192

72. वही

73. आइने अकबरी, पृ0–92

का रिवाज था।[74]

स्त्रियों की वेषभूषा :

इस काल में स्त्रियों की वेषभूषा निरन्तर परिवर्तित होती रहती थी। पहले इस्तेमाल कि जाने वाले तुरानी परिधानों में परिवर्तन हो गया था और अब स्त्रियाँ कवा, लम्बा कुर्ता, सलवार, घाघरा, घेरदार पैजामा, कुर्ते के ऊपर जैकेट आदि भी पहनती थी।[75] सामान्यतया मुस्लिम स्त्रियाँ बुर्का धारण करती थी।[76] मुँह ढकने के लिए चुनरी का इस्तेमाल भी किया जाता था। निम्न वर्गीय स्त्रियाँ इन चीजों का इस्तेमाल नहीं करती थी।

सौन्दर्य प्रशासन तथा आभूषण :

इस काल में पुरूषों की तुलना में महिलाएं अधिक श्रृंगार करती थी।

---

74. आइने अकबरी, पृ0–93
75. वही, पृ0 – 92 तथा राधेश्याम, पृ0–193
76. वही

उच्च परिवारों के पुरूष भी सौन्दर्य प्रशाधनों का प्रयोग करते थे।[77] आँखों में सुरमा लगाना, बालों में खिजाब लगाना, सुगन्धित इत्रों का प्रयोग करना तथा पान खाना मुसलमानों में आम रिवाज था।[78] शासक तथा अमीर आभूषण भी धारण करते थे।

उच्च वर्ग की महिलाएं सारा समय श्रृंगार करने में व्यतीत करती थी। सोलह प्रकार के श्रृंगारों का उल्लेख प्राप्त होता है। स्नान करने से पूर्व सुगन्धित उबटन लगाना, सुगन्धित जल से स्नान करना, बाल संवारना, जूड़ा बनाना, सुगन्धित इत्रों का इसतेमाल करना, होठ रंगना, मुँह पर श्वेत पावडर लगाना, आँखों में काजल लगाना, हाँथों में मेंहदी तथा पाँव में आलता लगाना स्त्रियों के प्रमुख श्रृंगार थे।[79]

---

77. राधेश्याम, पृ0 –193
78. आइने अकबरी, पृ0– 79
79. राधेश्याम, पृ0– 193

स्त्रियाँ विभिन्न प्रकार के आभूषण धारण किया करती थी। माथे पर शीश पट्टी, कानों में बालियॉ, कुण्डल, कर्णफूल, नाक में नथुनी, नथ तथा फूकी व गले में हार मालाएं, गुलबन्द, कलाइयों में चूड़ियां, कंगन आदि अंगुलियों में अंगूठी, कमर में करधनी, पैरों में पायजेब प्रमुख आभूषण थे। [80] मध्यम तथा निम्न वर्ग की स्त्रियाँ गिने चुने आभूषणों का इस्तेमाल ही करती थी। ये आभूषण मुख्यतः सोने तथा चाँदी से निर्मित होते थे। उच्च वर्ग की स्त्रियों में कुछ आभूषण हीरा तथा मोती से भी बनाये जाते थे।[81]

मनोरंजन के साधन :

तत्कालीन काबुल के समाज में शासक वर्ग के साथ-साथ उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग के लोग विभिन्न प्रकार से अपना मनोरंजन करते थे।

---

80. आइने अकबरी, पृ0: 28-29

81. वही तथा राधेश्याम, पृ0-193

शतरंज खेलना, चौसर खेलना, नौका विहार, पशु–पक्षियों का शिकार इत्यादि अनेकों मनोरंजन के साधन थे।[82]

बाबर ने अपनी आत्मकथा "बाबरनामा" में अनेकों पशु–पक्षियों का वर्णन किया है जो काबुल में पायी जाती थी।

काबुल में तोता, मैना, लूजा, लंगूर, नील गाय, छुट्टंगा (कोतहपाया) आदि बहुत होते थे। कुछ और चरिन्द – परिन्द हैं जिनके नाम हिन्दुस्तान में भी नहीं सुने गये ।[83]

इन पक्षियों का शिकार करना, तथा उन्हें पकाकर भोजन करना तत्कालीन लोगों में काफी प्रचलित था।

---

82. ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0–535

83. बाबरनामा, पृ0–153

उच्च तथा अमीर वर्ग के पुरूष वर्ग नर्तकियों तथा वेश्याओं के यहाँ जाकर अथवा उन्हें दरबार में बुलाकर गीत- संगीत तथ नृत्य का आयोजन करवाते थे [84]

घुड़सवारी तथा शिकार प्रमुख मनोरंजन का साधन था। शिकार में पक्षियों के अतिरिक्त शेर, चीतों, हिरण आदि का भी शिकार किया जाता था।

इस प्रकार काबुल का तत्कालीन मुस्लिम समाज विविधताओं से भरा हुआ था तथा उसमें विभिन्न वर्ग के मुस्लिम समुदाय के लोग अपना जीवन यापन कर रहे थे।

---

84. राधेश्याम, पृ0- 200 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, पृ0-535-536.

तत्कालीन समाज में रीति–रिवाज, संस्कार , उत्सव, तथा त्योहारों का अध्ययन करने से पता चलता है कि इस काल में सामाजिक क्रियाओं का बहुत अधिक महत्व था तथा लोग एक दूसरे से मिलना जुलना तथा उनके सुख–दुख में शरीक होना पसन्द करते थे।

***

****

पंचम – अध्याय

"मुगलों के आधीन काबुल सूबे का आर्थिक विवरण "

****

" मुगलों के आधीन काबुल सूबे का आर्थिक विवरण "

विश्व के चौथी जलवायु में काबुल एक कृषि प्रधान देश था।[1] बाबर के शासनकाल में काबुल की आमदनी जो खेती से, व्यापार से, उसके निवासियों से तथा मैदानों से होती थी, सब मिलाकर आठ लाख शाहरूखी थी।[2] काबुल सूबा 7 तूमानों में विभक्त था जिसमें काश्मीर पक्ली, सिम्बर, स्वात, बाजौर, कान्धार तथा जाबुलिस्तान शामिल था। काश्मीर जिले की मालगुजारी रूपये 15,52, 826 थी। तथा काबुल की, रूपये 20,12,686/10 थी ।[3]

यद्यपि तत्कालीन समय में इस सूबे में कितनी भूमि पर खेती होती थी सम्भवतः इसकी पैमाइश नहीं हो सकी थी।[4]

---

1. बाबरनामा, पृ0 – 144
2. वही, पृ0–161
3. आइने अकबरी, भाग–2, पृ0: 193–206
4. वही, पृ0: 367, 413

बाबर के विवरणानुसार काबुल छोटी जगह थी, और यहाँ तलवार का काम होता था।[5] काबुल की आमदनी तमगा से होती थी और इसकी पूरी वसूली बाकी बेग (खुसरो शाह का छोटा भाई) के पास थी। साथ ही साथ काबुल और पंजशीर की दरोगागिरी, गढ़ाई हजारा की हुकूमत, कूशूलक, सब उसी के पास थी।[6]

बाबर ने गज़नी नासिर मीरजा को दिया था, अब्दुर रज्ज़ाक मीरजा को मंदरावर, नूर दर्रे, कूनार और नूरगल समेत नीङ् - नहार का तूमान अता किया था। काबुल के बाद सबसे बड़ी आमदनी इसी तूमान की थी।[7]

---

5. बाबरनामा, पृ0-155
6. वही, पृ0-181
7. वही, पृ0-255

काबुल में काशगर फरगना, तुरकिस्तान, समरकन्द, बल्ख, बुखारा, बदख्शाँ और हिसार से काफिले में आते रहते थे। काफिलें खुरासान से कान्धार आते थे, और इस तरह से काबुल - खुरासान और हिन्दुस्तान का नाता जोड़ता था। काबुल व्यापार करने के लिए एक अच्छी मण्डी थी। हर साल करीब 8000 - 10,000 घोड़े काबुल आते थे। हिन्दुस्तान से भी 15-20 हजार घरानों के मुखिया यहाँ आते थे और अपने साथ वहाँ से बुरदे (बिर्की के लिए दास) घोड़े, कपड़े, मिसरी, शक्कर, खाँड, मसाले, खुशबुदार जड़ी - बूटियाँ आदि माल भी साथ लाते थे। काबुल में खुरासान, ईराक, चीन और रोम आदि देशों के भी सौदे मिल जाते थे।[8]

बाबर के एक अन्य विवरणानुसार गोरबन्द तूमान की आमदनी बहुत कम थी, लेकिन वहाँ चाँदी और लाजवर्द (एक प्रकार का रत्न) की खानें पायी जाती थी।[9]

---

8. बाबरनामा, पृ0- 148

9. वही, पृ0-151

अकबर के शासन काल में सूबों के गठन के पश्चात तूमानों की संख्या 21 हो गयी थी तथा सरकारी आय का स्वरूप कुछ परिवर्तित हो गया। अकबर ने भू-राजस्व के रूप में उपज का 1/3 भाग मालगुजारी सुनिश्चित किया। मालगुजारी अधिकतर नगद रूप में ली जाती थी।[10] दूरवर्ती तथा पिछड़े क्षेत्रों में अनाज के रूप में भी मालगुजारी वसूल करने की अनुमति थी।

काबुल सूबे में काबुल शहर सबसे अधिक सरकारी आय का स्रोत था तथा यहाँ से सर्वाधिक राजस्व की प्राप्ति होती थी। अकबर के शासन काल में काबुल से प्राप्त राजस्व 1,275,841 दाम, 7,000 कवालरी तथा 15,000 एनफैन्ट्री था।[11]

---

10. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0-154
11. आइने अकबरी, भाग-2, (अनुवादक- एच0एस0 जैरेट तथा सरकार), पृ0- 414

पूर्वी काबुल में तूमान की आय 9,692,410 दाम थी। जबकि ननगिनहार की आय 11,8 94,003 दाम, 200 कवालरी तथा 5,000 एनफैन्ट्री थी।[12] उत्तरी काबुल के मन्दरौर तूमान का राजस्व 2,684,880 दाम, कवालरी 50 तथा 500 एनफैन्ट्री था। अलीशंग तूमान का राजस्व 3,701,150, 50 कवालरी तथा 5000 एनफैन्ट्री, अलीमंगर का राजस्व, 1,544,670 दाम, 500 कवालरी तथा 1000 एनफैन्ट्री, बुलूक नज़राव का राजस्व 2,045,451 दाम, 3000 कवालरी तथा 3000 एनफैन्ट्री, लोग़हर तूमान का राजस्व 3,193,214 दाम, 50 कवालरी तथा 500 एनफैन्ट्री, बदख़ॅव तूमान का राजस्व 413,885 दाम 50 कवालरी तथा 500 एनफैन्ट्री अलसाई तूमान का राजस्व 600,000 दाम, 5000 एनफैन्ट्री, पंजशीर तूमान का राजस्व 461,940 दाम तथा 35,000 एनफैन्ट्री था।[13] दक्षिणी काबुल के बंगाश तूमान का राजस्व 3,332, 347 दाम, 7,087 कैवालरी तथा 87,800 एनफैन्ट्री, कोहट तूमान का राजस्व 701,620 दाम तथा 300

---

12 आइने अकबरी, भाग–2 (अनुवादक– एच0एस0 जैरेट तथा सरकार) पृ0– 414

13. वही, पृ0–414

कवालरी तथा 5000 एनफैन्ट्री, नग़हर तूमान का राजस्व 854,000 दाम, 1000 कवालरी तथा 7000 एनफैन्ट्री, गारडेज़ तूमान का राजस्व 2,030,002 दाम, 200 कवालरी तथा 1000 एनफैन्ट्री; माइदान तूमानका राजस्व 1,606,799 दाम, 2000 कवालरी, गज़नीन तूमान का राजस्व 3,768,642 दाम, 1000 कवालरी तथा 5000 एनफैन्ट्री था।[14] पश्चिमी काबुल के क्षेत्र में चार तूमान थे, जिनमें फारमूल का राजस्व 325,712 दाम 1000 कवालरी तथा 5000 इनफैन्ट्री था। दमन ए कोह तूमान का राजस्व 16,461,785 दाम, 5000 कवालरी तथा 30,000 एनफैन्ट्री,गोरबन्द,तुमान का राजस्व 1,574,760 दाम, 3000 कवालरी तथा 5000 एनफैन्ट्री तथा जोहाक बमिआन का राजस्व 861,750 दाम, 200 कवालरी तथा 1000 एनफैन्ट्री था।[15]

---

14. आइने अकबरी, भाग-2(अनुवादक-एच0एस0 जैरेट तथा सरकार) पृ0- 414
15. वही, पृ0-415

इन राजस्वों के वसूली तथा उसे शाही खजाने में जमा कराने के लिए काबुल सूबे में कई कर्मचारी तथा अधिकारी नियुक्त थे।

काबुल सूबे के तूमानों से प्राप्त राजस्व तथा अन्य आय के स्रोत का विवरण निम्न तालिका से स्पष्ट होता है:–

पूर्वी काबुल [16] :

क्रमांक	तूमान	राजस्व	सयूरग़ल	कवालरी	एनफैन्ट्री
1.	विग्राम	9,692,410	–	–	–
2.	ननगिनहार	11,894,003	1,224	200	5000

16. आइने अकबरी, भाग–2, (अनु0– एच0एस0 जैरेट तथा सरकार) (1949), पृ0– 414

पश्चिम काबुल[17] :

क्रमांक	तूमान	राजस्व	सयूरगल	कवालरी	एनफैन्ट्री
1.	फारमूल	325,712	–	1000	5000
2.	दमन–ए–कोह	16,461,785	–	5000	30,000
3.	गोरबन्द	1,574,760	–	3000	5,000
4.	जोहाक बमिआन	861,750	–	200	1000

17. आइने अकबरी, भाग–2, (अनु0 – एच0एस0 जैरेट तथा सरकार) (1949), पृ0– 415

उत्तरी काबुल :[18]

क्रमांक	तूमान	राजस्व	सयूरगल.	कवालरी	एनफैन्ट्री
1.	मन्दरौर	2,684,880	–	50	500
2.	अलीशंग	3,701,150	1948	50	5000
3.	अलिंगर	1,544,670	–	500	1000
4.	बुलुक नज़राव	2,045,451	–	3000	3000
5.	लोग़हर	3,193,214	22,960	50	500
6 .	बदरौंव	413,885	–	50	500
7.	अलिसाँई	600,000	–	–	5000
8.	पंजहीर (पंजशीर)	461,940	–	–	35,000

18. आइने अकबरी, भाग–2, (अनु0 एच0एस0 जैरेट तथा सरकार) (1949) पृ0 – 414

दक्षिणी काबुल :[19]

क्रमांक	तूमान	राजस्व	सयूरगल	कवालरी	एनफैन्ट्री
1.	बंगाश	3,332,347	–	7,087	87,800
2.	कोहट (खोस्ट)	701,620	–	300	5,000
3.	नग़हर	854,000	–	1000	7,000
4.	गारडेज़	2,030,002	–	200	1,000
5.	माइदान	1,606,799	1,864	2000	–
6.	गज़नीन	3,768,642	1,076	1000	5000

19. आइने अकबरी, भाग-2 (अनु0 एच0एस0 जैरेट तथा सरकार) (1949), पृ0 – 414

कृषि आधारित व्यवसाय :

काबुल का कुछ क्षेत्र ठंडा तो कुछ उष्ण था इसलिए यहाँ पर शीत एवं ऊष्ण दोनों प्रकार के फल पैदा होते थे। बाबर ने अपनी आत्म कथा "बाबरनामा" में शीत जलवायु के फलों में अंगूर, अनार, सेब, जर्द आलू, बिही, सफतालू, आलू बालू, चहारमगज आदि फलों का उल्लेख किया है।[20] जाड़ों के अन्य फलों तथा मेवों में खुबानी, शरीफे, नाशपाती, नाख, बादाम, संजद (चीका नाम की झाड़ी पर लगने वाला लुकाठ जैसा सफेद फल) और यांगांक (एक प्रकार का अखरोट) मनों पैदा होते थे।[21] गर्मी के फलों तथा मेवों में संतरे, तुरंज (चकोतरा, बिजौरा) अमलूक (तुरशालू, काला आडू) और गन्ना लमग़नात में होते थे। गन्ने की खेती बाबर ने ही शुरू करायी थी। चिलगोजा, निज्र–औ में बहुत होते थे। वैसे तो चिलगोजा काबुल के आस – पास भी बहुत अच्छा होता था। काबुल में शहद बहुत

---

20. बाबरनामा, पृ0–146 तथा आइने अकबरी, पृ0–77

21. बाबरनामा, पृ0– 148

होता था। यहाँ का रवाश बढ़िया होता था। काबुल में पैदा होने वाला खीरा बहुत स्वादिष्ट होता था। यहाँ एक प्रकार का अंगूर पैदा होता है जो आबंगूर कहलाता था, बहुत स्वादिष्ट होता है, इससे बनने वाली शराब बहुत तेज होती थी।[22] करौंदा काबुल की चीका झाड़ी पर होता था जो काफी मीठा और स्वादिष्ट होता था।[23]

"याडांक" एक प्रकार का अखरोट है (युग्लांस तूरानेसिस, अक्षोट: वक्षु – पारीणः) जो काबुल में पाया जाता था। तुर्कीस्तान में अखरोट कई प्रकार के होते थे। "पानी अंगूर", कोहदामन में, "साहिबी" अंगूर और बिना बीज का काबुली "हुसैनी" अंगूर भी काबुल में पैदा होता था।[24]

---

22. बाबरनामा, पृ0–148 तथा आइने अकबरी, पृ0–76

23. बाबरनामा, पृ0– 365

24. आइने अकबरी, पृ0–76

काबुल में संतरे, अनार, तरंग तो बहुत होते हैं साथ ही, नारंज (नारंगी) तुरंज, और करंज भी बहुत होते हैं।[25]

निज्र–औ उत्तर के पहाड़ों में स्थित है। इस स्थान पर अंगूर अधिक मात्रा में पैदा होते थे। यहाँ शराब की कोई कमी नहीं थी।[26] पहाड़ों में आलूचे (बादाम), चिलगोजे, बलूत (सीता–सुपारी) और खंजक, (पिस्ते की जाति का पेड़) बहुत होते हैं।

यद्यपि काबुल में खेती बहुत नहीं होती थी तथापि यहाँ के अधिकांश निवासी फलों का व्यवसायिक दृष्टि से उत्पादन करते थे और यहाँ के फल काबुल के बाहर हिन्दुस्तान के अन्य क्षेत्रों में स्थित मण्डियों में भेजे जाते थे।

काबुल के आस–पास चारों तरफ बहुत मैदान स्थित थे तथा उसमें घास बहुत अच्छी होती थी। सूग. कुरगान नाम का मैदान काबुल के उत्तर–

---

25. आइने अकबरी, पृ0–76 तथा बाबरनामा, पृ0–150

26. बाबरनामा, पृ0– 150

पूर्व में स्थित है। यहाँ घास बहुत उत्तम श्रेणी की होती थी तथा बहुत ऊँचे दामों पर बिकती थी।[27] चूँकि काबुल में घोड़ों, गधों तथा ऊँटों का अत्यधिक प्रचलन था इसलिए यहाँ की घास व्यवसायिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण थी। बाबर ने अपनी आत्म कथा में कई ऐसे मैदानों का उल्लेख किया है, जहाँ की घास बहुत उत्तम किस्म की होती थी। यद्यपि काबुल में अच्छी खेती नहीं होती थी फिर भी काबुल के पूर्व में लमगानात और उसके पाँच तूमानों में खेती के लिए अच्छी जमीन थी।[28]

अकबर के शासन काल में राजस्व बढ़ाने की दृष्टि से कृषि आधारित उत्पादनों में विकास की गति तेज हो गयी थी और यहाँ बिकने वाले फल-फूल तथा अन्य फसलों का दाम निर्धारित कर दिया गया था।[29]

---

27. बाबरनामा, पृ0 – 147
28. वही, पृ0– 150
29. आइने अकबरी, पृ0: 70–71

अकबर के शासनकाल में काबुल सूबे में फलों का जो मूल्य निर्धारित किया गया था, वह निम्नवत है :–[30]

क्रमांक	नाम	मूल्य
1.	अरहंग का खरबूजा –	
	प्रथम श्रेणी	2.50 रूपया
	द्वितीय श्रेणी	1.00 रूपये से
	तथा तृतीय श्रेणी	2.50 रूपये
2.	काबुली· खरबूजा	
	प्रथम श्रेणी	1.00 रूपये से
		1.50 रूपये
	द्वितीय श्रेणी	0.75 रूपये से
		1.00 रूपये
	तृतीय श्रेणी	0.50 रूपये से
		0.75 रूपये

3.	समरकन्दी सेब 7 से 15 तक	1.00 रूपये में
4.	बिही 10 से 30 तक	1.00 रूपया
5.	अमरूद 10 से 100 तक	1.00 रूपये
6.	अनार प्रति मन	6.50 रूपये से
		15.00 रूपये
7.	काबुली और फिरंजी सेब	1.00 रूपये
	5 से 10 तक	
8.	कश्मीरी अंगूर प्रतिमन	108 दाम
9.	छोहारा प्रति सेर	10 दाम
10.	किशमिश प्रति सेर	9 दाम
11.	बड़े किशमिश प्रति सेर	9 दाम
12.	आलु बुखारा प्रति सेर	8 दाम
13.	खूबानी प्रति सेर	8 दाम
14.	कन्दहारी मुनक्का प्रति सेर	7 दाम
15.	अंजीर प्रति सेर	7 दाम
16.	मुनक्का प्रति सेर	6.75 दाम

17.	उन्नाब प्रति सेर	3.50 दाम
18.	बादाम की गरी प्रति सेर	28 दाम
19.	बादाम प्रति सेर	11 दाम
20.	पिस्ता प्रति सेर	9 दाम
21.	जिलगोजा प्रति सेर	8 दाम
22.	सिंजिद प्रति सेर	6.50 दाम
23.	पिस्ता की गरी प्रति सेर	6 दाम
24.	अखरोट गरी प्रति सेर	4.50 दाम
25.	फुन्दुक प्रति सेर	3 दाम
26.	अखरोट प्रति सेर	2.50 दाम

---

30. उक्त विवरण आइने अकबरी, पृ0–71 से लिया गया है।

तत्कालीन काबुल में मसालों का उत्पादन भी अच्छी मात्रा में होता था। मसालों का व्यापार यहाँ से हिन्दुस्तान तक किया जाता था। अकबर-कालीन शासन व्यवस्था में काबुल में मसालों के दाम भी सुनिश्चित कर दिये गये थे। नीचे दी गयी तालिका में मसालों की कीमतों का विवरण दिया गयाहै ।[31]

क्रमांक	नाम	प्रति सेर	मूल्य
1.	केसर	प्रति सेर	400 दाम
2.	लौंग	"	60 दाम
3.	इलायची	"	52 दाम
4.	गोल मिर्च	"	17 दाम
5.	मिर्चा	"	16 दाम
6.	सोंठ	"	4 दाम
7.	अदरख	"	2.50 दाम
8.	जीरा	"	2 दाम
9.	अजवाइन	"	2 दाम

10.	हल्दी	प्रति सेर	10 दाम
11.	धनिया	"	3 दाम
12.	सिया हदाना (कलौंजी)	"	1.50 दाम
13.	हींग	"	2 दाम
14.	दाल चीनी	"	40 दाम
15.	नमक	प्रति मन	16 दाम
16.	सौंफ	प्रति सेर	1 दाम

इसके अतिरिक्त काबुल की ठंडी जलवायु में मांस की बिक्री अत्यधिक प्रचलित थी। विशेषकर जंगली भेड़ें तथा बकरे यहाँ अत्यधिक मात्रा में बिकते थे।[32] अकबर ने मांस का भाव भी निश्चित कर दिया था। नीचे दी गयी तालिका में काबुल में मांस की बिक्री का भाव उल्लिखित है।[33]

---

31. आइने अकबरी, पृ0–69
32. बाबरनामा, पृ0– 162
33. आइने अकबरी, पृ0– 69

क्रमांक	नाम	मूल्य
1.	अफगानी भेड़	
	प्रथम श्रेणी (प्रति)	2.00 रूपया
	द्वितीय श्रेणी (प्रति)	1.50 रूपया
	तृतीय श्रेणी (प्रति)	1.25 रूपया
2.	काश्मीरी भेड़ (प्रति)	1.50 रूपया
3.	बरबरी बकरा	
	प्रथम श्रेणी (प्रति)	1.00 रूपया
	द्वितीय श्रेणी (प्रति)	0.75 रूपया
4.	भेड़ का गोस्त (प्रति मन)	65 दाम
5.	बकरे का गोस्त (प्रति मन)	54 दाम
6.	कुलंग का गोश्त (एक मन)	20 दाम
7.	दुर्राज (एक नग)	3 दाम
8.	चकोर (प्रति नग)	20 दाम
9.	बूदना (प्रति नग)	1 दाम

बाबर के काल में हिन्दुस्तान तथा खुरासान के बीच व्यापार की दो प्रमुख मीडिया थी, प्रथम काबुल तथा द्वितीय कांधार था।[34] काबुल की मण्डी में काशगर फरगना, तुर्किस्तान, समरकन्द, बुखारा, बल्ख, हिसार तथा बदख्शाँ से व्यापारी आते थे। कान्धार में खुरासान के सौदागर आते थे।[35] यहाँ पर व्यापार की बड़ी मण्डी थी। काबुल में घोड़ों की खरीद फरोख्त का व्यवसाय काफी प्रचलित था। कान्धार की मण्डी में प्रति वर्ष दस हजार तक घोड़े बिकने के लिए काबुल से आते थे।[36] हिन्दुस्तान से भी इस मण्डी में प्रति वर्ष बीस हजार व्यापारी कान्धार की मण्डी आते थे। इन बाजारों में गुलाम, कपड़े, मिश्री, शक्कर, इत्यादि का व्यापार भी होता था। खुरासान, रूम, ईराक तथा चीन की वस्तुएं भी इन मण्डियों में बिकती थी।[37] उस काल में हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा बाजार काबुल ही था।

---

34. बाबरनामा, पृ0- 146

35. वही

36. वही

37. वही

काबुल में भू-राजस्व व्यवस्था :

अबुल फज़ल के अनुसार राज्योंमें रबी की वसूली मार्च के महीने में और खरीफ की वसूली अक्टूबर के महीने से प्रारम्भ होती थी।[38] औरंगजेब के काल में किसानों से फसल काटने से पहले ही लगान वसूल कर लिया जाता था। अकबर के काल में किसानों को अधिक सुविधा प्राप्त थी। लगान या तो मुक्द्दम, पटवारी अथवा परगनें का आमील वसूल करते थे या किसान स्वयं ही खजाने में जमा कर देता था।[39]

भूमिकर सीधे किसानों से वसूल किया जाता था अथवा सामूहिक रूप में लिया जाता था। औरंगजेब के शासन काल में काबुल के विभिन्न क्षेत्रों में जहाँ लोग पैमाइश का विरोध करते थे वहीं उनसे भी एकमुश्त रकम तय कर ली जाती थी।[40] जमींदार तथा जागीरदार अपने क्षेत्रों में अपने कर्मचारियों द्वारा

---

38. हरिशंकर श्रीवास्तव, पृ0-157

39. वही तथा इरफान हबीब, दि एग्रेरियन सिस्टम, पृ0: 230-236

40. इरफान हबीब, पृ0: 230-236

मालगुजारी वसूल करते थे। उन्हें शासक की तरफ से निश्चित नियमों के आधार पर ही निर्धारित कर वसूल करने का आदेश था, परन्तु वह हमेशा अधिक कर वसूल कर लेते थे।[41]

भूराजस्व प्रशासन की प्रमुख इकाई ग्राम था। इसमें खेती योग्य भूमि, आबादी, तालाब, बगीचे आदि अन्य सम्मिलित थी।[42] गाँव में माल-गुजारी के प्रशासन से सम्बन्धित दो प्रमुख अधिकारी होते थे– मुकद्दम तथा पटवारी। मुकद्दम गाँव की माल गुजारी वसूल करता था तथा पटवारी गाँव के कृषकों के लगान, लेन–देन बकाया इत्यादि का हिसाब–किताब रखता था।[43] परगने में आमिल , कानूनगो तथा अमीन भू–राजस्व के प्रमुख अधिकारी होते थे। कानूनगों जोत की भूमि, उसमें बोई गयी फसल, पैदावार लगान इत्यादि का हिसाब–किताब रखता था। कानूनगों इस कार्य में उसकी सहायता करता था।

---

41. मोर लैण्ड , दि एग्रेरियन सिस्टम आफ मुस्लिम इण्डिया, पृ0 – 105

42 आइने अकबरी, भाग–2, पृ0: 141, 165, 171 तथा हरिशंकर श्रीवास्तव, पृ0 : 157–58

43. वही, तथा मीराते अहमदी, भाग–3, पृ0–: 170–174

आमिल का कार्य शान्ति स्थापित करना तथा माल गुजारी वसूल करने में अन्य अधिकारियों की सहायता करता था।[44]

सरकार में अमलगुजार मालगुजारी वसूल करने वाला प्रमुख अधिकारी होता था।[45] प्रान्त में मालगुजारी का प्रमुख अधिकारी प्रान्तीय दीवान होता था। इसके ऊपर – दीवान–ए–आला था जो केन्द्रीय शासन का मंत्री था तथा मुगल साम्राज्य का सर्वोच्च राजस्व अधिकारी होता था।[46] मुगल साम्राज्य में माल गुजारी अधिकतर नगद के रूप में ली जाती थी परन्तु कुछ क्षेत्रों में जैसे काश्मीर में नस्क प्रणाली (नस्क – ए– गल्ला बख्शी) के आधार पर गल्ले के रूप में माल गुजारी वसूल की जाती थी।[47]

---

44. अकबरनामा, भाग–2 व 3, पृ0: 457–59
45. मीराते अहमदी, भाग–3, पृ0: 170–72 तथा आइने अकबरी, भाग–2, पृ0: 141, 165, 171
46. आइने अकबरी, भाग–2, पृ0–53 तथा हरिशंकर श्रीवास्तव, पृ0–158
47. हरिशंकर श्रीवास्तव, पृ0–154

कल कारखाना :

तत्कालीन काबुल में धीरे – धीरे कल – कारखानों की स्थापना भी हो चुकी थी। 16वीं शताब्दी तक इस सूबे के विभिन्न क्षेत्रों में कई कारखाने अपने उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हो चुके थे।[48]

काबुल में निर्मित कमखाब विलायती रेशमी कपड़ों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता था। अकबर के शासन काल में इसकी कीमत 1 मोहर से पांच मोहर प्रति थान होती थी।[49] अन्य रेशमी वस्त्रों में मखमल हेरवी तथा कतीफा पूर्वी (मशहद का बना हुआ) शामिल था।

जरबफात फिरंगी नामक मलमल का उत्पादन खुरासान प्रांत में होता था। जिसकी प्रति थान कीमत 10 से 70 प्रति मोहर होती थी।[50]

---

48. आइने अकबरी, पृ0–94
49. वही, पृ0 : 93–94
50. वही

हेरात की बनी हुई हेरावी मखमल भी काफी प्रसिद्ध थी।[51]

कश्मीर में बनी हुई शालें लोगों के बीच काफी प्रचलित थी। अकबर के शासन काल में कश्मीर में शाल बुनने का उद्योग काफी उन्नति कर चुका था।[52]

शस्त्रों का निर्माण एवं उनकी बिक्री काबुल सूबे में व्यापक स्तर पर होती थी। बाबर के शासन काल में काबुल में बनी हुई तोपें काफी प्रचलित थी तथा बाबर ने उनका इस्तेमाल हिन्दुस्तान पर आक्रमण के समय व्यापक रूप से किया था।[53]

---

51. आइने अकबरी, पृ0 : 93–94
52. वही, पृ0: 92–93
53. बाबरनामा, पृ0 – 146

काबुल क्षेत्र में बनने वाले शस्त्रों में बन्दूकें तथा अन्य कई शास्त्र शामिल थे जिनका मूल्य अकबर के शासन काल में निर्धारित कर दिया गया था।[54]

मध्य युग में कारखाना शब्द वस्तुओं के निर्माण के संगठनों के अतिरिक्त राजसी प्रतिष्ठानों के लिए प्रयुक्त होता था। उस काल में फीलखाना (हाथी) अस्तबल खाना (घोड़ों के लिए) गोखाना (गायों के लिए), पालकी खाना, फर्श खाना (कारपेट) नक्कार खाना, रथ खाना, तोपखाना, बावर्ची खाना, अबदार खाना इत्यादि कारखाने होते थे। इसके अतिरिक्त ऐसे कारखाने भी होते थे जिसमें सम्राट शाही परिवार की आवश्यकता की वस्तुएं तैयार की जाती थी। ऐसे कारखाने जिनमें भिन्न – भिन्न गाड़ियाँ, अस्त्र – शस्त्र, हल्की पालकियाँ, सोना – चाँदी के बर्तन, शाल, पगड़िया, दवाएँ इत्यादि का निर्माण होता था, काबुल तथा अन्य प्रमुख नगरों में फैले हुए थे। इन कारखानों में तैयार की हुई वस्तुएं प्रयोग में भी आती थी एवं इन वस्तुओं को बेंच भी दिया जाता था।[55]

---

54. आइने अकबरी, पृ0 : 106–110

55 यदुनाथ सरकार, मुगल एडमिनिस्ट्रेशन, पृ0: 187–98 तथा ए0एल0 श्रीवास्तव, अकबर दि ग्रेट, भाग–2, पृ0: 99–100

राज्य में होने वाले आन्तरिक तथा वाह्य व्यापार से सरकार कई तरह के कर वसूल करती थी। चुँगी राज्य की आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत था।[56]

विदेशों से आने वाली या भेजी जाने वाली वस्तुओं पर सीमा पर चुंगी लगती थी। समुद्र मार्ग से आने वाले सामानों पर बंदरगाहों पर चुँगी वसूल की जाती थी। इन बन्दरगाहों से सीमा शुल्क के रूप में अच्छा धन राज्य को मिल जाता था।[57] राज्य में भिन्न – भिन्न वस्तुओं पर अलग–अलग कर लगाया जाता था तथा बाजार के माल की बिक्री पर अलग कर भी देना पड़ता था।[58]

---

56. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0 – 137
57. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0 – 137
58. वही, पृ0 : 137–38

बाबर ने अपने शासन काल में काबुल से चाँदी का "शाहरूख" नाम का एक सिक्का चलवाया।[59] कांधार से उसने "बाबरी" नाम का सिक्का चलाया था।[60] उसके चाँदी के सिक्कों पर सीधी तरफ कलमा और चारों खलीफाओं का नाम तथा दूसरी तरफ बाबर की उपाधि अंकित थी। हुमायूँ के सिक्के बाबर के सिक्के के समान थे। परन्तु उसमें बाबर की जगह हुमायूँ की उपाधि अंकित रहती थी।[61]

अकबर ने अपने शासन काल में सोने, चाँदी एवं ताँबे के सिक्के चलाए। अकबर काल में ताँबे का सिक्का "दाम" कहलाता था। सोने के सिक्के प्रारम्भ में अनेक स्थानों पर ढाले जाते थे। परन्तु बाद में केवल चार स्थानों

---

59. बाबरनामा, पृ0–161 तथा परमेश्वरी लाल गुप्ता, "क्वायंस", पृ0 : 94–95

60. वही, पृ0–141 तथा परमेश्वरी लाल गुप्ता, "क्वायंस", पृ0: 94–95

61. हुमायूँनामा, पृ0–528 (उद्धृत रिजवी मुगल कालीन भारत, हुमायूँ भाग–1) तथा परमेश्वरी लाल गुप्ता, "क्वायंस", पृ0: 94–95

में ही ढाले जाते थे। काबुल, फतेहपुर सीकरी, अहमदाबाद तथा बंगाल[62] चाँदी और तॉबे के सिक्के इन चार स्थानों के अतिरिक्त और दस अन्य नगरों में ढाले जाते थे।

जहाँगीर ने भी अपने शासन काल में अनेक सिक्के चलवाए जो अकबर कालीन सिक्कों के आधार पर है। उसने नूर अफशां तथा खैर काबुल नाम के नए सिक्के चलवाए।[63]

शाहजहाँ तथा औरंगजेब के शासन काल में भी अनेक सिक्कों का प्रचलन था। टकसाल से राज्य को बट्टा (डिसकाउंट) भी प्राप्त होता था। लोग चाँदी सोना देकर राज टकसाल से सिक्के प्राप्त करते थे। पुराने सिक्के घिस जाने से उनका मूल्य कम हो जाता था। इसके बदलने में राज्य

---

62. आइने अकबरी, पृ0-41 तथा हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0-171

63. हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0-171

को लाभ होता था।[64]

मुगल काल में सिक्कों की ढलाई स्वतन्त्र ढलाई के सिद्धान्त पर आधारित होती थी। मुगल काल की टकसालें देश के विभिन्न भागों में फैली हुई थीं। काबुल तथा कश्मीर में भी प्रमुख टकसालें थी।[65]

बाबर के शासन काल में हिन्दुस्तान अभियान का आधार रहा काबुल अकबर के शासन काल के मध्य तक एक समृद्ध सूबे के रूप में परिवर्तित हो चुका था। अकबर की प्रशासनिक व्यवस्था तथा भू-राजस्व सुधारों ने भावी मुगल सम्राटों के लिए एक ऐसी जमीन तैयार कर दी थी जिसका अनुसरण आगे के शासकों तक ही नहीं वरन् आज तक किया जाता है।

---

64. आइने अकबरी, पृ0: 29-30 तथा हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0-136

65. वही, पृ0: 38-41 तथा हरिशंकर श्रीवास्तव, मुगल शासन प्रणाली, पृ0 - 172

काबुल सूबा गठित होने के बाद विकास की गति पर निरन्तर आगे बढ़ा और जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासन काल तक एक ऐसे समृद्ध सूबे के रूप में विकसित हुआ जहाँ व्यापार-विनिमय, कल-कारखाने, शाही टकसालें तथा कृषि आधारित सुव्यवस्थित व्यवसाय स्थापित हो चुका था।

काबुल सूबे की आय तथा व्यय का सामंजस्य इस काल में बखूबी देखने को मिलता है।

सम्भवतः मुगल शासन प्रणाली की एक मिशाल के रूप में सूबा गठित होने के बाद काबुल स्थापित हो चुका था। जिसमें काबुल सूबे की आर्थिक संप्रभुता तो थी ही साथ ही उसके अस्तित्व के लिए वहाँ के व्यवसाय तथा विनिमय एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे।

काबुल में स्थापित मण्डियों तथा वहाँ से पैदा होने वाले फल मेवे तथा मसाले हिन्दुस्तान के अन्य भागों तक भेजे जाते थे तथा यह काबुल के आय के स्रोत का एक प्रमुख माध्यम भी थे। कृषि आधारित फसलों के

अभाव के बावजूद वहाँ व्यापार तथा विनिमय बखूबी चल रहा था तथा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से वहाँ की आर्थिक स्थिति कृषि आधारित ही थी।

आर्थिक रूप से सम्पन्नता के बावजूद काबुल सूबे में असीम संभावनाएं थी तथा वहाँ के शासक नित्य नयी नयी सम्भावनाओं को तलाशने तथा राज्य की आय वृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे।

***

****

उ प सं हा र

****

उपसंहार

मुगलों के आधीन काबुल का सूबा (1556 – 1707 ई0) विषयक इस शोध प्रबन्ध में क्रमवार सूबा गठित होने से पूर्व की स्थिति, सूबा गठन तथा अकबर के बाद के शासकों के शासन काल में काबुल सूबे की स्थिति, काबुल की सामाजिक व्यवस्था, रहन–सहन तथा काबुल की आर्थिक पक्ष की समीक्षा की गयी है।

प्रथम अध्याय **भौगोलिक तथा ऐतिहासिक पृष्ठभूमि** में काबुल सूबा पुर्नगठित होने से पूर्व बाबर तथा हुमायूँ के शासन काल का विवरण प्रस्तुत किया गया है। भौगोलिक तथा सामयिक दृष्टि से काबुल सूबे का गठन एक प्रमुख आवश्यकता थी। परन्तु बाबर तथा हुमायूँ के शासन काल में यह दोनों शासक हिन्दुस्तान में अपने आपको कभी भी स्थिर महसूस नहीं कर सके। परिणामस्वरूप उन्होंने इस प्रशासनिक व्यवस्था को सम्पन्न करने में अपना समय व्यतीत नहीं कर पाये । उनकी इस कमी को बाद में 1580 ई0 में अकबर ने किया।

मुगलों का पैतृक स्थान होने के कारण काबुल की सांस्कृतिक सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक गतिविधियाँ सदैव हिन्दुस्तान को प्रभावित करती रहीं। अपनी आत्म कथा "बाबरनामा" में मुगल शासक बाबर ने काबुल के महत्व को उल्लिखित किया है। बाबर ने लिखा है कि हिन्दुस्तान और खुरासान के बीच दो बन्दरगाह थे। जिनमें एक काबुल तथा दूसरा कान्धार था।

बाबर के अनुसार काबुल एक मजबूत प्रदेश था और सैनिक दृष्टि से सुरक्षित होने के कारण बाबर ने काबुल को अपने अभियानों के संचालन का केन्द्र बिन्दु बनाया था। हिन्दुस्तान पर दृष्टि होने के कारण काबुल में बाबर की मजबूती महत्वपूर्ण तो थी ही, साथ ही भौगोलिक दृष्टि से आवश्यक भी थी।

अपने आत्मकथा में बाबर ने काबुल पर नियंत्रण करने से लेकर हिन्दुस्तान में साम्राज्य स्थापना तक का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया है।

भौगोलिक सर्वेक्षण के अन्तर्गत आइने अकबरी तथा बाबर नामा से स्पष्ट होता है कि काबुल 14 प्रदेशों में विभाजित था जिसे तूमान कहा

जाता था। समरकन्द, बुखारा और इन प्रदेशों के पड़ोसी स्थान जो एक वड़े जिले अथवा प्रान्त से सम्बद्ध होते थे, तुमान कहलाते थे। अन्दीजान, काशगर और उसके आस-पास के इलाके को मिलाकर उरचिन होता था। हिन्दुस्तान में इसे परगना कहा जाता था।

प्रथम अध्याय के विश्लेषण के समय इस बात की तरफ विशेष ध्यान देना आवश्यक है कि मुगलों के लिए काबुल की राजनीतिक महत्ता क्या थी ? वास्तव में मुगलों के लिए काबुल राजनीतिक दृष्टि से अपनी महत्वाकांक्षी की पूर्ति का केन्द्र बिन्दु था। काबुल की राजनीतिक महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि हुमायूँ के निर्वसन काल में तथा उससे पूर्व तथा बाद में भी उसका काबुल में बिधिवत हस्तक्षेप बरकरार रहा तथा समय समय पर काबुल नियंत्रित करने के लिए उसने कई अभियानों का संचालन भी किया।

अकबर की बाल्यावस्था का काफी समय काबुल में गुजरा था। इसलिए काबुल के प्रति अकबर की विशेष रूचि स्वाभाविक थी। सम्भवतः

अकबर हिन्दुस्तान की सरजमी पर शासन करते हुए काबुल पर अपनी दृष्टि रखना चाहता था इसीलिए सूबा गठन के प्रारम्भिक चरण में गठित होने वाले सूबों में काबुल भी शामिल था। आर्थिक दृष्टि से भी काबुल हिन्दुस्तानियों के लिए एक बड़ा बाजार था।

प्रथम अध्याय में ही काबुल की भौगोलिक एवं प्राकृतिक स्थिति का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है। काबुल एक छोटा राज्य था तथा इसका विस्तार पूर्व से पश्चिम की ओर था। राज्य चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ था। पहाड़ पर बागों की अधिकता थी।

काबुल शहर के दक्षिण और शाह काबुल के पूर्व में एक प्रसिद्ध विशाल तालाब था तथा नगर की तरफ पहाड़ पर तीन छोटे-छोटे झरने थे। एक झरने के ऊपर ख्वाजा शमसुद्दीन का मकबरा तथा दूसरे पर ख्वाजा पैगम्बर की कदमगाह थी। काबुल निवासी मनोरंजन एवं भ्रमण के लिए वहाँ जाते थे।

काबुल के पूर्व में लमगानात था उसमें पांच तूमान और दो बुलूक थे। सबसे बड़ा तूमान नीनगनहार था। काबुल से नीनगनहार की ओर चलते

ही बादाम चस्मा नामक दर्रे को पार करना पड़ता था और यहीं से जलवायु परिवर्तित होने का ज्ञान भी होता था। वहाँ के वृक्ष पौधे एवं मनुष्य सभी उस नये जीवन का आभास कराते थे। यहाँ चावल और अनाज की अच्छी पैदावार होती थी। यहाँ का सन्तरा, चकोतरे तथा अनार भी काफी मशहूर थे।

नीनगनहार के दक्षिण में सफेद पहाड़ था। यह नीनगनहार तथा बंगश को एक दूसरे से विभाजित करता था। अजनापुर से दक्षिण की तरफ सूर्खरूद नदी बहती थी इसके उत्तर में पहाड़ी के टुकड़े थे। काबुल से लमगानात जाने के लिए कुरूक सांई की तरफ से दीरी दर्रे से होकर गुजरना पड़ता था। दूसरा रास्ता करातू से होकर कुरूक सांई के नीचे बारान नदी को उलूगनूर पर काटता था।

दूसरा क्षेत्र चगान सराय था। यह कफिरिस्तान के ठीक सामने था। निज्र अऊ एक अन्य प्रदेश था यह काबुल के उत्तर की तरफ पहाड़ी क्षेत्र थे। कफिरिस्तान के रास्ते में पड़ने वाला एक अन्य प्रदेश पंजहीर था।

गूरबन्द नामक एक और प्रदेश था। पमगान नामक एक स्थान अपनी उत्तमता के लिए चर्चित था इसकी पहाड़ियां हमेशा बर्फ से ढकी रहती थीं। लुहूगर नामक एक प्रदेश भी काबुल में था।

गजनी काबुल राज्य का एक अभिन्न अंग था। इसके अतिरिक्त काबुल से दक्षिण की तरफ जुरमुत नामक प्रदेश स्थित था। फरमूल नाम का एक प्रदेश काबुल के अधीन था। बंगश काबुल के प्रदेशों में एक था। काबुल के पश्चिम में जिन्दाल घाटी गरजवान सुफ घाटी तथा गर्जिस्तान घाटियाँ थी। गूर, कसूद और हजारा के पर्वत लगभग एक तरह के होते थे।

इस प्रकार काबुल का भौगोलिक क्षेत्र विभिन्नताओं से भरा हुआ था।

इस अध्याय में काबुल की राजनीतिक विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। 1504 ई0 में बाबर ने काबुल और गजनी पर अधिकार कर लिया तथा हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने की तैयारी करने लगा था। 1508 ई0 में हुमायूँ का काबुल में जन्म हुआ। 1519 ई0 में वह किलये जफर तथा

बदख्शाँ राज्यों का गवर्नर नियुक्त हुआ।

1526 ई0 में हिन्दुस्तान पर अधिकार करने तक काबुल बाबर की कर्मभूमि रहा। 1530 ई0 में बाबर की मृत्यु के बाद हुमायूँ शासक बना। उसने काबुल तथा लाहौर अपने भाई मिर्जा कामरान के अधीन किया। इसके बाद काबुल कभी कामरान तो कभी अस्करी के द्वारा शासित होता रहा। कामरान की महत्वाकांक्षाएं बार–बार उसे विद्रोह करने के लिए प्रेरित करती रहीं और हुमायूँ के लिए वह काबुल में रहकर निरन्तर समस्या बना रहा।

शेरशाह सूरी ने जब हुमायूँ को हिन्दुस्तान की सत्ता से बेदखल कर दिया था तब वह काबुल की तरफ गया। जहाँ 15 अक्टूबर 1542 ई0 में अकबर का जन्म हुआ। 1543 ई0 में हुमायूँ ने कान्धार की ओर प्रस्थान किया। यह कामरान को अच्छा नहीं लगा और कामरान ने उसे रोकने का प्रयास किया। इस दौरान हुमायूँ स्वयं तो बच निकला परन्तु अपने एक वर्षीय पुत्र अकबर को उसे वहीं छोड़ना पड़ा।

1544 ई0 में हुमायूँ ने फारस के शाह की मदद से कान्धार पर अधिकार कर लिया तथा काबुल की ओर रुख किया। शीघ्र ही काबुल उसके अधिकार में आ गया और 1544 ई0 में वह अपने बेटे से मिल सका। कामरान पहले गजनी फिर सिन्धु चला गया।

कान्धार पर नियंत्रण होने के बाद ही हुमायूँ को अफगानिस्तान में पैर जमाने की जगह मिल गयी थी। यद्यपि 1546 ई0 में कामरान ने फिर काबुल को घेरा परन्तु हुमायूँ ने पुनः 1547 ई0 में काबुल पर अपना अधिकार कर लिया। 1549 ई0 में हुमायूँ ने कामरान को क्षमा कर उसे ऑक्सस का गर्वनर बनाया। परन्तु कामरान ने पुनः विश्वासघात कर काबुल अपने कब्जे में कर लिया। नवम्बर 1551 ई0 में हुमायूँ ने हिन्दाल की मृत्यु के बाद गजनी की सूबेदारी अकबर को सौंपी। 1554 ई0 में जब हुमायूँ दोबारा हिन्दुस्तान की ओर चला तो अकबर गजनी का गर्वनर था। हिन्दुस्तान पर पुर्नविजय के कुछ समय पश्चात ही हुमायूँ की मृत्यु हो गयी और अकबर हिन्दुस्तान का शासक बना।

अकबर ने काफी समय काबुल में गुजारा था और गजनी का सूबेदार रहते हुए वह वहाँ की परिस्थितियों से भलीभाँति परिचित था। इसलिए

काबुल पर उसकी विशेष दृष्टि थी। काबुल का क्षेत्र उसने अपने सौतेले भाई मिर्जा हाकिम के आधिपत्य में दिया था। जिसने काबुल में स्वयं को स्वतन्त्र घोषित कर दिया था। लगभग 1580 ई0 तक अकबर विभिन्न क्षेत्रों में हो रहे विद्रोहों से निपटने के लिए एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भागता रहा। वास्तव में यह समय अकबर के लिए बहुत संकट पूर्ण था।

1580 ई0 में अपनी बुद्धि तथा विवेक से समस्याओं पर नियंत्रण पाने के बाद अकबर ने शक्तियों के विकेन्द्रीकरण की योजना को अमल में लाना शुरू किया तथा सूबे के गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ की। इसी योजना के अन्तर्गत शुरू में गठित किये गये सूबों में काबुल भी एक पुर्नगठित सूबा था। दूर-दराज के क्षेत्रों में नियंत्रण रखने की अकबर की इस नीति ने उसे काफी शक्ति प्रदान की।

इस प्रकार 1581 ई0 में पुर्नगठन की प्रक्रिया से गुजरते हुए काबुल सूबा नये स्वरूप में सामने आ गया था।

शोध प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय काबुल सूबे के पुर्नगठन, वहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था तथा राजनैतिक सन्तुलन स्थापित करने की प्रक्रिया का विवरण प्रस्तुत करता है।

अकबर के शासन काल में प्रशासनिक पुर्नगठन की प्रक्रिया सुव्यवस्थित स्वरूप में पूर्ण की गयी तथा सूबों का गठन कर उसमें प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति की गयी। प्रशासनिक, राजनैतिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही अकबर ने काबुल सूबे का गठन किया।

1602 ई0 तक 15 सूबों का गठन कर उसमें एक सी प्रशासनिक व्यवस्था लागू कर दी गयी थी। इसमें काबुल सूबा प्रमुख रूप से शामिल था। इस समय तक काश्मीर और कान्धार काबुल के अधीन सरकारों के रूप में शामिल थे। 1581 ई0 में अकबर ने काबुल के विद्रोही शासक को पराजित कर उसकी बहन बख्तुनिशा बेगम को वहाँ का गर्वनर नियुक्त किया। यद्यपि अकबर के लौटने के बाद मिर्जा हकीम पुनः वहाँ की सत्ता अपने हाथ में ले ली थी। 1581 ई0 में हकीम की मृत्यु के बाद काबुल पूरी तरह से मुगल साम्राज्य का अभिन्न अंग बन गया था और प्रान्तीय इकाई के रूप में

संगठित होने की प्रक्रिया में शामिल हो गया था।

अकबर ने काबुल सूबे की व्यवस्था के लिए अधिकारियों का वर्गीकरण किया तथा योग्यता अनुसार उन्हें पद एवं वेतन देने की व्यवस्था सुनिश्चित की।

सूबे का प्रमुख सिपहसलार था जिसके अधीन एक बड़ी सेना रखी थी। इसे सूबेदार भी कहा जाता था। यहाँ सूबे में सम्राट का नुमाइन्दा होता था। अपने सूबे में शान्ति व्यवस्था बनाये रखना तथा सूबे की जनता के हित की रक्षा करना उसका प्रमुख कर्तव्य था। प्रान्त की पुलिस तथा गुप्तचर व्यवस्था भी उसी के अधीन थी।

आमतौर पर सूबेदार एक सैन्य अधिकारी होता था। अकबर के शासन काल में कई हिन्दू सूबेदारों की नियुक्ति काबुल में की गयी थी। सूबेदार के बाद सूबे में प्रान्तीय दीवान का पद सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। इसकी नियुक्ति केन्द्रीय दीवान की संस्तुति पर होती थी। यह प्रान्त के वित्त सम्बन्धी मामलों का प्रमुख होता था। वास्तव में यह सूबेदार के अधीन न होकर उसके

समकक्ष था। इस प्रकार शक्ति एवं संतुलन के सिद्धान्त के अनुसार दो प्रशासनिक पद की व्यवस्था काबुल सूबे में स्थापित थी। सूबेदार और दीवान एक दूसरे पर नजर रखते थे तथा कोई भी एक व्यक्ति स्वयं को अत्यधिक शक्तिशाली नहीं महसूस कर सकता था।

मालगुजारी एकत्र करने का दायित्व दीवान का था वह प्रान्त के आय - व्यय का लेखा जोखा रखता था। प्रान्तीय अधिकारियों का वेतन वितरण प्रान्तीय दीवान के द्वारा ही किया जाता था। सरकारी खजाने पर उसकी पूरी निगरानी होती थी तथा समय-समय पर वह केन्द्रीय दीवान को सूचनाएं प्रेषित करता था। सूबेदार, फौज, पुलिस तथा प्रशासनिक सेवाओं का अध्यक्ष था तो दीवान दीवानी तथा कर विभाग का दायित्व संभालता था।

प्रान्तीय अधिकारियों में प्रान्तीय बक्शी का पद भी बहुत महत्वपूर्ण था। राज्य में शान्ति व्यवस्था स्थापित करने में वह सूबेदार की मदद करता था। मंसबदारों की मृत्यु होने पर उनकी जागीरें अपने अधिकार में लेने का कर्तव्य प्रान्तीय बक्शी का था। इसकी नियुक्ति मीर बक्शी की सिफारिश पर की जाती थी। तथा यह सूबेदार के अधीन कार्य करता था। सेना की भर्ती करा उसका संगठन सुव्यवस्थित करना,उस पर नियंत्रण रखना तथा उसके कार्यो को सम्पादित

करना उसका प्रमुख दायित्व था।

अन्य प्रान्तों की भाँति काबुल में भी सदर तथा काजी का पद एक ही था तथा इन दोनों कार्यों का सम्पादन एक ही अधिकारी द्वारा किया जाता था। काजी प्रान्त के न्याय विभाग का अध्यक्ष था वह जिलों तथा कस्बों में नियुक्त काजियों के कार्य का निरीक्षण भी करता था।

सूबे में प्रमुख स्थानों का संवाद लेखकों तथा गुप्तचरों की नियुक्ति का काम वाक्यानवीस का था। कभी-कभी यह कार्य बक्शी को करना पड़ता था। गुप्तचरों द्वारा दी गयी रिपोर्ट प्रतिदिन उसे शाही दरबार में प्रेषित करना पड़ता था। कभी-कभी शाही दरबार अपने संवाद लेखकों तथा गुप्तचरों को सूबे में नियुक्त करता था।

कोतवाल सूबे की आन्तरिक सुरक्षा, शान्ति व्यवस्था, स्वास्थ्य तथा सफाई व्यवस्था के लिए उत्तरदायी था। उसके अधीन बहुत से कर्मचारी काम करते थे। प्रान्त के थानों की देखरेख तथा उसकी व्यवस्था सुनिश्चित करना उसका प्रमुख कर्तव्य था।

सूबे में उपलब्ध पुलों, नावों तथा बन्दरगाहों से चुंगी वसूल करने का दायित्व प्रान्त के मीर बहर का था। यह बन्दरगाहों पर कर वसूली की व्यवस्था सुनिश्चित करता था। नदियों पर स्थायी पुलों का निर्माण कराना भी उसका दायित्व था, सार्वजनिक निर्माणों का वह नियोजक था।

शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में सूबे में गठित प्रशासनिक व्यवस्था की कड़ियों का भी उल्लेख किया गया है। वास्तव में सूबा प्रशासन कई छोटी-छोटी इकाइयों में विभक्त था। प्रान्तीय व्यवस्था के अन्तर्गत जिले थे, जिलों के अधीन परगने थे। परगना निम्नतम प्रशासनिक तथा वित्तीय इकाई थी। नगरीय व्यवस्था म्युनिसिपल प्रशासन के अधीन थी। जबकि ग्राम प्रशासनिक सूबे की सबसे छोटी इकाई थी।

कई परगनों को मिलाकर जिला होता था। तत्कालीन काल में काबुल सूबा कई जिलों में बंटा हुआ था। जिलों को सरकारें भी कहा जाता था। तथा यह प्रान्तीय व्यवस्था की दूसरी इकाई थे। प्रत्येक जिले में एक फौजदार अमल गुजःर, काकी, कोतवाल, वितिक्ची तथा खजानदार होता था। जिले का प्रमुख फौजदार था। वह एक सैनिक अधिकारी होता था। जिले की शान्ति

एवं कानून व्यवस्था बनाये रखना उसका प्रमुख उत्तरदायित्व था। उसके अधीन एक छोटी सी सैन्य टुकड़ी भी कार्य करती थी।

जिले में माल गुजारी वसूल करने का प्रमुख कार्य अमल गुजार के अधीन था। इसकी सहायता के लिए कई कर्मचारियों की नियुक्ति होती थी। कृषकों को कर्ज बाँटने तथा उसकी वसूली करने का कार्य भी अमल गुजार का ही था। जिले के खजांची के कार्यो का निरीक्षण भी उसे ही करना पड़ता था। जिले की आय का मासिक व्यौरा तैयार कर उसे दरबार में प्रस्तुत करना पड़ता था। जिले की आय नियमित रूप से शाही खजाने में जमा कराना भी उसका उत्तरदायित्व था।

अमल गुजारों के विशिष्ट सहायकों में वितिक्ची शामिल था। माल गुजारी सम्बन्धी मामलों में अमल गुजार के बाद इसी का स्थान था। जमीन की किस्म तथा उस पर होने वाली पैदावार सम्बन्धी आकड़े बितिक्ची को ही तैयार करना पड़ता था। इसी आधार पर काश्तकारों से मालगुजारी वसूल की की जाती थी। काश्तकारों को मालगुजारी की रसीद देना भी बितिक्ची का ही कार्य था।

अमल गुजार के साथ काम करने वाला दूसरा अधिकारी खजानदार (खजांची) होता था। उसका प्रमुख कार्य सरकारी आय को संभालना तथा उसे शाही खजाने तक भेजना होता था। खजाने की एक चाभी उसके पास होती थी। जबकि दूसरी अमल गुजार के नियंत्रण में रहती थी। सूबे में कुछ स्थानों पर अन्य प्रशासनिक दल तैनात होते थे। इनके अन्तर्गत बन्दरगाह, सीमान्त चौकियां, किले तथा थाने सम्मिलित होते थे।

जिलों के नीचे अगली प्रशासनिक इकाई परगना थी। प्रत्येक परगने में चार प्रमुख अधिकारी तैनात किये जाते थे। परगने का प्रमुख अधिकारी शिकदार था। इसके अतिरिक्त आमिल, फोतदार तथा कारकुन होते थे। शिकदार परगने का प्रमुख प्रबन्ध अधिकारी था। परगने का सामान्य प्रशासन भी उसी के अधीन था। वह काश्तकारों द्वारा दी गयी माल गुजारी को संभाल कर रखता था तथा खजाने के कर्मचारियों की निगरानी भी उसी का उत्तरदायी था।

परगनों में कर निर्धारण तथा माल गुजारी एकत्र करने का प्रमुख दायित्व आमिल का था। वह काश्तकारों से सीधा सम्बन्ध रखता था। परगने की शान्ति व्यवस्था बनाये रखने में वह शिकदार की मदद करता था।

फोतदार परगने का खजांची होता था। सरकारी आय खजाने तक पहुंचाने का दायित्व इसी का था।

कारकून क्लर्क था, उसे उत्पादन योग्य भूमि का निर्धारण करना फसलों का निर्धारण तथा काश्तकार से मालगुजारी वसूल करने का हिसाब किताब रखना पड़ता था।

परगने भर के पटवारियों का अफसर कानूनगो होता था। परगने की पैदावार तथा मालगुजारी आदि का विवरण उसके पास रहता था। उसे बन्दोबस्त के प्रकारों, जमीन के वर्गो तथा लगान सम्बन्धी बातों की जानकारी रखनी पड़ती थी। वह एक प्रतिशत कमीशन पर काम करता था। बाद में अकबर ने उसका वेतन निर्धारित कर दिया था।

ग्राम प्रशासन प्रान्तीय शासन तंत्र की सबसे छोटी इकाई थी। अकबर के शासनकाल में ग्राम प्रशासन एक बड़ी वैधानिक उपलब्धि थी। इस काल में काबुल के गाँवों में ग्राम पंचायतों का गठन हो चुका था तथा ग्राम पंचायतों को वैधानिक रूप से न्याय करने की स्वतन्त्रता थी। पटवारी तथा चौकीदारी परगने की सरकारी के सम्पर्क में रहते थे। ग्राम पंचायतों का मुखिया

गांव में रहने वाले परिवारों के सदस्यों में से होता था। यह पंचायतें ही गांव की प्रशासनिक व्यवस्था का उत्तरदायित्व संभालती थीं।

सूबे का नगरीय प्रशासन काफी व्यवस्थित था। नगर में एक कोतवाल नियुक्त होता था जो नगर की प्रशासनिक व्यवस्था के साथ साथ सुरक्षा व्यवस्था के प्रति भी उत्तरदायी होता था। कोतवाल की नियुक्ति केन्द्रीय सरकार द्वारा की जाती थी तथा उसके पास प्रत्येक घर का व्यौरा रजिस्टर में अंकित रहता था। कोतवाल के भारी भरकम दायित्वों को देखते हुए उसे कार्य सम्पादन हेतु पुलिस अफसर, गुप्तचर, कलर्क, चपरासी तथा अन्य सहायक कर्मचारियों की नियुक्त करने का अधिकार प्राप्त था।

इस अध्याय में प्रान्तीय शासन पर केन्द्रीय नियंत्रण के सम्बन्ध में भी सूचना प्रस्तुत की गयी है। सूबों के गठन तथा उसमें नयी व्यवस्था लागू करते वक्त अकबर ने इस बात पर विशेष ध्यान रखा कि प्रान्त के अधिकारी एक दूसरे पर निगाह रखें तथा एक दूसरे के लिए अंकुश बने रहें। वास्तव में अकबर की यह नीति थी कि कोई सूबेदार अपने सूबे में किसी शक्तिशाली तथा प्रभावशाली अधिकारी से व्यक्तिगत सम्बन्ध न स्थापित कर सके। यही कारण था कि वह समय-समय पर सूबेदारों तथा अन्य अधिकारियों का

स्थानान्तरण करता रहता था। अकबर के शक्ति संतुलन के सिद्धान्त ने प्रान्तीय अधिकारियों को निरकुंश नहीं होने दिया । सूबेदार तथा दीवान दो ऐसे समकक्ष पद थे जिनमें एक दूसरे पर नजर रखने की व्यवस्था की गयी थी।इस व्यवस्था के तहत दोनों अधिकारी केन्द्रीय सरकार के सामने स्वयं को अच्छा साबित करने के लिए केन्द्र के प्रति सदैव विश्वसनीय बने रहने की कोशिश करते थे। प्रान्तीय बक्शी गुप्तचर विभाग का अधिकारी था तथा उसकी नियुक्ति केन्द्र से होती थी। इस कारण से अन्य अधिकारी उससे सतर्क रहते थे। किसी भी सूबेदार को एक प्रान्त में तीन या चार वर्षों से अधिक नहीं रहने दिया जाता था।

सूबे की स्थिति तथा सूबेदार व अन्य अधिकारियों की गतिविधियों पर निगाह रखने के लिए केन्द्र के स्वतन्त्र गुप्तचर भी नियुक्त किये जाते थे। शिकायत मिलने वाले अधिकारियों की जांच के लिए उच्च अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी।

समय -समय पर मुगल सम्राट स्वयं भी सूबों का दौरा करते थे। यद्यपि अकबर के शासन काल में सूबे दूर-दराज में स्थित थे फिर भी

अकबर ने अंकुश लगाने तथा संतुलन बनाये रखने की जो नीति बनायी थी उस पर वह सतर्क नियंत्रण रखता था। प्रान्तीय शासन व्यवस्था के सुगम एवं सफल संचालन में काबुल की शासन व्यवस्था एक उदाहरण थी।

अकबर के शासन काल में नियुक्त सूबेदार तथा अन्य अधिकारियों का विवरण भी इस अध्याय में दिया गया है। हिन्दू सूबेदारों की काबुल में नियुक्ति अकबर की नीति का एक हिस्सा थी। 1585 ई0 में राजा मानसिंह को काबुल का शासक नियुक्त किया गया था। यह 1587 ई0 तक इस पद पर रहे। राजा भगवान दास अकबर के शासन के 30वें वर्ष में काबुल के सूबेदार नियुक्त हुए। 1594 ई0 में कुलीज खाँ तथा 1597 में जैन खाँ काबुल का सूबेदार नियुक्त हुआ।

अकबर के शासन के 40वें वर्ष में एतमादुदौला मिर्जा गियास बेग तेहरानी काबुल का दीवान नियुक्त किया गया था। शासन के 43वें वर्ष में राजा विक्रमाजीत काबुल का दीवान नियुक्त हुआ।

शोध प्रबन्ध का तृतीय अध्याय पुर्नगठन के पश्चात जहाँगीर, शाहजहाँ तथा औरंगजेब के शासन काल में काबुल सूबे का विवरण प्रस्तुत करता है।

अकबर के काल में गठित सूबों की प्रशासनिक व्यवस्था ने उसके उत्तराधिकारियों को एक ऐसा आधार दिया जिस पर उसके उत्तराधिकारियों ने निश्चिन्त होकर शासन किया। आगामी लगभग 150 वर्षों तक इस प्रशासनिक व्यवस्था के मूल स्वरूप में परिवर्तन करने की आवश्यकता नहीं हुई तथा प्रान्तों पर नियंत्रण रखने की नीति ने मुगलों को लम्बे समय तक एक बड़े क्षेत्र पर शासन करने का अवसर प्रदान किया।

यद्यपि जहाँगीर के शासन काल से लेकर औरंगजेब के शासन काल तक काबुल में राजनीतिक हलचलें जारी रहीं तथा समय–समय पर मुगल शासकों को विद्रोहों का सामना करना पड़ा। यदा–कदा सूबे में नियुक्त सूबेदारों ने भी विरोध का झण्डा बुलन्द किया। काबुल सूबे के अन्तर्गत कान्धार का दुर्ग कई कारणों से भारत तथा ईरान के लिए काफी महत्वपूर्ण था। जहाँगीर के शासन काल के प्रथम वर्ष में ही ईरान की ओर से इस पर असफल चढ़ाई

की गयी थी। जहाँगीर के काल में ही काबुल में रोशानियों का विद्रोह निरन्तर उसके लिए समस्या बना रहा। 1617 ई0 में बंगश में विद्रोह हो गया। जहाँगीर ने 1617 ई0 में महावत खानखाना को इस विद्रोह का दमन करने के लिए काबुल का सूबेदार नियुक्त किया। वह इस पद पर आगामी पांच वर्षो तक बना रहा परन्तु उसे कोई विशेष सफलता नहीं प्राप्त हुई। अन्ततः रोशानियों के सरदार की मृत्यु के बाद उसके पुत्र ने जहाँगीर से सन्धि की तब जाकर काबुल प्रान्त को रोशानियों के विद्रोह से मुक्ति मिली परन्तु बंगश का विद्रोह शान्त करना आसान नहीं था।

1619 ई0 में जहाँगीर स्वयं काश्मीर गया और लगभग 7 माह तक वहाँ रूका। इस दौरान शाहजहाँ द्वारा समय-समय पर विद्रोह करने तथा अनावश्यक माँगे रखने से जहाँगीर को काफी क्षति हुई।

1622 ई0 में महावत खाँ को काबुल से हटा दिया गया और जफर खाँ सूबेदार नियुक्त हुआ। इधर फारस के शाह को भी कान्धार ने आकर्षित किया और उसने कान्धार हस्तगत करने की योजना बनायी। जहाँगीर ने कान्धार जाकर शाहजहाँ को इस विद्रोह को कुचलने की आज्ञा दी परन्तु शाहजहाँ

का अड़ियल रवैया उसे पसन्द नहीं आया और उसने उसे वहाँ जाने से मना कर दिया। अन्ततः कान्धार फारस के शाह के हाथ में चला गया। 1627 ई0 में जहाँगीर की मृत्यु हो गयी।

इस अध्याय में जहाँगीर के शासन काल में तैनात प्रमुख सूबेदारों मंसबदारों तथा अन्य अधिकारियों का भी विवरण प्रस्तुत किया गया है। 1617 ई0 में महावत खानखाना काबुल का सूबेदार बना। 1622 ई0 में जफर खाँ नियुक्त हुआ। इसके बाद 1624 ई0 में अबुल हसन तुर्बती काबुल का सूबेदार बना।

जनवरी 1628 ई0 में शाहजहाँ हिन्दुस्तान का शासक बना। शाहजहाँ ने शासक बनते ही काबुल में लश्कर खाँ को सूबेदार नियुक्त किया। शाहजहाँ के शासन काल में काबुल में जगत सिंह की सरगर्मियों ने उसे परेशान किया।

अन्ततः उसे नियंत्रित करने के लिए शाहजहाँ को अपने तीन सेनापतियों की टोली बंगश में भेजनी पड़ी तथा इस अभियान की कमान काबुल

से वापस लौट रहे राजकुमार मुराद को सौंपी गयी। 1641 ई0 में जगत सिंह हतोत्साहित हो गया। 1642 ई0 में उसे क्षमा कर उसका मंसब बहाल कर दिया गया।

1639 ई0 में हजारा कबीलों ने विद्रोह कर दिया। सईद खाँ को इन कबीलों को सबक सिखाने का दायित्व सौंपा गया। हजारा मुखिया ने समर्पण कर दिया और हजारा क्षेत्र शान्त हो गया। कुछ दिनों बाद तूरानी क्षेत्र (मध्य एशिया) अशान्त हो गया। मुगल शासन के प्रतिनिधि इमाम कुली के भाई नज्र मोहम्मद ने इमाम कुली के लिए समस्या खड़ी कर दी और उसे पद से हटना पड़ा। कई अभियानों एवं प्रयासों के बाद अन्ततः 1645 ई0 में नज्र मोहम्मद को नियंत्रित किया जा सका।

कुछ दिन के पश्चात नज्र मोहम्मद की पुनः सक्रियता ने शाहजहाँ के लिए चुनौती खड़ी कर दी। इस बार शाहजहाँ ने राजकुमार मुराद को 50000 सवार तथा 10000 पैदल सैनिकों के साथ काबुल रवाना किया गया। परन्तु राजकुमार मुराद की इस अभियान के प्रति निष्क्रियता ने शाहजहाँ को सदुल्ला खाँ को काबुल भेजने के लिए मजबूर किया।

1647 ई0 में बल्ख में शान्ति स्थापित करने का भार राजकुमार औरंगजेब को सौंपा गया। औरंगजेब ने सर्वप्रथम तूरान में अपनी स्थिति सुदृढ़ कर चुके अब्दुल अजीज को सबक सिखाया। नज्र मोहम्मद ने भी शाहजहाँ के पास इस दौरान सन्धि का प्रस्ताव भेजा। वहाँ स्थिति नियंत्रित करने के बाद 1647 ई0 में औरंगजेब वापस आ गया। राज्य के पुर्नाधिकरण के उपरान्त भी नज्र मोहम्मद के पुत्र अब्दुल अजीज ने शाहजहाँ को चैन नहीं लेने दिया। इस प्रकार शाहजहाँ के शासन काल में काबुल सूबे के कई क्षेत्र निरन्तर अशान्त बने रहे।

इस अध्याय में शाहजहाँ के शासन काल में काबुल में नियुक्त प्रमुख सूबेदार व अन्य अधिकारियों का विवरण भी दिया गया है। अजीज उल्ला खाँ, जिसे इज्जत खाँ की पदवी प्राप्त थी। उसे सईद खाँ के साथ कान्धार भेजा गया था। एवज खाँ काकसाल शाहजहाँ के शासन काल में काबुल में नियुक्त एक मंसबदार था। इसे खानाखाना के स्थान पर गजनी का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। आजम खाँ कोका शाहजहाँ के शासन काल में कई वर्षो तक काबुल में नियुक्त रहा। 1637-38 ई0 में सईद खाँ काबुल का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। विट्ठल दास गौड़ भी शाहजहाँ के शासनकाल में काबुल में नियुक्त होने वाले प्रमुख अधिकारी थे।

राजा शिवराम गौरे को बल्ख और बदख्शाँ पर चढ़ाई करने के लिए भेजा गया था तथा बाद में उसे काबुल के किले का रक्षक नियुक्त कर दिया गया था।

1658 ई0 में अपने पिता शाहजहाँ को बन्दी बनाकर औरंगजेब ने हिन्दुस्तान का सत्ता का अधिग्रहण किया। उसके शासनकाल के चौदहवें वर्ष में अफगानिस्तान में अफरीदी नेता सरदार अकलम खाँ ने स्वतन्त्रता घोषित कर दी तथा मुगल सेना को परास्त किया। औरंगजेब ने इस विद्रोह का दमन करने के लिए महावत खाँ को अफगानिस्तान में सूबेदार बनाकर भेजा परन्तु वह भी अफगानों से मिल गया। फिर उसने सुजात खाँ को भेजा। 1674 ई0 में वह भी पराजित हुआ। 1675 ई0 में युगीर खाँ की सक्रिय भागीदारी के बाद विद्रोहियों का दमन हुआ। औरंगजेब ने आमिर खां को काबुल का राज्यपाल नियुक्त किया। वह 1698 ई0 तक काबुल का सूबेदार रहा। 1707 ई0 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल शासक आपसी कलह में इतने उलझे रहे कि वह सूबों पर प्रभावकारी नियंत्रण स्थापित करने में असफल साबित हुए तथा धीरे-धीरे अकबर के शासनकाल में स्थापित की गयी सूबों की व्यवस्था ध्वस्त होने लगी और सूबें स्वतन्त्रता घोषित करने लगे।

औरंगजेब के शासन काल में योग्य तथा वीर मंसबदारों को काबुल में नियुक्त किया गया। आजम खाँ कोका औरंगजेब के शासन काल में काबुल का सूबेदार नियुक्त हुआ। अमीर खाँ खवाफी काबुल का शासक रहा, इसे पाँच हजारी 5000 सवार का मंसब दिया गया था। अली मर्दान खाँ 1698ई0 में काबुल का सूबेदार नियुक्त हुआ। उसे अमीरुल उमरा की पदवी दी गयी थी। अरशद खाँ बहुत दिनों तक काबुल प्रान्त में नियुक्त था तथा यह खालसाक का दीवान बनाया गया था। अगर खाँ पीर मोहम्मद काबुल के सहायकों में शामिल था। अमानत खाँ को काबुल के अहदियों का बक्शी नियुक्त किया गया था।

नवाब समसामुद्दौला शाहनवाज खाँ शहीद ख्वाफी औरंगाबादी औरंगजेब के शासन काल में काबुल तथा काश्मीर में दीवान के पद पर रहा। अब्दुला खाँ काबुल नगर का कोतवाल नियुक्त हुआ था। उसे खाँ की पदवी दी गयी थी।

इस प्रकार अकबर के उत्तराधिकारियों के शासन काल में काबुल निरन्तर विद्रोहों के कारण अशान्त रहा तथा उसे नियंत्रित करने के लिए मुगल शासकों को बार–बार अभियानों का संचालन करना पड़ा।

शोध प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय काबुल का सामाजिक विवरण प्रस्तुत करता है। काबुल का सामाजिक जीवन भी कई वर्गों तथा उपवर्गों में विभक्त था जहाँ शासक ही सर्वोपरि होता था। बाबर ने 1508 ई0 में अपने एक निर्णय के द्वारा शासक को बादशाह कहना प्रारम्भ करवा दिया था।

काबुल का समाज मूलतः मुस्लिम प्रधान समाज था तथा इसमें उच्च वर्गीय, मध्यम वर्गीय तथा निम्न वर्गीय तीनों ही प्रकार की जनता शामिल थी। इस्लामी संस्कृति का तीव्र गति से प्रसार एवं विस्तार में काबुल को भी प्रभावित किया। काबुल का समाज अपनी परम्पराओं तथा विशिष्टताओं के साथ मुस्लिम रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं के साथ स्थापित हो चुका था।

इस काल में काबुल तथा भारत के मध्य गहन सम्बन्ध स्थापित हो रहे थे तथा दोनों एक दूसरे की संस्कृतियों का आदान–प्रदान कर रहे थे। इसलिए भारतीय समाज पर मुस्लिम समुदाय का असर स्पष्ट दिखायी पड़ रहा था। काबुल में मुस्लिम समाज की संरचना अत्यन्त सरल थी। सुल्तान प्रजा का नेता तथा समाज का प्रधान था तथा वही समाज के सामाजिक एवं

सांस्कृतिक आचरण का निर्धारण करता था। काबुल से भारत आये मुसलमानों ने भारतीय समाज में अपना अस्तित्व बनाने के साथ ही भारतीय समाज को काबुल की मुस्लिम संस्कृति के निकट आने का भी अवसर प्रदान किया।

काबुल का समाज वर्गों में विभाजित था। सुल्तान के ठीक बाद अमीरों का वर्ग था, जो शासक के बहुत निकट होता था। तत्कालीन अमीर वर्ग दो वर्गों में विभाजित था। प्रथम – अहले शैफ और द्वितीय अहले कुलम। अहले कुलम में कातिब, कबीर, वजीर आदि पदों पर नियुक्त लोग आते थे। जबकि कुलीन वर्ग (उमरा अथवा खान) अहले शैफ के अन्तर्गत थे। काबुल के अमीर वर्ग में अधिकांश मुगल थे। हामिद मोहम्मद बेग इल्जाई, ख्वाजा हुसैन बेग, शेख मजीद बेग, अली दोस्ततगाई आदि फरगाना में बाबर के पिता के अमीर थे। इनमें से कुछ बाद में काबुल तथा हिन्दुस्तान तक बाबर के साथ आये थे। कुलीन वर्ग शासन में सेनानायकों, प्रशासकों तथा राजकर्ता के रूप में विद्यमान था। ये अमीर तथा सेनानायक के रूप में राज्य की सेवा करते थे।

काबुल की राजसत्ता में "उलेमा" का भी विशिष्ट स्थान था। यह वर्ग मुस्लिम रीति–रिवाजों तथा धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन कराता था।

प्रत्येक मुस्लिम बस्ती में एक इमाम होते थे। चाँद देखने के बाद त्योहारों की घोषणा करना इनका प्रमुख काम था। काबुल के शासन में उलेमाओं को विशिष्ट स्थान प्राप्त था।

कुलीन वर्ग की अन्य जनता जनसाधारण के अन्तर्गत थी। इस काल में काबुल के अधिसंख्य मुसलमानों का मुख्य व्यवसाय कृषि आधारित था। इसके अतिरिक्त शिक्षा तथा धर्म प्रचार करने वाले धर्मशास्त्री, दार्शनिक व चित्रकार मध्यवर्ग में आते थे।

मध्य वर्ग के नीचे मुस्लिम हजाम, दर्जी, धोबी, मल्लाह, बाजे वाले, तमोली, माली, तेली इत्यादि थे। काबुल के समाज में निराश्रितों तथा भिखारियों की भी पर्याप्त संख्या थी।

काबुल की आबादी का एक बड़ा वर्ग गृह सेवकों तथा गुलामों के रूप में भी विद्यमान था। ये सुल्तान, कुलीन तथा सम्पन्न व्यक्तियों के घरों में सेवकों के रूप में नियुक्त होते थे।

इस अध्याय के अन्तर्गत शासक के रहन–सहन का विवरण भी प्रस्तुत किया गया है। काबुल के शासक/ सूबेदार आलीशान रहन–सहन तथा खान–पान के शौकीन थे। उनके वस्त्र कीमती होते थे तथा उनके दरबार की शानो–शौकत भव्य होती थी।

शासक वर्ग के रहन–सहन तथा उसकी दिनचर्या में मुगलों की आन–बान और शान साफ परिलक्षित होती थी। प्रत्येक शासक की अपने वस्त्र, आभूषण एवं श्रृंगार की विशेष शैली थी। शासक/सूबेदार दिन में अलग–अलग समयों में अलग–अलग वस्त्र धारण किया करते थे। रात्रि विश्राम के लिए प्रथक शयन वस्त्र का प्रयोग होता था। सूबे में तैनात अन्य अधिकारी अथवा अमीर वर्ग अपनी स्थिति के अनुसार वेषभूषा धारण करता था।

सूबेदार समय–समय पर गोष्ठियों का आयोजन भी करता था। जिसमें प्रमुख अमीरों की भागीदारी सुनिश्चित की जाती थी। उत्सव अथवा हर्ष के क्षणों में मदिरा गोष्ठियों के आयोजन का भी उल्लेख मिलता है।

शासक /सूबेदार खान-पान तथा भोजन का विशेष शौकीन होता था। काबुल तथा उसके आस-पास के क्षेत्रों में अच्छे किस्म के फल-फूल तथा मसालों के उत्पादन का उल्लेख मिलता है। जो खान-पान में व्यजंनों को लज्जतदार बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

काबुल के सूबेदार शिकार के भी शौकीन थे। काबुल में अकबर तथा उसके बाद के शासकों के शासन काल में हिन्दू सूबेदारों की भी नियुक्ति हुई थी अतः काबुल के रहन-सहन में हिन्दुस्तानी संस्कृति का असर भी दिखलायी पड़ता है।

इस काल में मनाये जाने वाले प्रमुख त्योहारों में नौरोज, ईद-उल-फितर, ईद-उल-जुहा, सबे-बारात, मुहर्रम तथा उर्स शामिल था जो समय-समय पर वर्ष में एक बार मनाया जाता था। इन त्योहारों की घोषणा राज्य के प्रमुख धार्मिक व्यक्ति द्वारा चाँद देखने के बाद की जाती थी।

काबुल के समाज में स्त्रियों की दशा बहुत अच्छी नहीं थी। शासक परिवार की स्त्रियाँ हरम तक सीमित रहती थीं तथा उनकी शिक्षा व्यवस्था हरम में ही सम्पादित होती थी। समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित थी। यद्यपि निम्न

तथा मध्यम वर्ग की महिलाएं जीविकोपार्जन के लिए पर्दा प्रथा का शक्ति से पालन नहीं करती थीं।

काबुल के समाज में वेश्यावृत्ति भी प्रचलित थी। विशिष्ट अवसरों पर मनोरंजन के लिए वेश्याओं तथा नर्तकियों को बुलाया जाता था। कुल मिलाकर स्त्रियों की स्थिति मिली-जुली थी।

तत्कालीन शासकों तथा सूबेदारों में अन्त:पुर स्थापित करने की प्रथा प्रचलित थी जिसमें शासक की रानियाँ तथा उसके परिवार से सम्बन्धित अन्य महिलाएं निवास करती थीं। अन्त:पुर में रहने वाली राज परिवार की स्त्रियों की दशा शासक के साथ उनके सम्बन्धों पर निर्भर होती थी।

काबुल के क्षेत्र में 11 अथवा 12 भाषाएं बोली जाती थी। जिनमें अरबी, फारसी, तुर्की, मुगली, हिन्दी, अफगानी, पासाई, पराजी, गिनरी, बिरकी और लमगानी भाषा शामिल थी। काव्य एवं गद्य के कई रचयिता थे जो दरबार में शासकों के सम्मान में रचनाएं सुनाते थे।

काबुल का तत्कालीन मुस्लिम समाज अनेक रीति-रिवाजों तथा संस्कारों का पालन करता था। बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु तक कई नियमबद्ध संस्कार होते थे। स्त्री के गर्भ धारण के सातवें महीने पर उसकी गोद भरी जाती थी । सन्तति उत्पन्न होने के बाद उसका मुण्डन अथवा अकीका उसके पश्चात बिस्मिल्ला खानी, लड़के-लड़की के विवाह के पूर्व हेनाबन्दी, विवाह का उत्सव मनाया जाता था। मृत्यु के उपरान्त शव के समीप आत्मा की शान्ति के लिए कुरान का पाठ किया जाता था। सभी संस्कार विधि विधान से सम्पन्न होता था।

मध्य काल में काबुल के निवासी विभिन्न प्रकार की वेषभूषा धारण करते थे। ऋतु के अनुसार उनके वस्त्र होते थे। काबुल एक ठण्डा क्षेत्र था इसलिए मोटे तथा ऊन के कपड़ों का प्रचलन था। शासक की वेषभूषा आम जनता से अलग थी। साधारण मुसलमान सिर में सादी टोपी, लम्बा कुर्ता, पायजामा अथवा सलवार पहनते थे। अत्यधिक ठण्ड पड़ने पर कम्बलों तथा सालों का प्रयोग किया जाता था।

स्त्रियों की वेषभूषा समय के अनुसार परिवर्तित होती रहती थी। सामान्यतया मुस्लिम स्त्रियां बुर्का धारण करती थी। निम्न वर्गीय स्त्रियों में

इस प्रकार के वस्त्रों का प्रचलन नहीं था। वह अपनी स्थिति के अनुसार वस्त्र धारण करती थी ।

इस काल में महिलाएं पुरूषों की अपेक्षा अधिक श्रृंगार करती थीं। यद्यपि उच्च परिवार के पुरूष भी सौन्दर्य प्रसाधनों का इस्तेमाल करते थे। उच्च वर्ग की महिलाएं अधिकतर समय श्रृंगार करने में व्यतीत करती थी। इस काल में 16 प्रकार के श्रृंगारों का उल्लेख प्राप्त होता है। स्त्रियाँ विभिन्न प्रकार के आभूषण धारण करती थी। जिनमें माथे पर शीश पट्टी, कानों में बालियाँ, कुण्डल, कर्णफूल, नाक में नथुनी, नथ तथा फूली व गले में हार, मालाएं, गुलबन्द, कलाइयों में चूड़ियां, उंगलियों में अंगूठी, कमर में करधनी, पैरों में पायजेब आदि प्रमुख थे। मध्यम तथा निम्न वर्ग की स्त्रियां गिने–चुने आभूषणों का इस्तेमाल करती थीं।

इस काल में मनोरंजन के विभिन्न साधन प्रचलित थे। जिसमें शतरंज खेलना, चौपर खेलना, नौका–विहार, पशु–पक्षियों का शिकार इत्यादि शामिल था।

इस प्रकार काबुल का तत्कालीन मुस्लिम समाज विविधताओं से भरा हुआ था तथा उसमें विभिन्न वर्ग के मुस्लिम समुदाय के लोग अपना

जीवन यापन कर रहे थे।

शोध प्रबन्ध का पाँचवाँ अध्याय तत्कालीन काबुल के आर्थिक स्थिति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है। काबुल सूबा कई तुमानों में विभक्त था। जिसमें अलग-अलग तुमानों से प्राप्त होने वाले राजस्व का विवरण इस अध्याय में दिया गया है। सर्वाधिक राजस्व की प्राप्ति काबुल से होती थी। अकबर के शासन काल में सूबों के गठन के पश्चात सरकारी आय का स्वरूप कुछ परिवर्तित हो गया था। अकबर ने भूराजस्व के रूप में उपज का 1/3वाँ भाग माल गुजारी सुनिश्चित किया था। मालगुजारी अधिकतर नगद रूप में ली जाती थी। राजस्वों की वसूली तथा शाही खजाने में जमा कराने के लिए काबुल सूबे में कई कर्मचारी तथा अधिकारी नियुक्त थे। पाँचवे अध्याय में दी गयी तालिका में काबुल सूबे के तुमानों से प्राप्त होने वाले राजस्व का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है।

काबुल मुख्य रूप से कृषि आधारित व्यवसाय पर निर्भर था। इसमें भी फलों की पैदावार प्रमुख रूप से होती थी। शीत जलवायु के फलों में अंगूर, अनार, सेब, शफ्तालू, आलू-बालू आदि फल शामिल थे। जबकि अन्य फलों में खुबानी, शरीफे, नाशपाती इत्यादि का उल्लेख मिलता है।

गर्मी के फलों में संतरे, चकोतरे, गन्ना इत्यादि शामिल थे। चिलगोजा, काबुल के आस-पास का प्रमुख फल था। काबुल की शहद बहुत स्वादिष्ट होती थी। यहाँ का खीरा भी काफी प्रचलित था। निज्र-औ के पहाड़ों में अंगूर अधिक मात्रा में पैदा होता था तथा वहाँ इससे एक विशेष प्रकार की शराब बनायी जाती थी।

काबुल के आस-पास चारों तरफ मैदान स्थित थे। जिसमें पैदा होने वाली घास बिक्री के लिए मण्डियों में जाती थी। चूँकि काबुल में घोड़ों तथा खच्चरो की अधिकता थी। इसलिए यहाँ पर घास की बिक्री पर्याप्त मात्रा में होती थी।

पाँचवें अध्याय में दी गयी तालिका में फलों, मेवों, मसालों तथा मांस के भावों की सूची दी गयी है। काबुल की मण्डियों में हिन्दुस्तान तथा अन्य क्षेत्रों से आने वाली सामग्रियों की भी कीमत निर्धारित कर दी गयी थी।

हिन्दुस्तान तथा खुरासान के बीच दो प्रमुख मण्डियां थी काबुल तथा कान्धार । काबुल में घोड़ों की खरीद-फरोख्त का व्यवसाय काफी प्रचलित

था। प्रतिवर्ष 10000 तक घोड़े बिकने के लिए काबुल की मण्डी में आते थे तथा हिन्दुस्तान से प्रतिवर्ष 20000 व्यापारी कान्धार तथा काबुल की मण्डी में आते थे। इन बाजारों में गुलाम, कपड़े, मिश्री, शक्कर इत्यादि का व्यापार होता था।

पांचवे अध्याय में काबुल की भूराजस्व व्यवस्था का विवरण दिया गया है। जिसमें ग्राम भूराजस्व प्रशासन की प्रमुख इकाई था। इसमें खेती योग्य भूमि, आबादी, तालाब, बगीचे आदि शामिल थे। गाँव में भूराजस्व वसूली के लिए मुकद्दम तथा पटवारियों की नियुक्ति होती थी। परगने में आमिल, कानूनगो तथा अमीन भूराजस्व के प्रमुख अधिकारी होते थे। काश्तकारों से लगान वसूल करना तथा शाही खजाने तक पहुँचाना भूराजस्व से सम्बन्धित अधिकारियों का दायित्व था।

तत्कालीन काबुल में कल-कारखानों की स्थापना हो चुकी थी। काबुल में निर्मित रेशमी वस्त्र बाहर की मण्डियों में भी भेजे जाते थे। शस्त्रों के निर्माण के लिए शस्त्र शाला होती थी। काबुल में निर्मित तोपें काफी प्रचलित थीं। ऐसे कई कारखाने स्थापित थे जिनमें सम्राट तथा शाही परिवार की आवश्यकता की वस्तुएं तैयार की जाती थी।

सिक्कों के ढालने का काम भी काबुल में बखूबी होता था। बाबर के शासन काल में इस क्षेत्र में शाहरुख नामक सिक्के का प्रचलन हुआ था। अकबर ने सिक्कों में परिवर्तन कराके नये सिक्कों का प्रचलन शुरु करवाया था। शाहजहाँ तथा औरंगजेब के शासन काल में भी अनेक सिक्के प्रचलित हुए थे।

टकसालों से राज्य को बट्टा भी प्राप्त होता था। लोग चाँदी सोना देकर राज्य टकसालों से सिक्के प्राप्त करते थे। पुराने सिक्के घिस जाने से उनका मूल्य कम हो जाता था। इसे बदलने में भी राज्य को लाभ होता था।

मुगल काल में देश के विभिन्न भागों में टकसालें स्थापित थीं जिनमें काबुल तथा कान्धार में भी प्रमुख टकसालें थी।

बाबर के शासन काल में हिन्दुस्तान अभियान का आधार रहा काबुल अकबर के शासन काल के मध्य तक एक समृद्ध सूबे के रूप में परिवर्तित हो चुका था।

जहाँगीर तथा शाहजहाँ के शासन काल तक यह सूबा ऐसे रूप में विकसित हुआ जहाँ व्यापार विनिमय कल-कारखाने, शाही टकसालें तथा कृषि आधारित सुव्यवस्थित व्यवसाय स्थापित हो चुका था।

शोध प्रबन्ध के पाँचों अध्यायों में किये गये विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बाबर ने जिस काबुल को आधार बनाकर हिन्दुस्तान विजय सम्पन्न की थी वह काबुल अकबर के शासन काल में विकास के मार्ग पर अग्रसर हुआ तथा एक ऐसी व्यवस्था को वहाँ स्थापित किया गया जिसने बाद के सैकड़ों वर्षो तक मुगल शासन का प्रतिबिम्ब परिलक्षित किया। काबुल की शासन व्यवस्था का सुदृढ़ स्वरूप अकबर के शासन काल के अन्तिम वर्षो में भी दिखायी पड़ने लगा था।

***

यह मानचित्र इरफान हबीब के एन एटलस आफ मुगल एम्पायर के पृष्ठ:1ए–बी से लिया गया है।

मानचित्र–2

यह मानचित्र इरफान हबीब के एन एटलस आफ मुगल एम्पायर के पृष्ठः 2ए–बी से लिया गया है।

****

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

****

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

समकालीन तथा मूल स्रोत :

क्रम सं0	स्रोत का नाम		लेखक
1.	बाबरनामा	:	जहीरूद्दीन बाबर
2.	हुमायूँनामा	–	गुलबदन बेगम
3.	अकबरनामा	–	अबुल फजल
4.	जहाँगीर नामा	–	जहाँगीर
5.	आइने अकबरी	–	अबुल फजल
6.	मुन्त्खबुल तवारीख	–	बदॉयूनी
7.	पादशाहनामा	–	अब्दुल हमीद लाहौरी
8.	कानूने हुमायूनी	–	ख्वन्द मीर
9.	तारीखे रशीदी	–	मिर्जा हैदर दूगलात

10. तारीखे अलफी – मुल्ला अहमद तथा आसफ खाँ

11. तबकाते अकबरी – निजामुद्दीन अहमद

12. गुलशने इब्राहिमी अथवा तारीखे फरिश्ता – फरिश्ता

13. इकबाल नामये जहाँगीरी – नसीरूद्दीन मुहम्मद हुमायूँ

14. मिरआते सिकन्दरी – सिकन्दर इब्ने मुहम्मद

15. वाकिआते मुश्ताकी – शेख रिजमुल्लाह मुश्ताकी

16. मआसिरूल उमरा – शाहनवाज खान

17. मीराते – अहमदी – अली मोहम्मद खान

18. तारीखे हुमायूँनी – इब्राहिम इब्ने जरीर

19. इकबाल नामये जहाँगीरी – मोतमद खाँ

20. मआसिरे जहाँगीरी – ख्वाजा गैरत खान

21. पादशाहनामा – कज़विनी

22.	बाक्याते जहाँगीरी	–	मोहम्मद हादी
23.	मखजने अफगान	–	नियामत उल्लाह
24.	आलमगीर नामा	–	मोहम्मद मिर्जा काजिम
25.	वाक्यात्–ए–आलमगीरी (जफरनामा)	–	अमील खान राजी

<u>अन्य स्रोत</u> :

1.	मुगल शासन प्रणाली	–	हरिशंकर श्रीवास्तव
2.	अकबर दि ग्रेट (तीन खण्ड)	–	आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव
3.	दि एग्रेरियन सिस्टम आफ मुस्लिम इण्डिया	–	डब्लू0एच0 मोरलैण्ड
4.	मुगल कालीन भारत	–	ए0एल0 श्रीवास्तव
5.	मुगल कालीन भारत हुमायूँ (भाग–1)	–	सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी

14. दि सेन्ट्रल स्ट्रक्चर आफ दि मुगल एम्पायर – इब्न हसन

15. मुगल सम्राट शाहजहाँ – बनारसी प्रसाद सक्सेना

16. दि फाउन्डेशन आफ मुस्लिम रूल इन इण्डिया – हबीबुल्ला

17. मेमोरिज आफ जहाँगीर – राजर्स एण्ड बेवरीज

18. मध्यकालीन प्रशासन समाज एवं संस्कृति – राधेश्याम

19. क्वायंस – परमेश्वरी लाल गुप्ता

20. मंसबदारी सिस्टम – अब्दुल अजीज

21. इण्डिया एस द डेथ आफ अकबर – डब्लू0एच0 मौरलैण्ड

22. अकबर द ग्रेट मुगल – बी0ए0 स्मिथ

6. मुगल कालीन भारत हुमायूँ (भाग–2) – सैय्यद अतहर अब्बास रिजवी

7. मुगल कालीन भारत – एल0पी0 शर्मा

8. दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि मुगल एम्पायर – आई0एच0 कुरैशी

9. प्राविंशियल गर्वनमेन्ट – पी0 शरण

10. मुगल एडमिनिस्ट्रेशन – सर यदुनाथ सरकार

11. एन एटलस आफ दि मुगल एम्पायर – इरफान हबीब

12. द एग्रेरियन सिस्टम आफ मुगल इण्डिया – इरफान हबीब

13. सम आस्पेक्ट्स आफ दि मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन – आर0पी0 त्रिपाठी

23. हिस्ट्री आफ जहाँगीर – डॉ0 बेनी प्रसाद

24. फ्राम अकबर टू औरंगजेब – डब्लू0 एच0 मोरलैण्ड

25. हिस्ट्री आफ औरंगजेब – सर जदुनाथ सरकार

26. सूबा आफ इलाहाबाद अण्डर द ग्रेट मुगल्स – एस0एन0 सिन्हा

27. द मुगल नोबिल्टी अण्डर औरंगजेब – अतहर अली

शोध ग्रन्थ :

1. वीमेन्स इन मुगल इण्डिया – रेखा मिश्रा

2. दि सोसायटी आफ नार्थ इण्डिया इन दि सिक्सटीन सेन्चुरी एस डिपेक्ट थ्रू कन्टम्परेरी हिन्दी लिटरेचर – हेरम्ब चतुर्वेदी

****